CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा-फल-विचार

[संक्षिप्त गोचर-फल-विचार सहित]

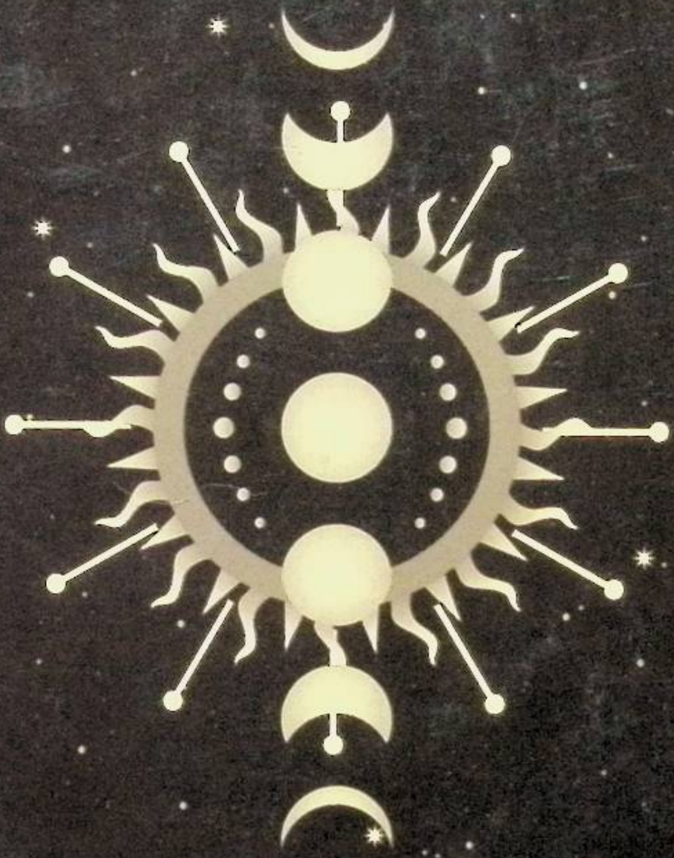

जगजीवनदास गुप्त

Kirtikant Sharma Collection, Nayagam

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा-फल-विचार

[संक्षिप्त गोचर-फल-विचार सहित]

जगजीवनदास गुप्त

मोतीलाल बनारसीदास इंटरनेशनल

दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तम् पुनर्मुद्रण: दिल्ली, 2017, 2022
चतुर्थ संस्करण: 1986

© जगजीवनदास गुप्त

ISBN: 978-93-92510-47-2

मोतीलाल बनारसीदास इंटरनेशनल
41, यू॰ए॰ बंगलो रोड, (पीछे वाली गली) जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
4261 (तलघर), गली नं. 3, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
203 रायपेट्टा हाई रोड, मैलापोर, चेन्नई-600004
समर ऑडडी 56/2, अहिरिटोला स्ट्रीट, कोलकाता-700005
स्टॉकिस्ट : मोतीलाल बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
अशोक राजपथ, दरभंगा, हाऊस के सामने, काली मन्दिर के पास
पटना-800004 (बिहार)

मुद्रक:
मोतीलाल बनारसीदास इंटरनेशनल
41, यू॰ए॰ बंगलो रोड, (पीछे वाली गली) जवाहर नगर, दिल्ली-110 007

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम संस्करण का प्राक्कथन

किसी जन्म-कुण्डली का फल-विचार करते समय भारतीय ज्योतिषियों की दृष्टि सबसे पहले विंशोत्तरी दशा-महादशा के फल पर जाती है। इस दशापद्धति का निर्माण हमारे प्राचीन महर्षियों ने सृष्टि के किन वैज्ञानिक एवं शाश्वत नियमों के आधार पर किया. उसका विस्तृत विवरण संकलित कर मैं इस पुस्तक में देना चाहता था; क्योंकि विश्व की इस अप्रतिम महत्वशालिनी पद्धति की वैज्ञानिकता पर हमारे पाश्चात्य ज्योतिषी बन्धुओं ने भी इन दिनों गहन अनुसन्धान किया है और आधुनिक वैज्ञानिक प्रक्रिया से उसकी महत्ता सिद्ध की है; किन्तु स्वास्थ्य, समय और स्थान तीनों की कमी के कारण उन सबसे अपने पाठकों को अवगत कराने का लोभ मुझे सम्प्रति संवरण ही करना पड़ रहा है।

हम इस प्राचीन पद्धति की वैज्ञानिकता के विचार को जाने दें, तब भी आज इस पाश्चात्य भौतिकवाद की चकाचौंध में हमें यह देखकर महान् प्रसन्नता होती है कि हमारे पाश्चात्य ज्योतिषी बन्धु, जो कल तक इस पद्धति को उपपत्तिवाह्य, अवैज्ञानिक और अयुक्तिक मान कर फलादेश में स्वीकार करने के लिए तैयार न थे, उन्हें भी अब इस ओर ध्यान देने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। और जब एक बार वे इस ओर गहराई से ध्यान देते हैं तो इसकी अद्भुत फलवत्ता पर मुग्ध होकर इसको सदैव के लिए अपना लेते हैं। यह इस पद्धति की उत्कृष्टता का ज्वलंत प्रमाण है; किन्तु हम आत्म-प्रशंसा के आवेश में आकर इस पद्धति में आ गयी कई त्रुटियों की ओर से आंख मूँदे रखना नहीं चाहते – जैसाकि इस देश के अधिकांश ज्योतिषी करते हैं। इस दिशा में नवीन अनुसन्धान-वृत्ति को त्याग कर और लकीर के फकीर बने रहकर ही हमारे ज्योतिषियों ने इस पद्धति का काफी ह्रास किया तथा इसके द्वारा अत्यन्त स्थूल फलादेश को ही प्रचारित कर इस अप्रतिम पद्धति का अवमूल्यन भी किया है। इस विषय में हमारे पञ्चाङ्गकार भी कम उत्तरदायी नहीं हैं; क्योंकि यह सर्वविदित है कि दशा का स्फुटीकरण जन्म-चन्द्रस्पष्ट के आधार पर किया जाता है; किन्तु काशी के अधिकांश पुराने पञ्चाङ्गकार आज भी अपने पञ्चाङ्गों में दैनिक चन्द्र-स्पष्ट देने का कष्ट नहीं उठाते। फलतः दशास्फुटीकरण के गणित में फलवेत्ताओं को पञ्चाङ्ग के दैनिक नक्षत्र का उपयोग करना होता है; किन्तु वह नक्षत्र-मान मध्यम होता है, स्पष्ट नहीं यह सभी सिद्धान्तज्ञ जानते हैं। मध्यम नक्षत्र के आधार से जो दशा अन्तर्दशा स्पष्ट की जायेगी, वह भी मध्यम यानी स्थूल ही होगी; सूक्ष्म और यथार्थ नहीं।

फलवेताओं की दुनियां में अभी भी यह विषय काफी विवादग्रस्त बना हुआ है कि फलादेश प्राचीन गणितागत ग्रहों के आधार पर किया जाना अधिक सत्य सिद्ध होता है अथवा आधुनिक वेधसिद्ध ग्रहों के आधार पर। जिस विवाद का विषय प्रत्यक्ष फलाफल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से सम्बन्ध रखता है, वह विशेष समय तक अनिश्चित, अनिर्णीत अवस्था में नहीं टिक सकता; क्योंकि जिस भी पद्धति में अधिक फलदायिनी शक्ति होगी उसे जनता तो निःसंकोच अपना ही लेगी, ज्योतिषीगण को भी कालान्तर या प्रकारान्तर से अपनाना ही होगा; अन्यथा फलित की अपनी जीविका से वे हाथ धो देंगे; प्रत्यक्ष को अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। अतः जिससे प्रत्यक्ष में यथार्थ फल घटित होगा, उसका विकास, प्रसार और प्रतिष्ठा अनिवार्य है। आज से ४२२ वर्ष पूर्व श्रीगणेश दैवज्ञ नामक भारतीय प्राचीन (निरयण) ज्योतिष के एक महान् संशोधक हुए थे। उनके ग्रन्थों का निष्पक्ष अध्ययन करने से सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि वे अपने समय के एक उत्कृष्ट खगोलवेत्ता, भारतीय ज्योतिष-सिद्धान्त के मर्मज्ञ विद्वान् और क्रांति-द्रष्टा ऋषि-तुल्य महापुरुष थे। प्राचीन ग्रंथों से साधित ग्रहों के संस्थानों में जो अवांछित अंतर प्रत्यक्ष वेध से उस समय तक पड़ गया था, उसको बहुत हद तक उन्होंने अपने प्रसिद्ध 'ग्रहलाघव' करण-ग्रंथ द्वारा दूर किया। एक बात यहाँ नहीं भूलनी चाहिये कि प्रत्यक्ष से ठीक-ठीक मिलनेवाली ग्रह-गति-स्थिति जानने के लिए गणित की सुदीर्घ और क्लिष्ट प्रणालियों का उपयोग अनिवार्य होता है, लाघव से उतनी सूक्ष्मता आ नहीं सकती। और श्रीगणेश दैवज्ञ को दृग्गणितैक्य के साथ-साथ गणित-पद्धति का लाघव भी अभीष्ट था। इसलिए लाघव पद्धति में किंचित स्थूलता रह जाना अनिवार्य था। उतनी स्थूलताओं के बावजूद भी उन्होंने नूतन करण-ग्रन्थ द्वारा भारतीय ज्योतिष में एक क्रान्ति कर दी और उनके गणित के आधार पर बने पञ्चाङ्गों का प्रचार और प्रतिष्ठा थोड़े ही समय में अत्यधिक बढ़ गयी। आज भी बिक्री की दृष्टि से काशी का जो पञ्चाङ्ग सबसे आगे है उसमें ग्रहलाघव से ही सिद्ध ग्रह दिये जाते हैं; किन्तु कितने शोक की बात है कि तिथि, नक्षत्रादि बनाने के लिए उसी ग्रह-लाघव की नितान्त उपेक्षा उक्त पञ्चाङ्ग में ही की जाती है। ग्रहलाघव के रविचन्द्र-स्पष्टाऽधिकार के श्लोक ८, ९ में आचार्य ने एकदम स्पष्ट रूप से कहा है कि तिथि, नक्षत्र का सूक्ष्म, शुद्ध मान दैनिक सूर्य, चन्द्र-स्पष्ट पर से बनाना चाहिये; किन्तु उक्त पञ्चाङ्ग की बिक्री से सर्वाधिक आय होने पर भी आजतक उसमें अन्य ग्रहों के दैनिक स्पष्ट के साथ ग्रहलाघवोक्त त्रिफल संस्कृत चन्द्रस्पष्ट नहीं दिया जाता। अभी कुछ समय पूर्व इन पंक्तियों के लेखक ने उक्त पञ्चाङ्ग के अध्यक्ष और सम्पादक स्व० 'विद्यार्णवेन्दु'जी का ध्यान इस भारी त्रुटि की ओर आकर्षित किया था, जिससे उन्हें प्रसन्नता ही हुई और उन्होंने आगे से अपने पञ्चाङ्ग में दैनिक चन्द्रस्पष्ट देने के लिए उसका गणित भी आरम्भ किया था; किन्तु दुःख है कि उसी वर्ष उनकी हृदय-गति रुक जाने के कारण उनको आकस्मिक काशी-लाभ हो गया और अब उनका वह सत्प्रयास उनके उत्तराधिकारियों द्वारा कहाँ तक पूर्ण हो पाता है, नहीं कहा जा सकता, अस्तु। यहाँ के दीर्घकाय पञ्चांगों में दैनिक चन्द्रस्पष्ट न देने के पीछे मुझे तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके प्रणेताओं का यही भाव दिखाई पड़ता है कि यदि वे अपने पञ्चांग में दैनिक चन्द्रस्पष्ट देने लगते हैं तो उनको तिथि, नक्षत्रादि का सूक्ष्ममान भी दैनिक सूर्य, चन्द्र स्पष्ट पर से ही बनाना अपरिहार्य हो जायगा; क्योंकि पूर्वाचार्यों ने इसका स्पष्ट आदेश दिया है। अभी तक स्थूल सारणियों के सहारे जो अशुद्धतर एवं मध्यम तिथि, नक्षत्र-मान बड़ी सरलता से यह लोग अपने पञ्चांगों में चलाये जा रहे हैं, वह तब नहीं चलाया जा सकेगा; क्योंकि गणित का साधारण विद्यार्थी भी उनकी अशुद्धियों और स्थूलता को पकड़ लेगा। इस प्रकार परिश्रम और अर्थ-व्यय से बचने की उनकी मनोवृत्ति के अलावा अन्य कोई कारण हमारी समझ में नहीं आता। जो भी हो, उनकी इस मनोवृत्ति से हमारे फलित-भाग, खासकर दशा-फलित को बड़ी-क्षति पहुँची है और पहुँच रही है। अब समय आ गया है कि हम इस वास्तविकता से परिचित होकर पुरातन पञ्चांगों की इन त्रुटियों, स्थूलता और अशुद्धियों के निराकरण के लिये प्रयत्नशील हों। हम यह नहीं कहते कि दृश्य, सूर्यसिद्धान्त, मकरन्द या ग्रहलाघवाद की किसी एक ही पद्धति से समस्त पंचांग बनने चाहिएँ; किन्तु जिस भी पद्धति से कोई पंचांग बने उस पद्धति के अनुकूल गणित में जितनी अधिक-से-अधिक सूक्ष्मता और शुद्धता की उपलब्धि सम्भव हो, उतनी तो अवश्य उस पंचांग में रहनी चाहिए। हम स्वयं 'चिन्ताहरण जंत्री' अर्थात् भाग्योदय पंचांग में सूर्य, चद्रका दैनिक स्पष्ट तथा शेष सर्व ग्रहों का स्पष्ट हर तीसरे दिन का देते रहे—जिसमें दैनिक चंद्रस्पष्ट सबीज सूर्यसिद्धांतीय (आर्ष) और दृश्य दोनों प्रकार के होते थे। लौकिक, पार-लौकिक पुण्यफलदायी समस्त श्रौतस्मार्त धर्मकृत्यानुष्ठानार्थ तथा जातकादि के द्वारा अदृष्ट फल-प्रकाशनार्थ, तिथि नक्षत्रादि आनयन में प्रथम प्रकार के ही चंद्रस्पष्ट का उपयोग करना चाहिए तथा ग्रहण, उदयास्त, शृंङ्गोन्नति आदि प्रत्यक्ष दृश्य फलार्थ दूसरे प्रकार के वेधसिद्ध चन्द्र-स्पष्ट का उपयोग विहित है। अतः दशा-अन्तर्दशा-साधन के निमित्त हमारी निजी सम्मति दैनिक सबीज सौरपक्षीय चन्द्र-स्पष्ट का उपयोग करने के लिए है। चंद्रस्पष्ट से दशा-साधन की सारणी स्व-सम्पादित 'ज्योतिषरहस्य' गणित-खण्ड में दी गई है। कुण्डली के फल-विचारार्थ अत्यन्त उपयोगी एवं आवश्यकीय ग्रहों के उच्च, नीच, बलवत्तम भाव, कारक भाव, शत्रु, मित्र, समग्रह तथा दृष्टि-विचारादि सब विषयों से विभूषित चक्र भी वहीं दिया गया है।

वस्तुतः 'ज्योतिष-रहस्य' इस पुस्तक का अनुपूरक है और इसके प्रत्येक पाठक के पास उसकी भी प्रति होनी चाहिए। भारतीय ज्योतिष के गणित-फलित का अध्ययन सही तरीके से सर्वसाधारण आरम्भ कर सकें। इसी उद्देश्य से इन दोनों पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। हमें अत्यन्त प्रसन्नता है कि आधुनिक शिक्षित समुदाय से लेकर सर्वसाधारण में इन विषयों की रुचि बड़ी तीव्रता से जागृत हो रही है। उपरोक्त दोनों पुस्तकों का विज्ञापन 'चिन्ताहरण जंत्री' में छपते ही उनकी माँगे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरन्तर बढ़ने लगीं। इससे उत्साहित होकर हम इन दोनों पुस्तकों का आगामी संस्करण यथेष्ट परिवर्धित रूप में प्रकाशित करेंगे और उसकी विस्तृत भूमिका में विभिन्न प्रकार की दशा-पद्धतियों की तुलनात्मक समीक्षा भी रहेगी। भारतीय ऋषियों ने जिस युग में विंशोत्तरी दशा-पद्धति का निर्माण किया था, उस युग में मनुष्य की औसत आयु १२० वर्ष की थी; किन्तु आज जबकि मानव-आयु में काफी ह्रास हो चुका है, क्या हमें इस पद्धति को समायानुकूल संशोधित न कर ज्यों का-त्यों चलाते रहना चाहिये? इत्यादि दशा सम्बन्धी अनेकानेक विचारणीय प्रश्न है। हमारे नेपालदेशीय ज्योतिर्विदों ने तो इसमें संशोधन कर लिया है और वे १२० में तृतीयांश ४० कम कर आज मानव की औसत आयु ८० वर्ष मानकर दशा-साधन करते हैं यानी विंशोतरी पद्धति में निरूपित प्रत्येक ग्रह के दशा-अन्तर्दशाकालों का २/३ ही वे ग्रहण करते हैं; जैसे सूर्य का महादशा-काल ६ वर्ष के बजाय ४ वर्ष तथा सूर्य का अन्तर्दशा-काल ३ मास १८ दिन के बजाय २ मास १२ दिन, इत्यादि सर्व ग्रहों के दशान्तर्दशा कालों के विषय में इसी प्रकार समझिए। यदि हम उनकी प्रणाली से सहमत न हों तब भी इतना तो मानना ही पड़ेगा कि दशा-विचार का वास्तविक फल-निरूपण हमारे ऋषियों को जातक के स्पष्टायु के आधार पर ही अभिप्रेत था; अस्तु। यहाँ समय और स्थानाभाव से इन तथा इन्हीं जैसे अन्य अनेक महत्त्वशाली विषयों पर विचार करने में हम असमर्थ हैं। इन सब विषयों पर विचार दशा-सम्बन्धी वृहत् पुस्तक में ही किया जा सकता है। यह एक अत्यन्त सरल प्रारम्भिक संग्रह-पुस्तक है। इसमें स्थान-स्थान पर जिस उदाहरण-कुण्डली का उल्लेख हुआ है, वह पाठकों की जानकारी के लिए नीचे देते हुए हम उनसे सम्प्रति विदा लेते हैं; इति शिवम्।

—जगजीवनदास गुप्त

उदाहरण-कुण्डली :—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संक्षिप्त विषय-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ-सं०
१.	ग्रहों की साधारण महादशा का फल	१
२.	सूर्य की महादशा का फल	३
३.	चन्द्र की महादशा का फल	८
४.	मंगल की महादशा का फल	१३
५.	राहु की महादशा का फल	१८
६.	बृहस्पति की महादशा का फल	१९
७.	शनि की महादशा का फल	२४
८	बुध की महादशा का फल	२८
९.	केतु की महादशा का फल	३२
१०.	शुक्र की महादशा का फल	३३
११.	ग्रहों की अन्तर्दशा का फल	३७
१२.	अष्ट-सूत्र	३८
१३.	प्रथम नियम –अर्थात् भिन्न-भिन्न भावों के स्वामी की अपनी-अपनी दशा एवं एवं अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का फल	३९
१४.	द्वितीय नियम—अर्थात् दशानाथ के भिन्न-भिन्न भावों में रहने के अनुसार अन्तर्दशा का फल	४१
१५.	तृतीय नियम अर्थात् लग्न से अन्तर्दशा की स्थितियों के अनुसार फलादेश	५१
१६.	चतुर्थ नियम—दशानाथ से अन्तर्दशेश के स्थानानुसार फलादेश	५१
१७.	पञ्चम नियम—अर्थात् ग्रहावस्था द्वारा फलादेश	५३
१८.	षष्ठ नियम अर्थात् भिन्न-भिन्न महादशा में अन्तदर्शाओं का फल	५४
१९.	प्रत्यन्तर्दशा-फल	६१
२०.	सूक्ष्म दशा-फल	७२
२१.	प्राण-दशा का फल	८३
२२.	दशा-फलादेश की सरल संक्षिप्त रीति	९४
२३.	दशा-अन्तर्दशा के फल जानने के कुछ सरल नियम	१९८
२४	वक्री मार्गी ग्रह की दशा का फल	१००
२५.	नीच और शत्रु-क्षेत्री ग्रह की दशा का फल	१००

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रम सं०	विषय	पृ०-सं०
२६.	स्थानेश का फल	१०१
२७.	अन्तर्दशा-फल-प्रतिपादन के नियम	१०२
२८.	दशवर्ग में विशेष विचार	१०३
२९.	योगिनी-दशा-फल-विचार	१०५
३०.	सप्तम नियम—अर्थात् स्फुट विधियाँ	११३
३१.	अष्टम नियम अर्थात्—फल-विकास एवं परिपाक-काल	११६
३२.	गोचर-प्रकरण	११८
३३.	गोचर के शनि का विशेष नियम	१२५
३४	गोचर-फलादेश के कतिपय नियम-सूत्र	१२८
३५.	उपसंहार	१३०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* श्रीगणेशाय नमः *

दशा-फल-विचार

ग्रहों की साधारण महादशा का फल

शुभ फल—(१) बली ग्रह शुभ फल देते हैं। (२) जो ग्रह अपनी उच्च राशि में शीघ्र जानेवाला है वह उच्चाभिलाषी कहलाता है। (जैसे, मार्गी बृहस्पति मिथुन में हो तो वह उच्चाभिलाषी कहलायेगा; क्योंकि अग्रिम राशि कर्क में बृहस्पति उच्च का होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा मेष में उच्चाभिलाषी कहा जाता है; क्योंकि वृष में चन्द्रमा उच्च का होता है, इत्यादि-इत्यादि।) यह उच्चाभिलाषी ग्रह भी उत्तम फल देता है। (३) लग्न, दशम और एकादश स्थान में स्थित ग्रह भी उत्तम फल देते हैं। (४) उच्चस्थ, स्वगृही, मूल त्रिकोणस्थ, वर्गोत्तम, मित्रगृही और शुभवर्गी ग्रह भी उत्तम फल देते हैं। (५) जो ग्रह लग्न से उपचय स्थानगत (३, ६, १०, ११ वें भाव में) होता है वह भी उत्तम फल देता है। (६) जिस ग्रह पर शुभ ग्रह अथवा मित्र ग्रह की दृष्टि पड़ती हो, वह ग्रह भी शुभ फल देता है। (७) दो ग्रह आपस में मित्र और बली हों तो उन दोनों की परस्पर दशा, अन्तर्दशा में उन्नतिकारी शुभ फल होता है। (८) जिसके साथ कोई शुभ ग्रह बैठा हो वह ग्रह भी शुभ फल देता है। (९) यदि दशेश (जिस ग्रह की महादशा हो वह) लग्न अथवा लग्न के होरा का, लग्न के द्रेष्काण का, लग्न के सप्तमांश का, लग्न के नवांश का, लग्न के द्वादशांश का अथवा लग्न के त्रिशांश का स्वामी हो तो भी फल शुभ होता है।

अशुभ फल—(१) मान्दि जिस स्थान में हो उसके स्वामी की दशा अशुभ होती है। (२) जो ग्रह मान्दि के साथ बैठा हो उस ग्रह की दशा का भी फल अशुभ होता है। (३) जो ग्रह शत्रुगृही हो, नीच, स्तभी, वक्री, अतिचारी अथवा अस्त हो तो वह भी अशुभ फल देता है। (४) जो ग्रह भाव-सन्धि में पड़ता है अथवा जिस ग्रह के साथ पाप-ग्रह बैठा हो तो वह भी अशुभ फल देता है। (५) जो ग्रह राशि-संधि में रहता है वह भी अशुभ फल देता है और उसमें रोगादि तथा शोक का भय होता है। यदि वह ग्रह राशि से तीसवें अंश में हो तो मृत्युवत् कष्ट देता है। (६) जब दो ग्रहों में परस्पर शत्रुता रहती है और वे निर्बल होते हैं तो उन दोनों की परस्पर दशा अन्तर्दशा अशुभ होती है। (७) जो ग्रह किसी पापग्रह के साथ रहता है, उस ग्रह की दशा में शुभ फल की बहुत ही न्यूनता हो जाती है; पर यदि उस ग्रह के साथ शुभ और अशुभ दोनों ग्रह हों तो मिश्रित फल होता है। (८) यदि कोई ग्रह, अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी शत्रु-ग्रह के साथ हो तो उसकी दशा के समय शत्रुओं की संख्या बढ़ती है और साधारणतः कार्य में सफलता नहीं होती है। (९) जो ग्रह नीच होता है, उसकी दशा में अथवा जो ग्रह नीचस्थ ग्रह के साथ रहता है उसकी दशा में भी शुभ फल का अभाव होता है। (१०) यदि नीचस्थ ग्रह राहु के साथ हो तो उस नीचस्थ ग्रह की दशा भी प्रायः हानिकारक होती है; अथवा यदि उस ग्रह के साथ उस स्थान का स्वामी हो, जिसमें राहु स्थित है तो भी शुभ फल में न्यूनता होती है। (११) केन्द्र-स्थित ग्रह की दशान्तर्दशा में भी शोक और परदेश-यात्रा होती है।

मिश्रित फल--(१) जो ग्रह लग्न और आरूढ़ लग्न दोनों ही से केन्द्र या त्रिकोण में हो तो वह अपनी दशा में पूर्ण रीति से भाग्योन्नति प्रदान करता है। (२) जो ग्रह लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में हो, परन्तु आरूढ़ लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो, वह अपनी दशा में साधारण सुख और भाग्योन्नति प्रदान करता है। (३) जो ग्रह लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो; परन्तु आरूढ़ लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो वह किञ्चित् मात्र भाग्योन्नति प्रदान करता है। (४) जो ग्रह लग्न और आरूढ़-लग्न दोनों से ही ६, ८, या १२ भाव में बैठा हो, वह ग्रह अपनी दशा में केवल अनिष्टकारी फल देता है।

अन्य प्रकार से महादशा-फल का विचार

(१) महादशा का प्रवेश जिस समय में होता हो उस समय की कुण्डली बनानी होती है। यदि वह ग्रह जिसकी दशा आरम्भ होती हो, उस कुण्डली के लग्न में पड़ जाय तो उस ग्रह की दशा का फल उत्तम होता है। इसी प्रकार यदि वह ग्रह (अर्थात् जिसकी महादशा आरम्भ होती है), उस लग्न से उपचय (३, ६, १०, ११) में पड़ता हो तो भी शुभ फल होता है। यदि वह दशेश उस लग्न का, उस लग्न के होरा का, लग्न के द्रेष्काण का, लग्न के सप्तमांश का, लग्न के नवांश का, लग्न के द्वादशांश का अथवा लग्न के त्रिशांश का स्वामी हो तो भी उस ग्रह की दशा का फल उत्तम होता है। यदि उस लग्न में कोई मित्रगृही ग्रह अथवा कोई शुभ ग्रह बैठा हो तो भी फल शुभ होता है। स्मरण रहे कि दशा-प्रवेश का लग्न अंग्रेजी जन्म-तिथि से बनाने में प्रायः भूल होने का भय रहता है।

(२) इसी प्रकार महादशा के प्रवेश के समय की कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति से भी विचार किया जाता है। उस कुण्डली की जिस राशि में चन्द्रमा बैठा हो, यदि वह राशि दशानाथ का उच्च-गृह हो तो फल उत्तम होता है। यदि वह चन्द्र-स्थित राशि दशानाथ के मित्र का गृह हो तो भी फल उत्तम होता है। यदि दशानाथ से वह चन्द्र-स्थित राशि उपचय (३, ६, १०, ११) में त्रिकोण अथवा सप्तम अर्थात् ५, ७, ९ में पड़ती हो तो भी फल उत्तम होता है; परन्तु इन स्थानों के अतिरिक्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और किसी स्थान में होने से फल सन्तोषजनक नहीं होता अर्थात् अशुभ ही होता है।

(३) जिस नक्षत्र में जातक का जन्म होता है, उसको 'जन्मर्क्ष' और उस नक्षत्र से दसवें नक्षत्र को "कर्मर्क्ष" कहते हैं। जन्म-नक्षत्र से उन्नीसवें नक्षत्र को ' आधान" और इन जन्मर्क्ष, कर्मर्क्ष तथा आधान-नक्षत्र से द्वितीय को 'सम्पत्' एवं चौथे नक्षत्र को 'क्षेम' कहते हैं। छठें को 'साधक', आठवें को 'मैत्र' और नवें नक्षत्र को 'परम मैत्र' कहते हैं। यदि कोई जन्मकालीन ग्रह इन सब नक्षत्रों में बैठा हो अर्थात् सम्पत्, क्षेम, साधक, मैत्र अथवा परम मैत्र नामक नक्षत्र में बैठा हो तो उन सब ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में सम्पत्ति इत्यादि की वृद्धि होती है। यह स्मरण रखने की बात है कि वह ग्रह अन्य प्रकार से अनिष्टकारी न होना चाहिए; यदि अन्य प्रकार से अनिष्ट-कारी हो तो मिश्रित फल होगा।

(४) यदि लग्न चर-राशिगत हो तो लग्न से एकादश स्थान 'बाधा स्थान' कहलाता है। यदि लग्न-गत राशि स्थिर हो तो लग्न से नवम स्थान 'बाधास्थान' कहलाता है। यदि लग्न द्विस्वभाव राशिगत हो तो लग्न से सप्तम 'बाधा स्थान' कहलाता है। बाधा स्थान के स्वामी की महादशा अर्थात् यदि जातक का चर लग्न में जन्म हो तो एकादशेश की महादशा, स्थिर लग्न का जन्म हो तो नवमेश की महादशा, द्विस्वभाव राशि का जन्म हो तो सप्तमेश की महादशा और बाधा स्थान-स्थित ग्रह की महादशा में रोग, शोक और दुःख इत्यादि अनिष्ट फल होते हैं तथा बाधा-स्थान से केन्द्र में जो ग्रह बैठा हो, उसकी महादशा में दुःख एवं विदेशाटन होता है।

(५) यह एक साधारण नियम है कि ग्रह अपनी महादशा अथवा अन्तर्दशा में, जिस भाव में रहता है, उस भाव में रहने से और अन्य ग्रहों की दृष्टि से उसका जो शुभाशुभ फल होता है और व्यवसाय आदि के विषय में वह ग्रह जिस प्रकार का फल सूचित करता है, वही सब फल प्रदान करता है।

ग्रहों की स्थिति के अनुसार स्वाभाविक महादशा-फल

–सूर्य की महादशा का फल–

सूर्य की महादशा में कभी-कभी परदेश-वास होता है और भूमि, राजद्वार, ब्राह्मण, अग्नि, शास्त्र तथा औषधि से धन को प्राप्ति होती है। जातक की रुचि यन्त्र-मन्त्र में बढ़ती है और राजपुरुषों से मित्रता होती है। भाई-बन्धुओं से शत्रुता, स्त्री, पुत्र और पिता से वियोग अथवा चिन्ता, व्यथा, राजा, चोर, अग्नि तथा शत्रु से भय और दाँत, नेत्र तथा उदर में पीड़ा, गोधन एवं नौकरी में ह्रास होता है। समान रूप से सूर्य की महादशा का ऐसा फल होता है परन्तु सूर्य के उच्च, नीच आदि स्थान में स्थित होने के कारण एवं अन्यान्य ग्रहों से युत या दृष्ट रहने से उन अवस्थाओं के अनुसार फल में बहुत ही परिवर्तन हो जाता है। फल कहने के समय इन सब बातों पर पूर्णतया ध्यान देना आवश्यक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब ग्रहों के उच्च-नीचादि नवमांशादि के भेदाभेद से प्रति ग्रह के फल में किस-किस प्रकार की विभिन्नतायें उत्पन्न होती हैं, यह लिखा जाता है।

विशेष फल

(१) **परम उच्च**—अर्थात् मेष के दस अंश पर रहने से सूर्य की दशा में धर्म-कर्म में प्रीति होती है और पिता के सञ्चय किए हुए धन तथा भूमि का लाभ होता है। स्त्री-पुत्रादि से सुख तथा साहस, यश, राज्य, मान, सुसङ्गति, भ्रमणशीलता और विजय प्राप्त होती है। (२) उच्च (मेष) का सूर्य होने से, उसकी दशा में धन, अन्न तथा पशुओं की वृद्धि होती है। बन्धुवर्ग से झगड़ा होने के कारण परदेशवास और भ्रमण होता है। राजा से धन-प्राप्ति, वाराङ्गनाओं से रति-विलास और संगीत आदि में प्रेम होता है। घोड़े तथा रथादि का सुख भी प्राप्त होता है। (३) **आरोही**—अर्थात् उच्चाभिलाषी सूर्य की दशा में आनन्द, प्रतिष्ठा और दानशीलता होती है। स्त्री पुत्रादि, भूमि, गौ, घोड़े, हस्ति और कृषि से सुख होता है। (४) **अवरोही**—अर्थात् उच्च से नीच की ओर जब सूर्य जाता है तो उसकी दशा में शरीर में रोग, कष्ट, मित्रजनों से विरोध, चतुष्पद, गृह, कृषि और द्रव्य की हानि होती है। राजा का कोप, चोर, अग्नि, झगड़े का भय तथा परदेश-वास होता है। (५) **परम नीच**—सूर्य की दशा में माता, पिता की मृत्यु, स्त्री-पुत्र, पशु, भूमि तथा गृह आदि को हानि होती है, परदेशवास होता है, नाना भय और मृत्यु तक की आशङ्का होती है। (६) **नीच**—(तुला के) सूर्य की दशा में राज-कोप से धन तथा मान की हानि होती है। स्त्री तथा पुत्र, मित्रादि से क्लेश होता है और अपने किसी स्वजन की मृत्यु होती है (७) **मूलत्रिकोण**—सिंह के २० अंश तक में जब सूर्य रहता है तो उसकी दशा में स्त्री-पुत्र, कुटुम्ब, भूमि, राजा, धन, पशु, और वाहनादि से सुख होता है तथा पद एवं मान की प्राप्ति होती है। (८) **स्वगृही**—(सिंह के) रवि की दशा में विद्या की प्राप्ति, विद्योन्नति से यश और राजा के यहाँ मर्यादा प्राप्त होती है। पृथ्वी से उन्नति, कुटुम्बियों से सुख कृषि, द्रव्य तथा मान की वृद्धि होती है। (९) **अतिमित्रगृही**—जब सूर्य होता है तो उसकी दशा में दृढ़ सुख, आनन्द, स्त्री-पुत्र और धन इत्यादि से सुख होता है। जातक को वस्त्राभूषण तथा वाहनादि का भी सुख एवं कूप, तड़ागादि खुदवाने का सौभाग्य प्राप्त होता है। (१०) **मित्रगृही**—(कर्क, वृश्चिक, धनु, मीन, वृष, तुला, मकर, कन्या का) सूर्य होने से उसकी दशा में जातक की अपनी जाति द्वारा सम्मान, पुत्र, मित्र तथा राजासे सुख होता है। अपने बन्धुवर्ग से प्रेम बढ़ता है, भूमि की प्राप्ति होती है और वस्त्राभूषण तथा वाहनादि का सुख होता है। (११) **समगृही**—मिथुनका सूर्य होनेसे उसकी दशा में कृषि, पृथ्वी और पशु आदि से सुख प्राप्त होता है। कन्यासन्तानोत्पत्ति का सौभाग्य होता है और अपने जनों से समभाव [अर्थात् न झगड़ा, न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मित्रता]; परन्तु ऋण से दुखी रहता है। (१२) शत्रु-गृही—सूर्य होने से उसकी दशा में सन्तान, स्त्री, और धन की हानि होती है। स्त्री से झगड़ा और राजा, अग्नि, चोर एवं मुकद्दमेबाजी से भय होता है। (१३) जब रवि अति शत्रुगृही—होता है तो उसकी दशा में स्त्री, पुत्र और सम्पत्ति की हानि होती है पुत्र, मित्र तथा पशुओं से क्लेश और अपने जाति-वर्ग से मतभेद होता है। (१४) उच्च नवांश—में जब रवि रहता है तो उसकी दशा में जातक को साहस, झगड़े से धन की वृद्धि और धनागम होता है। अनेक प्रकार से सुख प्राप्त होता है। स्त्री-सम्भोग एवं स्त्री-धन द्वारा लाभ भी होता है; परन्तु पितृ-कुल के जनों में बार-बार क्षति होती है। (१५ यदि सूर्य नीच नवांश में हो तो उसकी दशा में परदेश-यात्रा में स्त्री, पुत्र, धन तथा पृथ्वी की हानि होती है। ऐसी दशा में जातक मानसिक व्यथा से व्याकुल, ज्वर से पीड़ित और गुप्तेन्द्रियों की वेदना से दुःखी रहता है। (१६) उच्चस्थ सूर्य यदि नीच नवांश—का हो तो उसकी दशा में स्त्री को मृत्यु, जातक के नजदीकी कुटुम्बियों को भय एवं मृत्यु और सन्तान को आपत्ति होती है। (१७) नीचस्थ सूर्य यदि उच्च नवांश में हो तो उसकी दशा के आदि में महान् सुख और उच्च मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है; पर दशाके अन्त में विपरीत फल होता है। (१८) पाप-षष्ठांश - में यदि सूर्य रहता है तो उसकी दशा में पिता और पितृ-पक्ष के लोगों को क्लेश और मृत्यु का भय होता है। राजा के कोप से जातक को भय, दुःख तथा देश-निकाला भी सम्भव होता है। जातक स्वभाव का चिड़चिड़ा एवं शिर की वेदना से व्यथित होता है। (१९) पारावतांश इत्यादि में यदि सूर्य हो तो उसकी दशा में जातक को स्त्री, सन्तान, मित्र और कुटुम्ब का सुख, राजा से अनुग्रह, धन तथा मान प्राप्त होता है। (२०) सर्प-पाश और द्रेष्काण का—यदि सूर्य हो तो उसकी दशा में सर्प, विष, अग्नि और जलाशय आदि से जातक को भय तथा अनेकानेक प्रकार के शोक एवं दुःख प्राप्त होते हैं। (२१) उच्च ग्रह के साथ—यदि सूर्य बैठा हो तो उसकी दशा में जातक को तीर्थादि-भ्रमण, विष्णु-पूजा, पवित्र नदियों में स्नान और मन्दिरों के दर्शन का सुख तथा कूप, तड़ागादि एवं मकानों के बनवाने का सौभाग्य मिलता है। वह धार्मिक पुस्तकों का मनन और धार्मिक विषयों की प्राप्ति भी करता है। (२२) पाप ग्रह के साथ—यदि सूर्य हो तो उसकी दशा में कुत्सित अन्न का भोजन, जीर्ण वस्तुओं की प्राप्ति, निकृष्ट प्रकार की जीविका तथा अनिष्ट क्रियाओं के द्वारा दुःख का भाजन एवं अच्छे भोजन के अभाव के कारण शरीर दुर्बल होता है। (२३) शुभ ग्रह के साथ—यदि सूर्य हो तो उसकी दशा में पृथ्वी से धनोपार्जन, वस्त्रादि का लाभ, मित्रों से आनन्द, स्वजनों से प्रेम और विवाह आदि उत्सव होता है। (२४) शुभ-दृष्ट—रवि अपनी महादशा में जातक को विद्याजनित ख्याति, पुत्र, श्री और अन्य स्त्री वर्गों से आनन्द तथा सुख देता है, उसके माता-पिता को आनन्द और उसको राजद्वार में सम्मान प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२५) **अशुभ-दृष्ट**—रवि की दशा में अनेक प्रकार के शोक, माता पिता को भय, स्त्री पुत्रको दुःख, चोर, अग्नि और राजदण्ड (जुर्माना) का भय होता है। (२६) **स्थान-बल**—यदि सूर्य को हो तो ऐसे सूर्य की दशा में जातक को कृषि से लाभ; भूमि, गौ, वाहन, वस्त्रादि, राजसम्मान, दूसरों से धनागम, मित्र और कुटुम्बियों से समागम तथा उत्तम प्रकार का सुयश होता है। जातक की शारीरिक कान्ति की वृद्धि और तीर्थ तथा यज्ञ करने का सुयोग होता है। (२७) **स्थान-बल से रहित** – रवि की दशा में धन की हानि, भ्रमण, कुटुम्बियों से घृणा, शारीरिक निर्बलता और दुःख की प्राप्ति होती है। (२८) **दिग्बली**–सूर्य की दशा में जातक को चारों ओर से (अर्थात् हर प्रकार से) धन का आगमन, यश, कीर्ति मिलती है। भूषण और भूमि से वह सुखी होता है; पर सूर्य यदि दिग्बल-रहित हो तो उपर्युक्त शुभ फलों का अभाव होता है। (२९) **काल-बल**—यदि सूर्य को हो तो उसकी दशा में राज-सम्मान, कृषि, भूमि से लाभ और द्रव्य की प्राप्ति होती है। काल-बल-रहित सूर्य की दशा में उपर्युक्त फलों का अभाव होता है। (३०) **नैसर्गिक बल**—यदि सूर्य को हो तो उसकी दशा में जातक को अनायास (अर्थात् बिना परिश्रम के) अनेकानेक प्रकारकी सुख-सम्पत्ति, पृथ्वी, भूषण तथा वस्त्रादि की प्राप्ति होती है; परन्तु नैसर्गिक बल रहित सूर्य को दशा में उक्त फलों का अभाव होता है। (३१) **चेष्टा-बल** यदि सूर्य को हो तो उसकी दशा में जातक को स्वभुजार्जित धन, आनन्द, ख्याति, राजसम्मान, स्त्री, पुत्र, भोजन, वाहनादि और कृषि का भी सुख होता है; पर चेष्टा-बल रहित सूर्य की दशा में हानि होती है।

भिन्न-भिन्न भावगत सूर्य का फल

(१) **लग्न में** यदि रवि हो तो उसकी दशा में नेत्ररोग, धनहानि और राज-कोप की सम्भावना होती है। (२) **द्वितीय स्थान में** – यदि रवि हो तो उसकी दशा में सन्तानोत्पत्ति के उपरान्त शोक और भय, पुत्र सन्ताप तथा झगड़ा इत्यादि, स्त्री और धन की हानि, राजा से भय, पुत्र और भूमि तथा वाहनादि का नाश होता है; परन्तु यदि उसके साथ कोई शुभग्रह हो तो उपर्युक्त अनिष्ट फलों का अभाव होता है। (३) **तृतीयस्थ**—रवि की दशा में राज-सम्मान, द्रव्य-प्राप्ति, आनन्द और पराक्रम में उन्नति होती है। (४) **चतुर्थ स्थान में** –यदि रवि हो तो उसकी दशा में स्त्री, सन्तान, मित्र, भूमि, मकान और वाहनादि की हानि तथा विष, अग्नि, चोर एवं शस्त्र से जातक को भय होता है। (५) **पञ्चम तथा नवम में**— रवि के रहने से उसकी दशा में जातक का चित्त विक्षिप्त अथवा अव्यवस्थित तथा आनन्दरहित होता है। पिता की मृत्यु राज अप्रतिष्ठा और धार्मिक कर्मों से वह विमुख रहता है। (६) **षष्ठ में**—रवि रहने से उसकी दशा में धन की हानि और दुःख होता है तथा गुल्म, क्षय, मूत्रकृच्छ्र और जननेन्द्रिय-जनित रोग होते हैं। (७) **सप्तम में**—रवि होने से उसकी दशा में स्त्री को रोग होता है अथवा उसकी मृत्यु होती है दूध, घृत इत्यादि भोजन के ललित पदार्थों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का अभाव और भोजन में अनेक असुविधायें होती हैं। (८) अष्टम में रवि रहने से परदेश-गमन, शारीरिक असुविधा, ज्वर, नेत्र-रोग और संग्रहणी का भय होता है। (९) नवम में रवि रहने से उनकी दशा में बुद्धिभ्रम, राजपक्ष से अपमान, अवनति, सुख-शान्ति का ह्रास, पिता का निधन, कार्य की व्यर्थता से मनः विकलता आदि कुफल होते हैं। (१०) दशम में रवि रहने से राज-सम्मान, अधिकार की प्राप्ति और राजा से प्रेम होता है। धन की प्राप्ति तथा कार्य में सफलता होती है। (११) एकादश में रवि रहने से धन एवं पद की प्राप्ति, शारीरिक सुख और उत्तम कार्यों में अभिरुचि होती है तथा स्त्री पुत्रादि भूषण वस्त्र एवं वाहनादि का सुख होता है। (१२) द्वादश में रवि रहने से देशाटन, द्रव्य, पुत्र माता पिता भूमि आदि की क्षति, विष तथा झगड़े इत्यादि से भय, वाहनादि का विनाश एवं पैरों में रोग होता है।

भिन्न-भिन्न राशिस्थ सूर्य का फल

(१) मेष राशि के सूर्य की दशा में धर्म-कर्म में प्रीति, पिता से संचित धन तथा भूमि का लाभ और स्त्री-पुत्रादि से अनेक सुख होते हैं। यदि उच्चस्थ सूर्य, अष्टम भाव में हो तो रोग और षष्ठ भावगत हो तो व्रण रोग होता है तथा माता-पिता के लिए क्लेशकारी होता है। (२) वृष राशिगत सूर्य की दशा में स्त्री पुत्र और वाहनों को पीड़ा, कृषि से क्षति, बहुधा हृदय-रोग से पीड़ा तथा मुख एवं नेत्र में भी पाड़ा होती है। (३) मिथुन के रवि की दशा में जातक मन्त्र-विद्या तथा शास्त्र में अधिकार प्राप्त करता है। उत्तम काव्य में रुचि, पुराणादि-श्रवण में प्रेम, कृषि से लाभ और नाना प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। (४) कर्क राशिगत सूर्य रहने से उसकी दशा में कीर्ति की वृद्धि और राजनेताओं का स्नेह-सहयोग प्राप्त होता है, परन्तु जातक स्त्री के आधीन रहता है, क्रोधाग्नि भड़कती रहती है तथा उसके मित्रों को पीड़ा होती है। (५) सिंह राशिगत सूर्य की दशा में खेती और जंगल इत्यादि नाना प्रकार से धन की प्राप्ति होती है तथा उसकी कीर्ति बढ़ती है एवं जातक राजदरबार में सम्मान प्राप्त करता है। (६) सूर्य कन्या राशिगत होने से उसकी दशा में जातक को कन्या-उत्पत्ति और मर्यादा की प्राप्ति होती है। गुरुजनों तथा देवताओं में जातक की प्रीति और पशुओं का लाभ होता है। (७) तुला राशिगत सूर्य होने से धन और स्थान की हानि, स्त्री-पुत्रादि को पीड़ा, चोर तथा अग्नि से भय, परदेश-यात्रा एवं नीच कर्म में उसकी प्रवृत्ति होती है, परन्तु सूर्य तुला के दस अंश से आगे बढ़ गया हो तो उसकी दशा में सुख से धन-लाभ, दूसरों को ठगने में समर्थ, स्त्री के हेतु दुःखी और नीच जनों से मित्रता होती है। इसी प्रकार यदि नीच का सूर्य षष्ठ भाव-गत हो तो उसकी दशा में जातक को व्रण, रोग और उसके माता-पिता को क्लेश होता है; अष्टम में रहने से उद्वेग (८) वृश्चिक राशिगत सूर्य हो तो उसकी दशा में जातक को माता-पिता से मतभेद और खटपट तथा विष, अग्नि एवं स्त्री से पीड़ा होती है। (९) धनु राशिगत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि सूर्य हो तो जातक को सङ्गीत-विद्या से प्रेम होता है। स्त्री पुत्र और धनादि से सुख तथा राजा एवं गुरुजनों से गौरव प्राप्त करता है। (१०) मकर राशिगत यदि रवि हो तो उसकी दशा में स्त्री, पुत्र और धन का अल्प सुख, रोग से शरीर पीड़ित तथा पराधीनता के कारण जातक चिन्ता में निमग्न रहता है। (११) कुम्भ राशिगत सूर्य रहने से उसकी दशा में जातक स्त्री पुत्र तथा धन के लिए चिंतित और दीन, मलिन रहता है। उसके शत्रुओं की वृद्धि होती है तथा वह हृदय-रोग से पीड़ित रहता है। (१२) मीन राशिगत सूर्य के रहने से उसकी दशा में स्त्री, धन तथा सुख की वृद्धि होती है और जातक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है; परन्तु वृथा देशाटन भी करता है और उसके पुत्रादिको ज्वर-पीड़ा होती है।

टिप्पणी—सूर्य की दशा के आदि में माता-पिता को रोग, दुःख, मानसिक व्यथा और अधिक व्यय होता है। दशा के मध्य में पशुओं की हानि और मनुष्यों को पीड़ा तथा दशा के अन्त में विद्या-जनित उन्नति और सुख होता है।

चन्द्र-महादशा का फल

चन्द्रमा की महादशा में (साधारण रूप से) जातक मन्त्र, वेद और ब्राह्मणादि में रुचि वाला राज्याधिकारियों की प्रसन्नता का भाजन तथा मन्त्री होता है। युवती स्त्रियाँ, धन, भूमि, पुष्प, गन्ध और भूषणादि अर्थात् सुख के पदार्थों का लाभ होता है। अनेक प्रकार की कलाओं में कुशल, कीर्तिमान्, विख्यात, नम्र, परोपकारी, यशस्वी और इधर-उधर घूमने में प्रेम रखनेवाला होता है। उसे कन्यायें उत्पन्न होती हैं। ऐसा जातक आलसी, निद्रा से व्याकुल और कृषि का प्रेमी होता है। उसे कफ और वात की अधिकता होती है; परन्तु यदि चन्द्रमा निर्बल होता है तो अर्थ-हानि, वात-रोग से पीड़ा और सज्जनों से विरोध होता है। वह कलह तथा वाद-विवाद में निरन्तर रत रहता है और अच्छे कार्यों में उसका चित्त नहीं लगता है।

विशेष फल

[१] परम उच्चगत चन्द्रमा होने से उसकी दशा में वस्त्र-पुष्पादि, स्त्री धन और महत्ता की प्राप्ति होती है तथा सन्तानोत्पत्ति से हर्षोल्लास होता है। [२] उच्च का चन्द्रमा होने से सुत, स्त्री, धन, दुग्ध, वस्त्र और भूषण आदि की प्राप्ति, विदेश-यात्रा तथा स्वजनों से विरोध होता है। [३] आरोही चन्द्रमा होने से उसकी दशा में स्त्री, पुत्र, वस्त्र और भोजन आदि का सुख, राज्य की प्राप्ति तथा देवार्चन में प्रवृत्ति होती है। [४] अवरोही चन्द्रमा होने से उसकी दशा में स्त्री, पुत्र, मित्र और वस्त्रादि के सुख में कमी होती है। मानसिक वेदना, स्वजनों से विरोध और चोर, अग्नि तथा राजा से भय होता है। जातक को कुआँ, पोखरा इत्यादि में गिरने का भी भय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[५] नीच का चन्द्रमा होने से उसकी दशा में जातक को विपत्ति तथा आकस्मिक घटना से जंगल में निवास करना पड़ता है। कारागार में बन्धनादि का दुःख होता है। राजा, अग्नि और चोर से भय, भोजन में सन्देह तथा स्त्री-पुत्र को क्लेश होता है। [६] मूल त्रिकोण में यदि चन्द्रमा हो तो राजा से प्रतिष्ठा, द्रव्य, धन, भूषण, वस्त्र तथा स्त्री-पुत्रादि का सुख मिलता है। माता से सुख और स्त्री-प्रसंगादि में चित्त की वृत्ति होती है। बन्धुओं से विरोध करने के पश्चात् जातक स्वयं उनका नायक हो जाता है। [७] चन्द्रमा के स्वगृही होने से कृषि से धन की प्राप्ति, राज-सम्मान, कन्या की उत्पत्ति, बन्धुजनों से सुख और वेश्याओं से संग होता है। [८] अति मित्रगृही चन्द्रमा होने से विद्या और पुस्तकादि के प्रकाशन द्वारा राजा से सम्मान तथा स्त्री, सन्तान, भूमि, कुटुम्ब एवं मित्रादि से सुख और आनन्द प्राप्त होता है। [९] मित्रगृही चन्द्रमा होने से राजा से मित्रता, धन की प्राप्ति, कार्य में सफलता, चाकरी, जलज पदार्थों की प्राप्ति और चित्र-विचित्र वस्त्रादि का लाभ होता है। ऐसा जातक चतुर और मिष्टभाषी होता है। [१०] समगृही चन्द्रमा होने से उसकी दशा में स्वर्ण और भूमि का लाभ, किंचित् सुख, बान्धवादि को रोग और विदेश-यात्रा होती है। [११] शत्रुगृही चन्द्रमा होने से उसकी दशा में भूषण और वस्त्रादि की कमी होती है, जातक प्रवासी तथा नीच-सेवी होता है एवं बन्धुवर्गादि से हीन हो परदेश में दुःखित चित्त से विचरता रहता है। [१२] अति शत्रुगृही चन्द्रमा होने से उसकी दशा में झगड़े इत्यादि से धन का नाश, कुत्सित भोजन, मलिन वस्त्रकी प्राप्ति, भूमि, धन, स्त्री, पुत्र और वाहनादि संबंधी परिताप होता है। [१३] नीचनवांश में चन्द्रमा रहने से उसकी दशा में नाना प्रकार से अर्थ की हानि, बुरा भोजन, बुरे मालिक की नौकरी, मानसिक वेदना, पैर और नेत्र में रोग तथा झगड़ों में पराजय होती है। [१४] उच्च नवांश में यदि चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में देह की पुष्टि, अनेक प्रकार से धन-प्राप्ति तथा राज-सम्मानित और सुखी होता है। [१५] निर्बल तथा क्षीण चन्द्रमा रहने से उसकी दशा में अर्थ, सन्तान, भूमि, स्त्री, मित्रादि से वियोग, सज्जनों से विरोध, ऋण, नीच वृत्ति तथा उन्माद होता है। [१६] पूर्ण चन्द्रमा की महादशा में जातक विद्या तथा पुस्तकादि के प्रकाशन द्वारा राजा तथा जनता से सम्मानित, स्त्री और पुत्रादि से बहुत सुखी होता है एवं उसकी उत्तम कार्य करने की अभिरुचि होती है। [१७] उच्च ग्रह के साथ चन्द्रमा रहने से उसकी दशा में चित्त में आनन्द, स्त्री, पुत्र, नौकर और स्त्री-प्रसंगादि का सुख होता है। [१८] शुभ ग्रह के साथ चन्द्रमा रहने से उसकी दशा में शुभ कार्य का सौभाग्य, गौ, भूमि, स्वर्ण और भूषणादि की प्राप्ति तथा तीर्थादि में स्नान होता है; परन्तु जातक परस्त्री-गमन भी करता है। [१९] पापग्रह के साथ यदि चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में अग्नि, चोर और राजा से भय, स्त्री, सन्तान तथा बन्धुजन को हानि होती है। जातक को विदेश-यात्रा करनी पड़ती है और बुरे कामों में उसकी प्रवृत्ति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[२०] यदि शुभग्रह की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो उसकी दशा में जातक परोपकारी और कीर्तिमान् होता है। उसकी इच्छा की पूर्ति होती है। राजा से सम्मानित और जलज पदार्थों की प्राप्ति से जातक का चित्त आह्लादित होता है। [२१] पापग्रह की दृष्टि चन्द्रमा पर रहने से उसकी दशा में जातक कार्यों में असफल, कुत्सित अन्नों का भोजन करनेवाला और क्रोधी होता है तथा उसके माता अथवा मातृपक्ष के किसी स्वजन की मृत्यु होती है। [२२] यदि अस्त चन्द्रमा अर्थात् कृष्ण १४ से शुक्ल १ तक का चंद्रमा हो तो ऐसी दशा में जातक को दुःख, स्वजनों से विरोध, भार्या और माता की मृत्यु, कृषि में क्षति और राजा, अग्नि एवं चोर से भय रहता है। [२३] स्थान-बल यदि चन्द्रमा को हो तो उसकी दशा में धन का सुख, कीर्ति, विद्या का आगमन, देवार्चन, राजा से धन, राज्य और भूमि की प्राप्ति, स्त्री, भूषण, वस्त्रादि का सुख, कृषि से धनागम, गौ, उत्तम दूध, उत्तम प्रकार के भोजन, घी, दही तथा सुगन्धित मालायें अर्थात् भोग के सभी पदार्थों के विक्रय से लाभ होता है। [२४] स्थान-बल रहित चन्द्रमा की दशा में अन्य स्थानों में वास, कृषि में हानि, अर्थ, गृहादि और बन्धुवर्ग का नाश होता है। [२५] दिग्बल - यदि चन्द्रमा को हो तो उसकी दशा में जातक देशान्तर अर्थात् बहुत स्थानों से चित्र-विचित्र पदार्थों को पाता है। विद्या से उन्नति, राजकीय शासकों से मित्रता और अपने बन्धुवर्ग में पूजित होता है तथा गज, वाजि एवं पृथ्वी इत्यादि प्राप्त करता है। [२६] काल-बल यदि चन्द्रमा को हो तो उसकी दशा में जातक घोड़े, रथ, गौ, महिषी और कृषि आदि का अधिकारी होता है। वह विद्वानों से घिरा रहता है और उसकी सवारी हड्डी (हाथीदाँत), बाल, चमड़े तथा वस्त्र आदि से भूषित रहती है। [२७] नैसर्गिक—बल यदि चन्द्रमा को हो तो उसकी दशा में जातक को निसर्गतः अर्थात् स्वाभाविक रूप से सुख होता है। बिना परिश्रम राजशासन से सम्मान, वाहन और भूमि आदि की प्राप्ति होती है। [२८] यदि चन्द्रमा दिग्बली हो तो उसकी दशा में जातक पर राजा-महाराजाओं की कृपादृष्टि रहती है। उसके सुख और भाग्य की उन्नति तथा अभिलाषायें पूर्ण होती हैं एवं वह परोपकारी होता है; वाहनादि से सुखी और बन्धुवर्ग से पूज्य होता है। [२९] क्रूर षष्ठांश में यदि चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में जातक को नाना प्रकार के दुःख होते हैं। स्त्री-पुत्रादि को क्लेश, राजा से भय विद्या-विवाद और कलह होता है। [३०] शुभ षष्ठांश में यदि चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में विद्या की उन्नति, कीर्ति-लाभ, सुख, विजय की प्राप्ति, अर्थ-लाभ, नौकरों और सन्तान की वृद्धि होती है। [३१] पारावतांश में यदि चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में जातक को बड़ी कीर्ति, विद्योन्नति और सुख होता है। उसकी देवार्चन में प्रवृत्ति रहती है तथा वह तीर्थ के जल में स्नान करता है। [३२] पापद्रेष्काण में यदि चन्द्रमा हो तो उसकी महादशा में जातक रोगी, पापी और गो ब्राह्मणों को पीड़ा देनेवाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिन्न-भिन्न भावगत चन्द्रमा का फल

(१) **प्रथम भाव** – (लग्न) गत चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में बहुपुत्र-लाभ होता है। जातक बहुत धन से युक्त और विनीत भी होता है; किन्तु खासकर बन्धुओं से विरोध करनेवाला होता है। लोगों में उसे प्रधानता मिलती है। (२) **द्वितीय** चन्द्रमा रहने से उसकी दशा में जातक को स्त्री-पुत्र और धन से सुख तथा धन का आगमन होता है। उत्तम भोजनादि मिलते हैं। रति-सुख की प्राप्ति होती है। और तीर्थों के पवित्र जल से स्नान का सौभाग्य होता है। (३) **तृतीय स्थानगत** चन्द्रमा की महादशा में जातक नाना प्रकार से वित्त का उपार्जन करनेवाला, अत्यन्त सुखी मन से दृढ़ संकल्प करनेवाला, भाइयों से सुख-प्राप्त करनेवाला, कृषि में उन्नति करने वाला, अच्छा भोजन करने वाला और भूषणादि प्राप्त करने वाला होता है। (४) **चतुर्थ** स्थान के चन्द्रमा की महादशा में माता की मृत्यु, पृथ्वी और वाहनादि से सुख, कृषि तथा नवीन गृह का लाभ एवं अपने नाम से कुछ पुस्तकादि प्रकाशित करने का सौभाग्य होता है। (५) **पञ्चमस्थ** चन्द्रमा का फल लग्नस्थ चन्द्र के समान जानिये। (६) **षष्ठ स्थानगत** चन्द्रमा हो तो उसकी महादशा में जातक को दुःख, कलह तथा वियोग, चोर, अग्नि, जल और राजा से भय, मूत्रकृच्छ्र रोग, पीड़ा तथा धन का नाश होता है। (७) **सप्तमस्थ** चन्द्रमा की महादशा में स्त्री और पुत्रों से सुख तथा गलीचा आदि शैय्या के पदार्थों की प्राप्ति होती है; पर जातक प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र आदि रोगों से रुग्ण रहता है। (८) **अष्टमस्थ** चन्द्रमा होने से उसकी दशा में जातक शरीर से दुबला होता है। उसे जल से भय और सबसे विरोध होता है। वह विदेश-यात्रा करता है। उसे भोजन की असुविधा और उसकी माता अथवा मातृपक्ष के स्वजनों की मृत्यु होती है। (९ **नवमस्थ** चन्द्रमा हो तो उसका फल लग्न-तुल्य जानिये। (१०) **दशमस्थ** चन्द्रमा होने से उसकी दशा में जातक कीर्ति, विद्योन्नति, यज्ञादि कर्म, भूमि वस्त्र और वाहनादि से सुख प्राप्त करता है। (११) **एकादशस्थ** चन्द्रमा रहने से उसकी दशा में जातक को अनेक प्रकार से अर्थ, उत्तम भोजन और वस्त्रादि की प्राप्ति होती है। उसे कन्या होती है और उसका चित्त आह्लादित रहता है। (१२) **द्वादशस्थ** चन्द्रमा होने से झगड़े के कारण अन्त में उपार्जित धन का नाश होता है अपने स्थान से हटना पड़ता है। असह्य दुःख होता है।

भिन्न-भिन्न राशिगत चन्द्रमा का फल

(१) **मेष** राशि में यदि चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्री-पुत्रादि से सुख पानेवाला, विदेश के कार्य में प्रेम करने वाला, स्वभाव का क्रूर, खर्चीला, शिरोरोग से पीड़ित, भ्राता और शत्रु से झगड़ने वाला होता है। (२) **वृष** राशिगत चन्द्रमा रहने से कुल की अवस्था के अनुसार राज्य की प्राप्ति होती है अर्थात् यदि जातक राजा की संतान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो अवश्य राजा होता है और यदि साधारण कुल का हो तो विशेष सुख लाभ होता है। जातक को स्त्री, पुत्र, आभूषण, गौ, घोड़ा और हाथी आदि की प्राप्ति होती है तथा विजय मिलती है। यदि चन्द्रमा मूल त्रिकोण में हो (चन्द्रमा वृष राशि के ४ अंश से ३० अंश तक मूल त्रिकोण में होता है) तो उसकी दशा में जातक विदेश-यात्रा करता है। वह खेती और क्रय-विक्रय से धन-लाभ करता है तथा वात-कफ-जनित विकार से रुग्ण होता है एवं स्वजनों से उसका विरोध होता है। वृषराशि के पूर्वार्ध में चन्द्रमा के साथ कोई पापग्रह हो तो माता की मृत्यु और यदि वृष के परार्ध में चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो तो पिता की मृत्यु होती है; परन्तु यदि पापग्रह के बदले शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो पूर्वार्धि-स्थित चन्द्रमा होने से माता को और परार्ध स्थित चन्द्रमा होने से पिता को कष्ट होता है। (३) मिथुन राशिगत चन्द्रमा होने से जातक ब्राह्मण और देवताओं का पूजक, धन का भोग करने वाला, देशान्तर में भ्रमणशील, सुमतिमान् तथा वैभवशाली होता है। (४) कर्क राशिगत चन्द्रमा हो तो धन और खेती की वृद्धि होती है। जातक कलाओं की रचना करनेवाला, वन और पर्वत में रहने का इच्छुक तथा गुप्त रोग से पीड़ित होता है। (५) सिंह राशि में चन्द्रमा होने से धन और उत्तम प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। (६) कन्या राशिगत चन्द्रमा होने से विदेश-यात्रा, स्त्री की प्राप्ति, शिल्प में बुद्धि की प्रवृत्ति और अल्प धन की प्राप्ति होती है। (७) तुला राशिगत चन्द्रमा होने से मन चञ्चल, स्त्री-जनों से विषाद, किसी मनुष्य से विवाद, धन की कमी, उत्साह-भङ्ग और नीच जनों की सङ्गति होती है। (८) वृश्चिक राशिगत चन्द्रमा होने से शरीर रुग्ण, प्रतिष्ठा में अल्पता, मानसिक चिन्ता की अधिकता और स्वजनों से वियोग होता है। यदि ऐसा चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो जातक रोगाक्रान्त होता है। यदि ऐसे चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह भी हो तो मृत्यु-भय अथवा जाति से च्युत होता है। (९) धनु राशिगत चन्द्रमा होने से क्रय-विक्रय में लाभ, कार्य की क्षति, मित्रों से अल्प सुख, पूर्वार्जित धन का विनाश और अन्यत्र स्थान में सुख-सौभाग्य की वृद्धि अवश्य होती है। ऐसी दशा में हाथी और घोड़े आदि वाहनों की वृद्धि भी होती है। (१०) मकर राशिगत चन्द्रमा होने से पुत्रादि का सुख और धन की वृद्धि होती है; परन्तु वादी से शरीर दुर्बल रहता है तथा इधर-उधर सर्वदा आना-जाना पड़ता है। (११) कुम्भ राशि का चन्द्रमा होने से जातक के वक्षस्थल में पीड़ा होती है। वह अनेक प्रकार से दुःखी, शरीर से दुर्बल, ऋणी और दूर देश की यात्रा करनेवाला होता है। यदि ऐसा चन्द्रमा वर्गोत्तम में हो तो अपने से बड़े लोगों के साथ विरोध, स्त्री, पुत्र, धन और मित्रादि से वियोग तथा दाँत एवं मुख में पीड़ा होती है। (१२) मीन राशिस्थ चन्द्रमा के होने से जातक को जल से उत्पन्न धन का लाभ, स्त्री-पुत्रादि से सुख, शत्रु का विनाश और बुद्धि की वृद्धि होती है। वर्गोत्तम का चन्द्रमा हो तो गज,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अश्व और महिषी आदि चतुष्पदों का लाभ, पुत्रादि से सुख एवं शत्रु का नाश होता है तथा वह यशस्वी एवं बुद्धिमान् होता है।

विभिन्न प्रकार से चन्द्रमा की महादशा का फल ऊपर लिखा जा चुका है। उनमें-से कई प्रकार के फल प्रत्येक कुण्डली में मिलेंगे; परन्तु अब विचारना यह है कि किस फल का प्रभाव किस समय पड़ेगा। चन्द्रमा की महादशा का मान दस वर्ष का होता है। पहिले ३ वर्ष ४ मास में चन्द्रमा जिस भाव में हो उस भावगत रहने का जो फल होता है, उसी फल का विनाश होता है। मध्यवाले तीन वर्ष चार महीनों में चन्द्रमा के अंश द्वारा फल एवं चन्द्रमा जिस राशि में बैठा हो उसका फल तथा उस भाव की कारकता के अनुसार फल का उदय होता है। अंतिम तीन वर्ष चार महीनों में चन्द्रमा के अन्य ग्रहों के साथ रहने का फल और चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का फल तथा चंद्र-स्थित-भाव शरीर के जिस अंग को प्रतिपादित करता हो, तत्सम्बन्धी फल का उदय होता है।

मंगल की महादशा का फल

मंगल की महादशा में (साधारण प्रकार से) जातक राजकीय क्षेत्र से, शत्रु से, बंदूक और तोपादि के बनाने से, समकालीन राजाओं के झगड़े से, औषधियों से, धूर्तता से, चतुराई से अनेकानेक क्रूर क्रियाओं द्वारा, चतुष्पदों की वृद्धि से तथा अनेक उद्यमों से धन की प्राप्ति करता है। पित्त-जनित रुधिर-प्रकोप तथा ज्वर से पीड़ित होता है तथा उसे मूर्छा होती है। राजा से भय, घर में कलह, स्त्री, पुत्र और सम्बन्धियों से वैमनस्य तथा इन कारणों से जातक को दुष्टान्नभोजन का दुर्भाग्य होता है।

पराशर-मतानुसार यदि मंगल केंद्र अथवा त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ और ३, ६, ८, ११, तथा १२ का स्वामी हो तो अशुभ फल देता है। जब मंगल शुभफलप्रद होता है तो अपनी दशा में भूमि की प्राप्ति, धन का आगमन, मन की शांति और धैर्य इत्यादि प्रदान करता है। पापफलप्रद होने से राजा से भय कलह, चोर, अग्नि, बंधन तथा व्रण रोगादि से क्लेश होता है।

विशेष फल

(१) यदि मंगल परमोच्च रहे तो उसकी दशा में जातक को धन, भूमि, राजा से मान, भ्रातृ-सुख, कन्या-जन्म, युद्ध और झगड़े में विजय प्राप्त होती है। (२) मंगल यदि उच्च का हो तो राज्य-प्राप्ति अथवा राजा से धन की प्राप्ति, स्त्री, पुत्र, बन्धु और वाहनादि से सुख होता है तथा वह सुखपूर्वक परदेश में वास करता है। (३) आरोही मंगल की दशा में राज-सम्मान, मंत्री इत्यादि का पद, धैर्य, आनंद, गौ, घोड़े, हाथी इत्यादि की प्राप्ति होती है तथा जीवन के शेष भाग में विशेष रूप से भाग्योन्नति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) यदि मंगल अवरोही हो तो धन तथा पद की हानि, विदेशवास, स्वजनों से विरोध, राजा से भय और चोर एवं अग्नि आदि से कष्ट होता है (५) यदि मंगल नीच का हो तो जातक कुवृत्ति द्वारा स्वजनों की रक्षा करता है। भोजन में असुविधा, गौ, घोड़े और हाथी आदि की हानि, बन्धुओं का नाश तथा चोर, अग्नि एवं राजा से भय होता है। (६) मूल त्रिकोण में यदि मंगल हो तो जातक को स्त्री, पुत्र और भ्राता आदि का सुख, कृषि से लाभ, साहसिक कर्म से धन की प्राप्ति एवं युद्ध में यश और विजय मिलती है। उत्तम भोजन, वस्त्र और भूषणादि की प्राप्ति तथा उत्तम धार्मिक पुस्तकों के सुनने में अभिरुचि होती है। यदि ऐसा मंगल दशम स्थान में हो तो राज्य-लाभ, शत्रुओं पर विजय, अच्छे वाहन और अलंकारादि की प्राप्ति होती है। (७) यदि मंगल स्वगृही हो तो धन, भूमि, अधिकार, सुख, और जातक के दो नाम होते हैं। (८) मंगल के अति-मित्रगृही होने से राजद्वार, भूमि, द्रव्य, देशान्तर में ऐश्वर्य-लाभ, उत्तम वस्त्र तथा भोजन आदि की प्राप्ति होती है। यज्ञादि क्रियाएँ एवं विवाह आदि उत्सव भी जातक करता है। (९) मंगल के मित्र-गृही होने से अपने शत्रुओं से मेल और सन्धि, भूमि के लिए झगड़ा, चोर और अग्नि से भय, नशाबाज और जुआड़ियों से झगड़ा, कृषि की हानि तथा कलियुग-जनित पाप एवं दुःख आदि का भाजन होना पड़ता है। (१०) समगृही मंगल होने से उसकी दशा में जातक मकान आदि के बनाने अथवा मरम्मत में धन-व्यय करता है; स्त्री, पुत्र, भाई और नौकर आदि से शत्रुता तथा अग्नि एवं राजा से पीड़ा होती है। (११) शत्रुगृही मंगल होने से शत्रुओं के साथ झगड़ने से पीड़ा; शोक, अग्नि, राजा, विष से दुःख; गुदास्थान, नेत्र और मूत्रस्थली में पीड़ा होती है। (१२) अति-शत्रुगृही मंगल होने से कलह, दुःख, स्वजनों से विरोध, राजा से भय, स्त्री, पुत्र, मित्र और कुटुम्ब को रोग तथा भूमि एवं धन-जनित शोक होता है। (१३) उच्च नवांश में मंगल रहने से मनोभिलाषा की सिद्धि तथा विजय द्वारा सुख होता है। राजा के यहाँ प्रधानता और कीर्ति भी होती है; पर जातक प्रचण्ड रूप से दासी-गमन करता है। (१४) नीच राशि के नीच नवांश में मंगल के होने से शील का अभाव, मानसिक व्यथा, व्यग्रता और राजदण्ड से धन की हानि होती है।

जातक भोजन तथा स्त्री-प्रसंग की चिन्ता में निमग्न रहता है। (१५) उच्चगत मंगल यदि नवांश में नीच का हो तो पुत्र और भाइयों की मृत्यु, राजा, अग्नि तथा विष से भय होता है। (१६) नीचस्थ मंगल यदि उच्च नवांश में हो तो कृषि और अन्य प्रकार की उन्नति, भूमि की प्राप्ति, पुत्र, स्त्री, मित्र तथा धन का सुख होता है। (१७) शुभ षष्ठांश में यदि मंगल हो तो शुभ फल होता है। यज्ञ और विवाह आदि शुभ कार्य होते हैं तथा जातक उपकार-शील होता है। (१८) पापषष्ठांश में तथा क्रूर षष्ठांश में यदि मंगल हो तो जातक को पीड़ा, कारागृह-निवास और सब प्रकार के विभव की क्षति होती है। पारावतांश का यदि मंगल हो तो बहुत सुख, भूमि, धन, स्त्री, वाहन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा भोजन की प्राप्ति होती है। (१९) क्रूर द्रेष्काण में यदि मंगल हो तो मनोव्यथा, विष से भय, कारागार-निवास तथा बेड़ी की सजा इत्यादि का भय होता है। (२०) यदि किसी उच्च ग्रह के साथ मंगल हो तो स्त्री-पुत्र को पीड़ा और अल्प रूप से भोजन-वस्त्र आदि का सुख होता है। वृत्ति और रोजगार (व्यवसाय) कठिन प्रकार का होता है तथा राज-सेवा से युत होता है। (२१) पाप ग्रह के साथ यदि मंगल हो तो जातक नित्य पापकर्म करता है। देवता, ब्राह्मण और कुटुम्ब आदि से उसका बर्ताव अच्छा नहीं रहता। (२२) यदि मंगल के साथ शुभ ग्रह हो तो माता से किंचत् सुख होता है। जातक शरीर से रोगी तथा कृश होता है। झगड़े में विजय, परदेशवास, विद्या-विवाद होता है। (२३) नीचग्रह के साथ यदि मंगल हो तो स्त्री पुत्र की हानि, चोर और राजा से भय तथा मन की विकलता होती है ऐसा जातक दूसरे का अन्न भोजन करनेवाला तथा दास होता है। (२४) यदि मंगल शुभग्रह-दृष्ट हो तो भूमि और धन का नाश होता है; परन्तु मंगल के साथ यदि कोई उच्च का ग्रह हो तो अत्यन्त उत्तम फल होता है। (२५) पापदृष्ट मंगल हो तो अत्यन्त दुःख और कष्ट होता है तथा जातक राजा के कोप से अन्य देश में जाकर स्त्री एवं मित्रादि के वियोग का दुःख भोगता है। (२६) सूर्य के साथ मंगल हो तो जातक स्त्री-विरोध तथा राज पद से च्युत, शत्रु से पीड़ित होकर देश-देशान्तर में बसता है। (२७) स्थान-बल यदि मंगल को हो तो स्त्री और धन का सुख, स्थान की प्राप्ति, सुख, कीर्ति तथा उद्योग की सिद्धि होती है। (२८ स्थान-बल-रहित हो तो जातक पद-च्युत होता है और अपना जीवन नीच वृत्ति से व्यतीत करता है। (२९) यदि मंगल को दिग्बल हो तो राजा से धन की प्राप्ति, रणक्षेत्र में प्रताप, गौ, भूमि, कृषि, वस्त्र और वाहनादि की प्राप्ति; पराक्रम तथा साहस-जनित यश एवं प्रताप की वृद्धि होती है। (३०) मंगल यदि काल-बली हो तो रेशमी अर्थात् उत्तम वस्त्र, मणि-मुक्ता, कृषि, गौ और हाथी इत्यादि का लाभ होता है अर्थात् बहुत सुख देनेवाले उचित पदार्थों की प्राप्ति होती है। (३१) नैसर्गिक बल हो तो राजनेताओं की महती कृपा से भाग्य का पूर्ण उदय होता है और सन्तान, मित्र, बन्धुवर्ग, भूमि, वस्त्र तथा शारीरिक सुख आदि की प्राप्ति होती है। (३२) नैसर्गिक-बल रहित मंगल की दशा में पित्त की अधिकता, नेत्र-रोग, स्थान अर्थात् दर्जा तथा धन का नाश, बुरे अन्न का भोजन, पिता को भय और भाइयों के शरीर में पीड़ा होती है तथा जातक के नाखून खराब हो जाते हैं। (३३) यदि वक्री मंगल हो तो जातक पद से च्युत होता है और उसे वनवास का भय, चोर, अग्नि और सर्प से पीड़ा होती है। (३४) यदि मंगल को दिग्बल हो तो राजकीय अनुग्रह से नाना प्रकार की उन्नति होती है। सन्तान, मित्र, बन्धु, गौ, भूमि, भूषण, वस्त्र एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिन्न-भिन्न भावगत मंगल का फल

(१) केन्द्रगत मंगल होने से चोर और विष का भय, कलह, शत्रुता तथा देशान्तर-वास होता है। (२) द्वितीयस्थ मंगल होने से जातक को अपने कुल में धन एवं कृषि की वृद्धि एवं विभव होता है; परन्तु प्रशासन से दण्डित होता है और उसके मुख तथा नेत्र में रोग होता है। (३) तृतीयस्थ मंगल होने से आनन्द, धैर्य, राजद्वार में सफलता; धन, सन्तान, स्त्री और भाई से सुख होता है। (४) चतुर्थ स्थानगत मंगल होने से जातक स्थान-च्युत, बन्धुओं का विरोधी, चोर और अग्नि से भीत, राज-कोप से पीड़ित तथा सघन जंगल इत्यादि में भ्रमण करनेवाला या दुर्दशा में पड़ जानेवाला होता है। (५) यदि पञ्चमस्थ मंगल हो तो पुत्र का मरण, नेत्र-रोग, बुद्धि की भ्रान्ति और जड़ता होती है। यदि पञ्चमस्थ मंगल शत्रुगृह में हो तो भाइयों को दुःख और जातक को कठिन रोग का भय तथा नेत्र-रोग होता है। पञ्चमस्थ मंगल कीर्ति और विवेक प्रदान करता है; किन्तु इसकी दशा में कलह भी होता है। (६) षष्ठस्थ मंगल हो तो उसकी दशा में स्त्रियों से विरोध, अति शोक, राज्य या पदाधिकार से च्युति, देश-देशान्तर का भ्रमण, विपक्षियों से हानि आदि फल होता है। (७) सप्तमस्थ मंगल होने से स्त्री की मृत्यु, गुदारोग और मूत्रकृच्छ्र रोग होता है; परन्तु यदि मंगल के साथ कोई उच्च ग्रह हो अथवा चन्द्र उच्च का हो तो ऐसा फल नहीं होता। (८) अष्टमस्थ मंगल की दशा में दुःख और महाभय होता है। जातक स्थान से च्युत होता है। विदेश की यात्रा करनी पड़ती है। अन्न में उसे अरुचि हो जाती है तथा विस्फोटक रोग का भय होता है। (९) नवमस्थ मंगल होने से उसकी दशा में जातक के पद की समाप्ति या उसमें परिवर्तन होता है। गुरुजन को कष्ट और ईश्वर के प्रति भक्ति में विघ्न होता है। (१०) दशमस्थ मंगल हो तो उसकी दशा में कर्म-वैकल्य से दुःख, उद्योग-भङ्ग, कीर्ति का ह्रास, स्त्री, पुत्र, धन, विद्या और मान इत्यादि की हानि होती है। (११) एकादशस्थ मंगल होने से उसकी दशा में राजकीय सम्मान, धन और सुख का लाभ होता है। जातक लड़ाई में विजयी, परोकार में दत्तचित्त और कीर्तिमान् होता है। (१२) द्वादशस्थ मंगल होने से धन की हानि, राज-भय, पुत्र, स्त्री और जमींदारी आदि में हानि तथा भाइयों का परदेशवास होता है।

भिन्न-भिन्न राशिगत मंगल का फल

(१) मेष राशि में यदि मंगल हो तो अनेक मंगल-कार्य होते हैं। सन्तान की उत्पत्ति का सुख और साहस प्राप्त होता है; परन्तु अग्नि तथा शत्रु से भय होता है। (२) वृष राशि में यदि मंगल हो तो जातक को बड़ा आनन्द होता है। वह बड़ा वाचाल होता है। ईश्वर आदि में प्रीति बढ़ती है और आदर के साथ दूसरे का उपकार करता है। (३) मिथुन राशि में मंगल हो तो परदेश-यात्रा, बहुत खर्च, मित्रों से विरोध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और कलाओं में प्रवीणता होती है। जातक अनेक प्रकार की बातों का ज्ञाता और वातपित्त-रोग से पीड़ित होता है। (४) कर्क राशिगत यदि मंगल हो तो कीर्ति का विस्तार होता है। जातक सम्पूर्ण गुणयुक्त, बली और चतुष्पदों से सुखी होता है; परन्तु गुप्त-स्थान में अकस्मात व्याधि होती है। मंगल यदि कर्क के नीच अंश में हो तो जातक को जंगल के पदार्थों से तथा अग्नि की क्रिया द्वारा धन का लाभ होता है; स्त्री-पुत्रादि से दूर रहने के कारण वह दुःखी और बलहीन होता है। (५) सिंह राशि में यदि मंगल हो तो जातक जनसमूह का नायक होता है; परन्तु स्त्री-पुत्र से वियोग और शत्रु तथा अग्नि से बाधा होती है। (६) कन्या राशिस्थ मंगल होने से मनुष्य आचार-विचार-शील होता है। यज्ञादि उत्तम कार्यों में उसको प्रवृत्ति होती है एवं स्त्री, पुत्र, भूमि और धन-धान्य से सुखी होता है। (७) तुला राशि गत मंगल होने से उसकी दशा में जातक धन और स्त्री से रहित, झगड़े से व्याकुल तथा शरीर से विकल होता है एवं उसे चतुष्पदों का अभाव होता है। (८) वृश्चिक राशिगत मंगल होने से जातक धन का संग्रह करनेवाला, कृषि-वृत्ति का और बड़ा वाचाल होता है; परन्तु वह बहुतों से द्वेषभाव रखता है। (९) धनु राशिगत मंगल होने से जातक के मनोरथ की सिद्धि राज्य से होती है। ईश्वर से प्रेम होता है; परन्तु कलह के कारण उदासीनता रहती है। (१०) मकर राशिगत मंगल होने से उसकी दशा में कुलानुसार धन की वृद्धि होती है। विवाद आदि में विजय प्राप्त करता है, स्वर्णरत्नादि तथा घोड़ों से सुखी रहता है। यदि मंगल उच्चांश से आगे बढ़ गया हो अर्थात् मकर के २८ अंश से आगे हो तो यत्न द्वारा कार्य की सिद्धि होती है। परिश्रम अधिक करना पड़ता है। असन्तोष रहता है और शस्त्र एवं व्याघ्रादि से भय होता है। (११) कुम्भ राशिस्थ मंगल होने से जातक आचार-विचारहीन धन-व्यय से व्यथित, पुत्रादि से चिंतित और उद्विग्न-चित्त होता है। (१२) मीन राशिस्थ मंगल होने से उसकी दशा में बहुव्ययी, ऋणी, पुत्रादि से चिन्तित और परदेश-निवासी होता है। चर्मरोग यथा दद्रु आदि से क्लेश पाता है; पुनः यदि वर्गोत्तम (मीन राशि में मीन ही के नवांश में) हो तो उसकी दशा में लड़ाई में विजयी, गुणसम्पन्न, बलयुक्त और नाना प्रकार की वस्तुओं का लाभ करनेवाला होता है। मंगल की महादशा के प्रथम खण्ड में नाना प्रकार से धन और मान की हानि होती है। उसके द्वितीय खण्ड में राज-भय होता है। अन्तिम खण्ड में भाई, सन्तान, स्त्री और धन इत्यादि की कमी, प्लीहा एवं मूत्रस्थलीजनित रोग होता है; परन्तु स्मरण रहे कि यदि मंगल उच्चस्थ शुभ फल देनेवाला हो तो वैसी स्थिति में ऐसा फल नहीं होता। पाठान्तर से यदि मंगल गोचर में भी बुरा हो तो बुरा फल होता है, अन्यथा नहीं। मतान्तर यह है कि मंगल की महादशा के प्रथम खण्ड में मान की हानि और धन का क्षय होता है। मध्यखण्ड में राजा, चोर और अग्नि इत्यादि से भय होता है। अन्तिम खण्ड में भी यही सब फल होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहु की महादशा का फल

राहु की महादशा में साधारण रूप से सुख-सम्पत्ति और सांसारिक स्थिति का नाश, पुत्र-कलत्रादि के वियोग का दुःख तथा परदेशवास होता है। जातक रोगी होता है और झगड़े की ओर उसकी अभिरुचि होती है; परन्तु राहु जब उत्तम फल देनेवाला होता है तो (अर्थात् उसकी उत्कृष्ट दशा में) लक्ष्मी की प्राप्ति, धर्म और अर्थ का आगमन तथा पुण्य का उदय होता है। राहु की दशा अठारह वर्ष की होती है जिसमें से षष्ठ और अष्टम वर्ष बहुत कष्टदायी होते हैं।

राहु वृष राशि में उच्च, कर्क (कुम्भ) में मूल त्रिकोण में और मेष में मित्रगृही होता है। (१) उच्च का राहु होने से उसकी दशा में धन-धान्य और सुख की प्राप्ति तथा राजकीय व्यक्तियों से मित्रता होती है। (२) नीच राहु की दशा में चोर, अग्नि, विष, राजा और फाँसी इत्यादि से भय होता है। (३) पापक्षेत्र गत राहु की महादशा में शरीर की कृशता, कुल के लोगों का नाश, राजभय, धूर्तों से ठगे जाने का भय, प्रमेह, क्षय, कास-श्वास और मूत्रस्थली-जनित रोगों का भय होता है। (४) उच्च ग्रह के साथ यदि राहु बैठा हो तो राज्य की प्राप्ति या धन का लाभ, स्त्री पुत्र से सुख और वस्त्राभूषण तथा सुगन्धित पदार्थों का लाभ होता है। (५) नीच ग्रह के साथ यदि राहु बैठा हो तो जातक नीच-वृत्ति से जीवन व्यतीत करता है। कुभोजन मिलता है और उसकी स्त्री तथा उसके पुत्र सज्जन नहीं होते हैं। (६) शुभ ग्रह की दृष्टि यदि राहु पर हो तो राज्य से मान एवं धन की प्राप्ति और बन्धुओं की मृत्यु होती है। (७) पाप ग्रह की दृष्टि यदि राहु पर हो तो जातक धर्म-कर्म रहित और रोगी होता है। चोर, अग्नि तथा राजा से भय एवं जातक के उद्योग में नाना उपद्रव होते हैं अर्थात् नौकरी इत्यादि छूट जाती है।

(१) लग्नगत राहु की दशा में बुद्धि-विहीन, होता है, विष अग्नि और शस्त्र से भय, बन्धुवर्ग का विनाश, पराजय और दुःख होता है। (२) द्वितीयस्थ राहु की दशा में विशेष रूप से राज्य और धन की हानि होती है। राजा से भय होता है। नीचे दर्जे के व्यक्तियों की सेवा करनी पड़ती है। अच्छे भोजन का अभाव होता है और मन चिन्तित तथा क्रोधित रहता है। (३) तृतीयस्थ राहु होने से सन्तान, स्त्री, द्रव्य और भाइयों से सुख, कृषि की अधिकता, राजा से सम्मान तथा विदेश मे आना-जाना होता है। (४) चतुर्थगत राहु होने से उसकी दशा में माता अथवा जातक की मृत्यु होती है। राजा से भय, भूमि और धन की हानि, वाहनादि से पतन, कुटुम्ब से भय, स्त्री पुत्र को रोग तथा उनका विनाश एवं मानसिक व्यथा होती है। (५) पञ्चमस्थ राहु होने से बुद्धि-भ्रम अर्थात् उन्माद, भोजन सुख से विहीनता, झगड़ा और मुकद्दमेबाजी से दुःख, प्रशासन से भय तथा सन्तान का नाश होता है। (६) षष्ठस्थ राहु होने से राज, अग्नि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और चोर से भय, मित्रों का विनाश और नाना प्रकार के रोग (प्लीहा, क्षय, पित्त-प्रकोप, चर्मरोग आदि) से पीड़ित होता है तथा मृत्यु का भय होता है। (७) **सप्तमस्थ** राहु की दशा में स्त्री का नाश, विदेश-यात्रा, कृषि और धन की हानि, नौकरों की कमी, सन्तान का विनाश तथा सर्प से भय होता है। (८) **अष्टमस्थ** राहु होने से मृत्यु का भय, सन्तानादि का नाश, चोर, अग्नि और राज्य से भय, अपने कुल के लोगों से क्षति जंगली पशुओं से भय होता है। (९) **नवमस्थ** राहु की दशा में पिता की मृत्यु, विदेश-यात्रा, बन्धुवर्ग और गुरु आदि की मृत्यु, धन तथा सन्तान की हानि होती है। उसकी दशा में समुद्र में स्नान का सौभाग्य प्राप्त होता है। (१०) **दशमस्थ** राहु की दशा में पुराणादि धार्मिक ग्रन्थों का पठन-पाठन और गंगा-स्नान का सौभाग्य प्राप्त होता है; पुनः यदि दशमस्थ राशि शुभ राशि हो तो उपर्युक्त ही फल होता है; परन्तु यदि पाप राशि हो तो जातक को दुःख और परदेशवास होता है। यदि दशमस्थ राशि पाप-राशि हो और उसके साथ पापग्रह भी बैठा हो तो जातक पर-स्त्रीगामी, ब्रह्महत्या करनेवाला तथा कलंकित होता है एवं उसके स्त्री पुत्र को अग्नि से भय होता है। (११) **एकादशस्थ** राहु की दशा में राजा से मान, धन, स्त्री, अन्न, गृह, भूमि और नाना प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है। (१२) **द्वादशस्थ** राहु की दशा में देश-देशान्तर में भ्रमण, मन की विकलता, स्त्री पुत्र से वियोग, कृषि, भूमि, अन्न और पशुओं की हानि होती है।

भिन्न-भिन्न राशिगत राहु-दशा का फल

(१) **मेष, वृष अथवा कर्क** राशिगत राहु हो तो धन, गोधन का आगमन, विद्या की प्राप्ति, राज-सम्मान, स्त्री-सुख, नौकरों की प्राप्ति और आत्मा की शान्ति होती है। (२) **कन्या, धनु, कर्क अथवा मीन** राशिगत राहु की दशा में जातक को स्त्री पुत्रादि का सुख, ग्रामाधिपत्य और पालकी इत्यादि वाहन का सुख मिलता है; परन्तु अन्त में उपर्युक्त सभी सुखों का नाश हो जाता है। (३) पाप राशिगत राहु की दशा में दुर्बलता, कुल को क्लेश, राज्य, शत्रु और ठग से भय, खाँसी, क्षय या मूत्रकृच्छ्र रोग होता है।

राहु की दशा के प्रथम खण्ड में दुःख, मध्य खण्ड में सुख और यश तथा अन्तिम खण्ड में माता, पिता, गुरु एवं स्थान का नाश और रोजगार में विघ्न-बाधायें होती हैं।

बृहस्पति की महादशा का फल

बृहस्पति की महादशा में जातक को राज-मन्त्रित्व एवं मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। वह देवार्चन-धर्म-युक्त, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, वेदशास्त्रों का जाननेवाला, यज्ञादि कर्मों में रुचि रखनेवाला, भूमि और वस्त्र का लाभ करनेवाला, अश्वादि वाहनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से सुखी, कुलश्रेष्ठ, विचारशील, बुद्धिमान्, नम्र, धनी तथा उत्तम मनुष्यों की संगति करनेवाला होता है। ऐसे जातक को कभी-कभी गले में दाहादि से पीड़ा होती है। बृहस्पति की महादशा में जातक ग्राम, नगर अथवा किसी प्रान्त का अधिपति अर्थात् उनपर अधिकार करनेवाला, मेधावी, विनीत और चित्त आकर्षित करनेवाला होता है; परन्तु नीच, शत्रु-गृही इत्यादि की दशा में दुष्ट फल होता है।

विशेष फल

(१) **परम उच्च** बृहस्पति की महादशा में धन, समृद्धि, महान् सुख, कीर्ति, हाथी और घोड़ों के समूह का लाभ, राज्याभिषेक तथा कुल पर आधिपत्य होता है। (२) **उच्चगत** बृहस्पति की महादशा के अन्त में धन की प्राप्ति, राजा से मान, विदेश-यात्रा, कोई बड़ी नौकरी अथवा आधिपत्य होता है; परन्तु दुःख से शरीर खिन्न होता है। (३) **आरोही** बृहस्पति की महादशा में धन और भूमि की प्राप्ति, संगीत-प्रेम, राजा, स्त्री, तथा सन्तान से सुख एवं स्वकीय यश और प्रताप की प्राप्ति होती है। (४) **अवरोही** बृहस्पति की महादशा में कभी किंचित् सुख और अन्त में दुःख होता है। यश की हानि, आकर्षित करनेवाला स्वरूप, राज्य और राजसम्मान प्राप्त होता है; परन्तु अन्त में इन सबका अभाव हो जाता है। (५) **परम नीच** बृहस्पति की दशा में जातक के गृह और द्वारादि भग्न हो जाते हैं। दूसरों से मतभेद रहता है, कृषि का नाश होता है तथा दूसरों की नौकरी करनी पड़ती है। (६) **मूल त्रिकोण** के बृहस्पति की दशा में राज्य, भूमि, सम्पत्ति, पुत्र, स्त्री और वाहन आदि की प्राप्ति होती है। स्व-भुजार्जित बहुत धन मिलता है। यज्ञादि धार्मिक कर्म करनेवाला और मनुष्यों से पूजनीय होता है। (७) **स्वगृही** बृहस्पति की महादशा में राज्य, भूमि, वस्त्र, उत्तम भोजनादि, गौ, हाथी-घोड़े और सुख की प्राप्ति होती है। काव्य-कुशलता, वेद-शास्त्रादि में प्रवृत्ति, पुण्य और पुण्य-कार्यों का उदय होता है। (८) **अति शत्रुगृही** बृहस्पति की महादशा में शोक, दुःख, भूमि आदि विषयक झगड़े, स्त्री, पुत्र और धन की हानि, राज-कोप तथा नेत्र-पीड़ा होती है। (९) **शत्रुगृही** बृहस्पति की महादशा में धन, भूमि, खेती, वस्त्रादि, राज-सम्मान और आनन्द की प्राप्ति होती है; परन्तु स्त्री, पुत्र, भाई तथा नौकरों से जातक आर्त रहता है। (१०) **अति मित्रगृही** बृहस्पति की महादशा में राज-सम्मान प्राप्त होता है और उच्च पदाधिकारी होने के कारण संग्राम-भूमि में प्रवेश के लिए वह सर्वदा तत्पर रहता है तथा दूर की जगहों से अनेक प्रकार के पदार्थ प्राप्त करता है। (११) **मित्र-गृही** बृहस्पति की महादशा में राजा से मित्रता, कीर्ति, अन्न, उत्तम भोजन और वस्त्रादि की प्राप्ति होती है तथा वह विद्या-विवाद में विजय पाता है। (१२) **समगृही** बृहस्पति की महादशा में राज्य से साधारण लाभ, धन, कृषि और द्रव्य का सुख होता है तथा जातक भूषण एवं विचित्र वस्त्रादि से अलंकृत रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१३) उच्च ग्रह के साथ बृहस्पति रहने से उसकी दशा में जातक को मन्दिर, पोखरा, कुआँ और अन्य प्रकार के लाभकारी गृहों (धर्मशाला, विद्यालय इत्यादि) के निर्माण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है तथा वह राज-पूज्य होता है। (१४) नीच ग्रह के साथ बृहस्पति के रहने से उसकी महादशा में नीचे दर्जे की नौकरी, अपवाद, मन में अशान्ति और स्त्री-पुत्र आदि से मतभेद होता है। (१५) पापग्रह के साथ बृहस्पति के रहने से जातक के मन में तो बुरी बातें उठती हैं; परन्तु बाहरी दिखावट में वह धार्मिक एवं पवित्र होता है और इसकी दशा में स्त्री, पुत्र, भूमि तथा धन का आनंद होता है। (१६) सूर्य के साथ बृहस्पति के रहने से उसकी दशा में जातक शीलरहित और पारिवारिक सुख से विहीन होता है। वह ज्वर-प्रकोपादि से पीड़ित होता है तथा उसका शरीर कृश होता है। उसके शरीर के ऊपरी भाग में रोग-प्रकोप होता है। (१७) शुभ ग्रह के साथ बृहस्पति के रहने से राजा के साथ सवारी में चलने-फिरने का सौभाग्य, दान या राजा के सम्मान से धन-प्राप्ति और यज्ञादि उत्तम कार्यों से विशेष लाभ होता है। (१८) शुभ ग्रह-दृष्ट बृहस्पति की महादशा में राज्य से धन की प्राप्ति, देवार्चन, गुरु-पूजन और तर्पणादि में रुचि तथा पवित्र नदियों में स्नान का सौभाग्य प्राप्त होता है। (१९) पाप दृष्ट बृहस्पति की महादशा में आनंद, किंचित् मात्र धैर्य, समय-समय पर यश, कुछ धन का लाभ; किन्तु चोर आदि से हानि भी होती है। (२०) उच्च नवांशगत बृहस्पति के रहने से इसकी दशा के अन्त में राज-तुल्य धन, सुख, रत्नादि और सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। (२१) नीच नवांशगत बृहस्पति के रहने से उसकी दशा में राज-दण्ड-भय, पदच्युति, बन्धुवर्ग से विरोध, चोर, अग्नि और कुल के लोगों से भय तथा प्लीहा एवं चर्मरोग होता है। (२२) स्थानबली बृहस्पति की महादशा में भूमि स्त्री, पुत्र, हाथी और घोड़े इत्यादि की वृद्धि होती है। (२३) दिग्बली बृ० की महादशा में जातक लोक-प्रसिद्ध होता है। (२४) कालबली बृहस्पति की महा-दशा में जातक राजद्वार से धन और सम्मान पाता है। (२५) नैसर्गिक बली बृहस्पति की महादशा में नाना प्रकार के सुख, विलास, महत्व, विद्या से आनन्द, स्त्री-सम्भोग से सुख और भागीरथी जैसे तीर्थों में स्नान का सौभाग्य पाता है। (२६) दिग्बली बृहस्पति की महादशा में राजा के कृपा-कटाक्ष से जातक की सब प्रकार से भाग्योन्नति होती है और वह देश-देशान्तर-भ्रमण करता है। (२७) वक्री बृहस्पति की महादशा में जातक को युद्ध में विजय, राजा से मित्रता, धन, स्त्री, पुत्र से सुख, अच्छे वस्त्र और सुबन्धु आदि की प्राप्ति होती है। (२८) शुभ-षष्ठांशगत बृहस्पति की दशा जातक के लिए अति शुभ है। उसे वाहन की प्राप्ति होती है, वह बन्धुजनों से आदर पाता है और यज्ञक्रिया और विवाहादि उत्सव से सुखी होता है। (२९) पाप-षष्ठांशगत बृहस्पति की महादशा में जातक को बहुत कष्ट और राजकोप से मान-मर्दन होता है। (३०) पारा-वतांश बृहस्पति की महादशा में उत्तम भोजन, वस्त्राभूषण और सुख आदि की प्राप्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होती है। (३१) पाप द्रेष्काणगत बृहस्पति की महादशा में कारागार-निवास, कठिन बन्धन और स्त्री से झगड़ा होता है। (३२) उच्च बृहस्पति यदि नीच नवांश में हो तो जातक को बहुत धन की प्राप्ति होती है; परन्तु शीघ्र ही उसका नाश भी हो जाता है। स्त्री-पुत्र से द्वेष, शत्रु, चोर और राजा से भय होता है। (३३) नीच बृहस्पति यदि उच्च नवांश में हो तो जातक के धन का बराबर नाश होता है और जातक पुनः उसका उपार्जन करता है। उसको राज्य से सुख, विद्या, बुद्धि तथा यश की उन्नति होती है; हो सकता है कि वह किसी देश का अधिपति भी हो जाय।

भिन्न-भिन्न भावगत बृहस्पति-दशा का फल

(३४) केन्द्रगत बृहस्पति की महादशा में जातक धन, राजा और स्त्री से सुख पाता है तथा मनुष्यों के भरण-पोषण करनेवालों का मुखिया होता है। (३५) त्रिकोणगत बृ० की महादशा में धन, अन्न, स्त्री, पुत्र, उत्तम भोजन, उत्तम वस्तु और वाहनादि का सुख होता है। (१) लग्न में बृहस्पति रहने से उसकी दशा में जातक को सुख, साफ-सुथरे वस्त्र और भूषणादि प्राप्त होते हैं। जनता जातक को बड़े समारोह से जलूस के साथ ले जाती है। (२) द्वितीयस्थ बृहस्पति की महादशा में राज-सम्मान और धन की प्राप्ति होती है। सभा-सोसाइटी में उत्तम प्रकार से विद्या-विवाद करता है। परोपकार-निरत, सुखी और विजयी होता है एवं राजा से धन तथा भाई अथवा किसी स्त्री द्वारा भूमि की प्राप्ति होती है। जातक बुद्धिमान् और उपकारी होता है तथा अनेक प्रकार के वस्त्र एवं भूषणादि से भूषित रहता है। (३) तृतीयस्थ बृ० होने से भाई से धन और राज-द्वार से सुख प्राप्त करता है। (४) चतुर्थस्थ बृहस्पति की महादशा में राज-द्वार से प्रेम और तीनों सवारियोंवाला होता है। यदि जातक को राजयोग हो तो राजा अथवा (अगर स्वयं राजा न हो जाय तो) राजा के ऐसा अधिकारवाला होता है। तीन प्रकार की सवारियाँ ये हैं: (१) चतुष्पद (२) मनुष्य (३) निर्जीव। (५) पञ्चमस्थ बृ० होने से तन्त्र-मन्त्र आदि गुप्त विद्याओं की ओर जातक की रुचि होती है। राजा से मान पाता है। पुत्र उत्पन्न होने का सौभाग्य, बहुमुखी प्रतिभा और वेद-पुराणादि के श्रवण में रुचि होती है। (६) षष्ठस्थ बृ० होने से उसकी दशा के आदि में स्वास्थ्य और स्त्री पुत्रादि की प्राप्ति होती है; परन्तु अन्त में रोग, चोर और स्त्री से भय होता है। (७) सप्तमस्थ बृ० की दशा में स्त्री पुत्रादि से सुख, विदेशभ्रमण और विजय होती है। जातक ईश्वर-भजन तथा पुण्यकार्यों में लीन रहता है। (८) अष्टमस्थ बृ० होने से दशा के आरम्भ में सुख होता है। स्थान-च्युति होती है। विदेश-यात्रा होती है। बन्धुजनों से वियोग होता है; परन्तु अन्त में स्त्री पुत्र तथा राजा से सम्मानित होता है। (९) नवमस्थ बृहस्पति का फल त्रिकोणस्थ बृहस्पति के समान जानना। (१०) दशमस्थ बृ० की दशा में जातक को राज्य और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन की प्राप्ति, राज-योग रहने से राज्य अथवा धन, स्त्री, पुत्र तथा शुभ कार्य की प्राप्ति होती है। जातक राज-तुल्य सुख भोगता है और अधिकार-पूर्ण होता है। (११) एकादशस्थ वृ० होने से उसकी दशा में जातक को धन या राज्य की प्राप्ति तथा पुत्र की उत्पत्ति होती है; पर राज्य से तथा अपने बन्धुजन से द्वेष उत्पन्न हो जाता है। व्यंकटेश का मत है (मद्रास की छपी हुई पुस्तक के अनुसार) कि ऐसे वृहस्पति की महादशा में स्त्री पुत्रादि और बन्धुवर्ग से विरोध होता है; परन्तु बम्बई में मुद्रित सर्वार्थचिन्तामणि आदि ग्रन्थ एवं तर्क से ऐसा फल असम्भव प्रतीत होता है; क्योंकि एकादशस्थ वृ० की पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान, पञ्चम स्थान और सप्तम स्थान में पड़ती है। तृतीय स्थान से बन्धुवर्ग का विचार, पञ्चम से पुत्र का विचार और सप्तम स्थान से स्त्री का विचार होता है। अतएव वृहस्पति की शुभ दृष्टि से शुभ फल की सूचना मिलती है न कि अशुभ फल की। पाठकगण तथा विद्वत्समाज अपनी बुद्धि और तर्कानुसार इस पर विवेचन करें। (१२) द्वादशस्थ वृ० होने से नाना प्रकार के क्लेश और विदेश यात्रा होती है; परन्तु वाहन का सुख होता है।

भिन्न-भिन्न राशिगत वृहस्पति दशा का फल

(१) मेष राशिगत वृ० रहने से उसकी दशा में जातक को विशेष धन का लाभ होता है। वह बहुत लोगों का नायक होता और स्त्री एवं पुत्र आदि के सुख से सम्पन्न रहता है। (२) वृष राशिगत वृ० होने से उसकी दशा में जातक अत्यन्त दुःखी, आनन्दरहित, धनहीन और विदेशवासी होता है, परन्तु साहसी भी होता है। (३) मिथुन राशिगत वृ० होने से उसकी दशा में जातक का ध्यान शारीरिक पवित्रता की ओर रहता है। स्त्री से कलह, माता और कुटुम्बीजनों से विरोध तथा विष आदि से सन्ताप रहता है। (४) कर्क राशिगत वृ० की महादशा में कुल पर प्रधानता, नाम की ख्याति और बड़े लोगों से मित्रता होती है। विभव होता है। यदि वृहस्पति कर्क में उच्च अंश को छोड़कर अन्यत्र बैठा हो तो जातक माता-पिता से दुःखी, व्यसनी तथा पूर्व-सञ्चित द्रव्य के विनाश हो जाने की चिन्ता में निमग्न रहता है। (५) सिंह राशिस्थ वृ० की महादशा में जातक धनवान, दाता, राज-प्रतिष्ठित और स्त्री, पुत्र तथा भ्रातृवर्ग से आनन्दित रहता है। (६) कन्या राशिस्थ वृ० की महादशा में जातक राज-द्वार में मान और प्रतिष्ठा पानेवाला तथा स्त्री पुत्रादि से सुखी होता है एवं शूद्रादि नीच जातियों से उसका कलह होता है। (७) तुला राशिस्थ वृ० की महादशा में जातक अविवेकी, उत्साहरहित, स्त्री-पुत्रों से शत्रुता करनेवाला और अल्प भोजन करनेवाला होता है। (८) वृश्चिक राशिस्थ वृ० की महादशा में जातक कार्य करने में समर्थ विद्वान्, बुद्धिमान्, विनीत और ऋणरहित होता है। ऐसे जातक को पुत्रोत्सव का सुख होता है; परन्तु जातक नियम-विहीन अर्थात् अव्यवस्थितचित्त होता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। (९) धनुराशिस्थ वृ० की महादशा में यदि १३ अंश तक का वृ० हो अर्थात् मूलत्रिकोण का हो तो जातक राजा, मण्डलाधीश अर्थात् जमींदार अथवा राज-मंत्री और स्त्री के वचनों का पालन करनेवाला होता है। यदि तेरह अंश से आगे वृ० हो तो जातक कृषि में मन लगाता है। चतुष्पदों से उसे सुख होता है और यज्ञादि उत्तम कार्यों में जातक की अभिरुचि होती है। (१०) मकरस्थ गुरु यदि नीच नवांश में हो तो जातक को धन की क्षीणता और बन्धुजनों से वियोग होता है और जातक अन्य किसी मनुष्य का कार्य करनेवाला होता है। उसके पेट या गुप्त स्थान में रोग होता है। यदि मकरस्थ गुरु नीच नवांश में न हो तो कृषि और मल्लाह आदि से धनागम तथा वृक्षादि से पतन का भय होता है एवं छल (से धनोपार्जन) के कारण पीड़ा भोगता है। (११) कुम्भ राशिस्थ गुरु होने से जातक सर्वदा स्त्री-विलास में रत, कलाओं का जाननेवाला, धनी और बुद्धिमान् होता है तथा उसे विद्या-जनित प्रसन्नता होती है। (१२) मीन राशिस्थ गुरु होने से जातक पुत्र स्त्री आदि से सुखी, राज-द्वार से धन प्राप्त करनेवाला, बुद्धिमान तथा प्रतिष्ठित होता है।

गुरु की महादशा-फल के प्रथम ($\frac{1}{3}$) खण्ड में आनन्द और मर्यादा की प्राप्ति, मध्य-खंड में स्त्री पुत्रादि से सुख तथा अन्तिम खंड में दुःखादि का आगमन, कार्य की हानि एवं पीड़ा होती है।

शनि महादशा का फल

शनि की महादशा में जातक को ऊँट, गदहा, बकरा, पक्षी, वृद्धा स्त्री, मोटा अन्न और किसी श्रेणी के ग्राम, नगर अथवा जाति के अधिकार द्वारा धन की प्राप्ति होती है अथवा किन्हीं नीच जातियों का आधिपत्य मिल जाता है। जातक बुद्धिमान्, दानी और कला-कुशल होता है। स्वर्ण, वस्त्रादि से सम्पन्न, हाथी, घोड़े आदि चतुष्पदों से शोभित, विनयी, देवता आदि में प्रेम रखनेवाला और किसी प्राचीन स्थान की प्राप्ति से सुखी, देवालय आदि बनवानेवाला, अपने कुल को उज्ज्वल करनेवाला और कीर्तिमान् होता है; परन्तु नीचादि-दोष युक्त शनि की महादशा में आलस्य, निद्रा, कफ-वात-पित्त-जन्य रोग, ज्वर-पीड़ा, स्त्री-सङ्ग से रोग की उत्पत्ति और चर्म-रोग अर्थात् दद्रु आदि रोग से पीड़ा होती है। सामान्य रूप से शनिश्चर का दशा-फल ऐसा होता है; परन्तु स्थानादिभेद से फलों का विवरण नीचे लिखा जाता है।

विशेष फल

(१) उच्च शनि की महादशा में जातक ग्राम, देश और सभा इत्यादि का आधिपत्य प्राप्त करता है। उसे अनेक प्रकार से आनन्द मिलता है; परन्तु पिता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की मृत्यु और बन्धुजन से वैमनस्य होता है। (२) नीचस्थ शनि को दशा में देश-परिवर्तन, दुःख, चिन्ता, वाणिज्य और कृषि से धन की हानि तथा राजा से विरोध होता है। (३) आरोही शनि की दशा में राजपक्ष से भाग्योदय, वाणिज्य से धन-प्राप्ति, कृषि और भूमि का लाभ, घोड़े और गौ इत्यादि से सुख तथा स्त्री एवं पुत्र की प्राप्ति होती है। (४) अवरोही शनि की दशा में भाग्य का क्षय, राजा से पीड़ा, स्त्री-पुत्र और धन का नाश, किसी की अधीनता एवं नेत्र और गुदा-रोग होता है। (५) मूलत्रिकोणगत शनि की दशा में परदेश और जंगल आदि में वास, ग्राम तथा सभा का आधिपत्य, स्त्री, पुत्र और जनता से मतभेद एवं जातक को नाम (अर्थात् उपनाम) या पदवी प्राप्त होती है। (६) स्वगृही शनि की दशा में जातक के बल, पौरुष और कीर्ति की वृद्धि होती है तथा राजाश्रय मिलता है। भूमि और भूषणादि की प्राप्ति होती है तथा वह अपने गुणों के अनुसार सुख पाता है। (७) नीचस्थ शनि की महादशा में स्त्री, सन्तान और भाइयों का नाश, बहुत कष्ट, कृषि की हानि तथा नीचे दर्जे की नौकरी होती है। (८) अति मित्र-गृही शनि होने से सुख, राज-सम्मान, पशु, कृषि, वाणिज्य, धन, स्त्री और पुत्रादि की वृद्धि होती है। (९) मित्रगृही शनि की महादशा में शिल्पादि विद्या का गुणी, ज्ञानी, बली और प्रतापी होता है। (१०) समगृही शनि की महादशा में जातक सामान्य बुद्धि का होता है। उसे स्त्री पुत्र से प्रेम, भाई और बन्धुजन से वैमनस्य, शरीर में पीड़ा, क्षय तथा वात-पित्त-कोपजनित रोग होता है। (११) शत्रु-गृही शनि की महादशा में भूमि की हानि, पदच्युति, कृषि का विनाश और दुर्बलता होती है; परन्तु उसे वेश्याओं से धन की प्राप्ति होती है। (१२) अति-शत्रु-गृही शनि की महादशा में स्थानच्युति, बन्धुवर्ग से विरोध, राजा और चोर से भय, नौकर तथा स्त्री पुत्र की ओर जातक की रुष्टता होती है। (१३) उच्च नवांश में शनि रहने से उसकी महादशा में जातक हर प्रकार का आनन्द और सुख पाता है। विदेशगामी तथा ग्राम, मण्डल, जिला अथवा सभा इत्यादि का अधि-पति होता है। (१४) नीच नवांशस्थ शनि की महादशा में किसी नीच वृत्त द्वारा जीवन-निर्वाह करता है, परतन्त्र रहता है और स्त्री, पुत्र तथा धन का नाश अथवा उसके द्वारा दुःख होता है। (१५) उच्चग्रह के साथ शनि हो तो थोड़ी-सी जमीदारी एवं खेती और सुख की प्राप्ति होती है। (१६) नीच ग्रह के साथ यदि शनि हो तो उसकी महादशा में किसी छोटी वृत्ति से जीवन व्यतीत करता है। उसे प्रवास-भय और विद्वानों से विरोध होता है। (१७) पापग्रह के साथ शनि हो तो नीच स्त्री के साथ प्रसंग, छिपकर पापकर्म, चोर आदि नीच मनुष्यों के साथ झगड़ा और कलह करने वाला होता है। (१८) सूर्य के साथ यदि शनि हो तो उसकी दशा में स्वजनों से मतभेद, परस्त्री-गमन, नौकर या सन्तान से असन्तोष तथा पाप-क्रिया करने में तत्परता होती है। (१९) शुभ ग्रह के साथ यदि शनि हो तो बुद्धि का उदय, राजपक्ष से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग्योन्नति, परोपकार, धन का लाभ, खेती में उन्नति और काले अन्न-धन की प्राप्ति होती है। (२०) **पापग्रह की दृष्टि** शनि पर पड़ती हो तो उसकी दशा में धन, स्त्री, सन्तान, नौकर की हानि, बुरे प्रकार का भोजन तथा लांछना होती है। (२१) **शुभ ग्रह की दृष्टि** यदि शनि पर पड़ती हो तो धन, स्त्री, पुत्र, नौकरी की प्राप्त होती है; परन्तु दशा के अन्त में वाणिज्य, कृषि, पृथ्वी तथा चतुष्पदों की हानि होती है। (२२) **नीच का शनि उच्च नवांश में** हो तो उसकी महादशा के आदि में शत्रु, चोर और विदेशाटन से दुःख तथा अन्त में आनन्द प्राप्त होता है। (२३) **उच्च का शनि यदि नीच नवांश में** हो तो उसकी महादशा के आरम्भ में सुख और आनन्द प्राप्त होता है; परन्तु अन्त में दुःख और नाना प्रकार के सन्ताप होते हैं। (२४) **स्थान-बली** शनि की महादशा में स्त्री, सन्तान, धन और कीर्ति से सुख होता है; परन्तु अग्नि, चोर, राज-कोप तथा बन्धुजन का नाश एवं नेत्र, बाहु अथवा गुदा में रोग होता है। (२५) **दिग्बली** शनि की महादशा में कीर्ति-सुख अर्थात् ख्याति होती है। भूमि की हानि और नौकर, स्त्री पुत्र तथा भाई आदि से विरोध होता है। (२६) **कालबली** शनि की महादशा में विष और औषधि से भय तथा धन-धान्य एवं कृषि की वृद्धि होती है। (२७) **पाप षष्ठांशगत** शनि की महादशा में राज-दंड और कारागार-निवास का भय होता है तथा पच्दयुति होती है। (२८) **शुभ षष्ठांशगत** शनि की महादशा में बहुत सुख-सम्पत्ति और स्त्री-पुत्रादि का लाभ तथा बन्धुजन से प्रतिष्ठा होती है। (२९) **वैशेषांशगत** शनि की महादशा में सुख-सम्मान और वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है। (३०) **क्रूर द्रेष्काणस्थ** शनि की महादशा में बड़ा भय अर्थात् उद्वेग, चोर, अग्नि और विष का भय होता है। (३१) **वक्री** शनि की महादशा में समस्त कार्यों और उद्योगों की हानि तथा दुःख एवं भाइयों का विनाश होता है।

भिन्न-भिन्न भावगत शनि-दशा का फल

केन्द्रगत शनि की दशा में कलह और पीड़ा तथा पुत्र, मित्र, स्त्री, धन एवं बन्धुवर्ग का नाश होता है। (१) **लग्नगत** शनि की दशा में शरीर से दुर्बलता, जननेन्द्रिय-जनित रोग, प्रवास, स्थान-च्युति, राज-भय, माता और मातृपक्ष के लोगों की मृत्यु तथा शिर की बीमारी होती है। (२) **द्वितीयस्थ** शनि की दशा में धन का नाश, राज-भय, कर्मचारियों से मतभेद, मन में अशान्ति और गुदा तथा नेत्र के रोग होते हैं। (३) **तृतीयस्थ** शनि की महादशा में धन और चतुष्पद की प्राप्ति, मन में उत्साह और सुख होता है। **चतुर्थस्थ** शनि की महादशा में भ्रातृवर्ग का नाश, घर जलने का भय, पद-च्युति और राज्य तथा चोर से भय होता है एवं जातक भ्रमणशील होता है। (५) **पञ्चमस्थ** शनि की महादशा में सन्तान का नाश, चित्त में अशान्ति, राज्य से भय, भाइयों का विनाश, कुटुम्ब तथा स्त्री से मतभेद होता है। **षष्ठ-स्थानगत** शनि की महादशा में शत्रु, रोग, विष और चोर से भय तथा गृह एवं क्षेत्र का नाश होता है। (७) **सप्त-**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्थ शनि की महादशा में अति पीड़ा अर्थात् नाना प्रकार के रोग (मूत्रकृच्छ्र आदि) और स्त्री के कारण मृत्यु का भी भय होता है। (८) अष्टमस्थ शनि की महादशा में पुत्र, अर्थ, स्त्री, गौ, महिषी और नौकर आदि की हानि होती है। (९) नवमस्थ शनि की महादशा में गुरु और पिता की मृत्यु होती है। परदेश-यात्रा करनी पड़ती है और कुल के लोगों का नाश होता है। (१०) दशमस्थ शनि की महादशा में धार्मिक कार्यों की कमी, पद-च्युति, देशाटन, राज-कोप और कारागार-वास होता है। (११) एकादशस्थ शनि की महादशा में नाना प्रकार के सुख और सम्मान की प्राप्ति, स्त्री, सन्तान और नौकरों से सुख, कृषि से धन की प्राप्ति एवं आनन्द होता है। (१२) द्वादशस्थ शनि की महादशा में अग्नि, चोर और राजा से भय, अनेक प्रकार का दुःख, विदेश-वास तथा बन्धुओं का नाश होता है।

भिन्न भिन्न राशिगत शनि-दशा का फल

(१) मेष राशिगत शनि की दशा में अनेक दुःखों से पीड़ा, रुधिर-प्रकोप अर्थात् तज्जनित चर्मरोग आदि और ऊँचे से गिरने पर व्यथा होती है। (२) वृष राशिगत शनि की दशा में बुद्धि का उदय, राजद्वार से सम्मान और संग्राम में यश होता है। (३) मिथुन राशिगत शनि की दशा में जातक परोपकारी, हास्य-विलासवाला और चोरी, स्त्रीजन, कलह तथा मुकद्मेबाजी से धन का लाभ करनेवाला होता है। (४) कर्क राशिगत शनि की दशा में, स्त्री-पुत्र और मित्रादि से मन चञ्चल, कान और नेत्र में व्यथा तथा शरीर से निर्बल होता है। (५) सिंह राशिगत शनि की महादशा में जातक को अनेक बाधायें होती हैं। स्त्री पुत्रादि से कलह और दास-दासी तथा चतुष्पदों को कष्ट होता है। (६) कन्या राशिगत होने से जल, वृक्ष, उन्नत परदेश और अपने कर्म द्वारा धन तथा आनन्द प्राप्त होता है। (७) तुला-राशिगत शनि की दशा में उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति, हाथी, घोड़ा, स्वर्ण और वस्त्रादि का लाभ एवं चित्त में दया का उदय होता है। (८) वृश्चिक राशिगत शनि की महादशा में जातक साहस के कर्म करनेवाला, बेकार भ्रमण करनेवाला, कृपण स्वभाववाला, झूठ बोलनेवाला, नीच सङ्गतिवाला और निर्दयी होता है। (९) धनु राशिगत शनि की महादशा में राजा का मन्त्री, संग्राम में धैर्य-युक्त, चतुष्पदों का रखनेवाला और स्त्री पुत्र आदि से सुखी होता है। (१०) मकर राशिगत शनि की महादशा में धन की प्राप्ति बहुत परिश्रम से होती है। विश्वासघात से धन का क्षय होता है। जातक स्त्रीनपुंसकादि जनों की सेवा करता है। (११) कुम्भ राशिगत शनि की महादशा में अनेक सुख और प्रतिष्ठा होती है। कुल में प्रधानता, कृषि से लाभ तथा सन्तान-सुख होता है। (१२) मीन राशिगत शनि की महादशा में जातक अनेक नगर और पुर का स्वामी तथा स्त्री एवं धन से सुखी, परन्तु उत्साहहीन होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि की महादशा के प्रथम खण्ड में भाइयों की मृत्यु और दुःख होता है। मध्य-खण्ड में विदेश-यात्रा और अन्तिम खण्ड में पर-गृह-वास तथा परान्न-भोजन का सौभाग्य(दुर्भाग्य ?)प्राप्त होता है।

बुध की महादशा का फल

बुध की महादशा में बड़े मनुष्य, मित्र और कुटुम्ब द्वारा धन की प्राप्ति होती है। सुख तथा कीर्ति मिलती है। दूत का काम करने का सौभाग्य होता है। स्वर्ण आदि के क्रय-विक्रय से धन की प्राप्ति होती है। जातक अनेक उद्यमों से धनवान, जनता का स्वामी और यज्ञादि करनेवाला होता है। कृषि-कर्म में उसकी अभिरुचि होती है। वह कारीगरी में कुशल, विद्या और संगीत का प्रेमी तथा स्थान-विशेष का निर्माण करनेवाला होता है। हास्य, क्रीड़ा और सुख से जीवन व्यतीत करनेवाला, विनयी तथा पुत्रादि से सुख प्राप्त करनेवाला होता है; परन्तु जातक को वात-रोग का भय होता है।

यदि बुध अस्त, नीच का अथवा ६, ८ या १२वें गृह में बैठा हो तो जातक को वात-पित्त-कफ-जन्य रोग से पीड़ा होती है और सञ्चित धन का नाश होता है। साधारण रूप से बुध अपनी महादशा में ऐसा फल देता है; परन्तु बुध के अन्यान्य भेदानुसार फल में परिवर्तन होता है, जिसका उल्लेख आगे किया जाता है।

विशेष फल

(१) परम उच्च बुध की महादशा में धन की प्राप्ति, सुख और ख्याति होती है। मनुष्यों का स्वामित्व, ज्ञान और कीर्ति का उत्कर्ष तथा पुत्र, भूमि, धन एवं भोग की वृद्धि होती है। (२) उच्च के बुध की महादशा में जातक महत्त्वपूर्ण रूप से अभिवृद्ध, धन से सुखी, शरीर से पुष्ट, घोड़े, हाथी, सन्तान और धन-धान्य से पूर्ण होता है। (३) उच्चाभिलाषी बुध की महादशा में यज्ञोत्सव, बैल और गाय का सुख, वाणिज्य में उन्नति, परोपकार, धन तथा भूमि आदि की प्राप्ति एवं वाहन, वस्त्र और भोजनादि का सुख होता है। (४) नीचाभिलाषी बुध की महादशा में बहुत कष्ट और दुःख होता है तथा वह परस्त्रीगामी एवं ज्ञान-विज्ञानहीन होता है। उसे चोर, अग्नि और राज-भय होता है। (५) नीच राशिगत बुध की महादशा में स्वजनों से विरोध, पदच्युति, कुटुम्बियों की हानि, परदेश-यात्रा और वनवास का दुःख होता है। (६) मूलत्रिकोणस्थ बुध की महादशा में धन, सुख और कीर्ति की प्राप्ति होती है। धार्मिक पुस्तक तथा पुराणादि की ओर रुचि एवं सत्य की खोज में जातक निमग्न रहता है। (७) स्वगृही बुध की महादशा में धन-धान्य, वाणिज्य, गौ, भूमि, स्त्री, सन्तान, सुन्दर भोजन, भूषण और वस्त्रादि की प्राप्ति होती है। (८) अति मित्र-गृही बुध की दशा में राजा से प्रेम, स्त्री, पुत्र और धन से सुख तथा बन्धुजन से सम्मान और आनन्द

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की प्राप्ति होती है । (९) मित्रगृही बुध की महादशा में धन और सुख की प्राप्ति होती है। जातक के नाम से पुस्तकों का प्रकाशन होता है और जातक के नाम की ख्याति होती है। (१०) अति-शत्रुगृही बुध की महादशा में शत्रु और राज-भय, कुलहीन की सेवा से भोजन की प्राप्ति तथा स्त्री-पुत्रादि का नाश एवं जातक विद्या-विहीन होता है। (११) शत्रुगृही बुध की महादशा में विपद और दुःख का आगमन, शुभकर्मों का नाश, उत्सवादि में विघ्न, स्वजनों से विरोध और उद्योग में कमी होती है। (१२) समक्षेत्री बुध की महादशा में अन्न, वसन और सन्तान का सुख होता है। भोजनादि में त्रुटि, उपवास, पद-च्युति, चित्त में अशान्ति तथा चर्मादि रोग से जातक व्यथित होता है। (१३) उच्च गृही बुध की महादशा में नाना प्रकार के सुख, वाणिज्य, कृषि, गौ विद्या और भाग्योदय की प्राप्ति होती है। (१४) शुभ ग्रह-युत बुध की दशा में कीर्ति द्वारा अति सुख, पुत्रादि का सुख और राज्य की प्राप्ति होती है। (१५) पाप ग्रह-युत बुध की दशा में पापकर्म की वृद्धि, धन, पृथ्वी, कृषि, गौ, दारा और पुत्रादि का नाश होता है। (१६) नीच ग्रह-युत बुध की महादशा में नाना प्रकार के कष्ट, पदच्युति, बन्धु और कार्यों का नाश तथा मन में व्यथा होती है। (१७) सूर्य के साथ बुध हो तो उसकी महादशा में नाना प्रकार की आपत्ति, मानसिक दुःख, अपने परिवार के लोगों से वैमनस्य, निन्दा की बौछार तथा नेत्र-रोग होता है। (१८) उच्च नवांश-गत यदि बुध हो तो सन्तान और भूषणादि की प्राप्ति, मन में विलास तथा उत्साह एवं धैर्य, स्त्री-प्रसंग और तीर्थादि में स्नान करने का सौभाग्य होता है। (१९) नीच नवांश-गत यदि बुध हो तो नीच वृत्ति से जीविका और पराधीनता होती है। (२०) वक्री बुध की महादशा में स्त्री सन्तान और धन की प्राप्ति, पुराणादि-श्रवण तथा समुद्र में स्नान होता है। (२१) शुभ दृष्ट यदि बुध हो तो कीर्ति, विद्या की प्राप्ति से राजद्वार में सम्मान, यश और प्रताप की वृद्धि होती है। (२२) पाप-दृष्ट यदि बुध हो तो अन्न की हानि, बन्धुजन से वियोग, अपने पद से च्युति, विदेश-यात्रा, छोटी नौकरी और उसमें भी कलह होता है। (२३) स्थान-बल-युत बुध की महादशा में कीर्ति की वृद्धि, राज्याधिकार, धैर्य, उत्साह और यज्ञादि शुभ कार्यों का सौभाग्य प्राप्त होता है। (२४) स्थान-बल-रहित बुध की महादशा में स्त्री और पुत्र आदि को भय, स्थान-च्युति, विदेश-वास, दुःख तथा अनेक प्रकार के नीच कर्मों के करने का अवसर होता है। (२५) दिग्बली बुध की महादशा में सर्व दिशाओं से धर्म की प्राप्ति, आनन्द, अन्य देशस्थ राजाओं से प्रेम और सुगन्धादि पदार्थों की प्राप्ति होती है। (२६) कालबली बुध की महादशा में स्वास्थ्य की वृद्धि, शान्तिमय जीवन, राजा, स्त्री और पुत्रादि से सम्मान का सौभाग्य होता है। (२७) नैसर्गिक बली बुध की महादशा में बिना परिश्रम शुभ कार्यों की प्राप्ति, विद्या-विवाद, स्वजनों से विरोध और माता अथवा मातृपक्ष के लोगों की मृत्यु होती है। (२८) दृग्बली बुध की महादशा में जीवमात्र में प्रेम, रति-विलास और राज्याधिकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की प्राप्ति होती है। (२९) पापषष्ठांश बुध की महादशा में चोर, अग्नि और राजा से भय होता है; यदि शुभ ग्रह की दृष्टि बुध पर न हो। (३०) मृद्वंशादियुत बुध होने से राज्य की प्राप्ति होती है। (३१) वैशेषांशगत बुध की महादशा में राजद्वार से महा-सम्मान, विद्वानों की सभा में सुख और मान-मर्यादा प्राप्त होती है। (३२) पाप द्रेष्काणगत यदि बुध हो तो उसकी महादशा में चोर, अग्नि और पदाधिकारियों से भय, स्थानच्युति तथा क्लेश होता है। (३३) उच्च नवमांशगत नीचस्थ बुध की महादशा के आदि में अशुभ, परन्तु अन्त में शुभ फल होता है: (३४) नीच नवमांशगत उच्चस्थ बुध की महादशा में सुख, कीर्ति और धन की प्राप्ति होती है; परन्तु इन सबका विनाश भी शीघ्र ही हो जाता है।

भिन्न-भिन्न भावगत बुध-दशा का फल

केन्द्रगत बुध की महादशा में राजाओं से मित्रता, धन-धान्य, कलत्र और पुत्रादि का सुख, यज्ञादि कर्म से यश, उत्तम भोजन तथा वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है। (१) लग्नगत बुध की महादशा में अधिकार, कृषि, यश, राज-चिह्नों (अर्थात् ढोल और बाजा इत्यादि) से शोभा, उत्तम वाहन, संसार में प्रसिद्धि और तीर्थों में स्नान का सौभाग्य होता है। (२) द्वितीयगत बुध की महादशा में विद्या की प्राप्ति, कीर्ति की वृद्धि, राजा के तुल्य भाग्य और राजद्वार में प्रधानता प्राप्त होती है। (३) तृतीयस्थ बुध की महादशा में आलस्य, प्लीहा रोग, वमन, मंदाग्नि और भाइयों की हानि, परन्तु राजा से सम्मान होता है। (४) चतुर्थ बुध की महादशा में मकान, सन्तति-सुख, रोजगार और नौकरी में हानि, मातृपक्ष के जनों की मृत्यु और स्थान-परिवर्तन होता है। (५) पञ्चमस्थ बुध की महादशा में बौद्धिक क्रूरता, नीच प्रकार की वृत्ति एवं धन-सम्पत्ति की प्राप्ति में कठिनाई होती है। (६) ६, ८ या १२ वें स्थान में यदि बुध बैठा हो तो उसकी महादशा में वात-पित्त श्लेष्मा-जनित नाना प्रकार के रोगों से पीड़ा, खुजली और पाण्डु-रोग तथा राज्य, अग्नि एवं चोर से भय होता है और शरीर दुबला पड़ जाता है। (७) सप्तमस्थ बुध की महादशा में विद्या, स्त्री, पुत्र और उत्तम वस्त्रादि का सुख, राज्याधिकारियों से प्रेम तथा द्वितीय नाम (अर्थात् उपनाम) की प्राप्ति होती है। (९) नवमस्थ बुध होने से उसकी महादशा में स्त्री, पुत्र, और धन की प्राप्ति तथा जप, होम, दान, यज्ञादि क्रिया एवं तीर्थादि में स्नान का सौभाग्य होता है। (१०) दशमस्थ बुध की महादशा में सुख, राज-दरबार में अधिकार, जातक के नाम से गद्य या पद्य में किसी पुस्तक का प्रकाशन, राज्य-प्राप्ति, उपनाम (तखल्लुस) एवं दारा और पुत्रादि से सुख होता है। जातक जनता पर अधिकार, स्वजनों और ब्राह्मणादि का आदर करनेवाला होता है। (११) एकादशस्थ बुध के होने से शुभ क्रिया द्वारा, किसी के दे देने से और कृषि तथा वाणिज्य द्वारा धन की प्राप्ति होती है। (१२) द्वादशस्थ बुध की महादशा में राज-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भय, शरीर के किसी अङ्ग का भङ्ग, स्त्री और कुटुम्बियों से मतभेद, प्रमाद तथा आकस्मिक घटना से मृत्यु का भय भी रहता है।

भिन्न भिन्न राशिगत बुध का फल

(१) **मेष राशिगत** बुध की महादशा में जातक एक स्थान पर निवास नहीं करता है। चोर, मिथ्यावादी, शठ, असज्जन और दरिद्र होता है। (२) **वृष राशिगत** बुध की महादशा में धन का व्यय अधिक होता है। माता को कष्ट, स्त्री पुत्र और मित्रादि की चिन्ता, वित्त की व्यग्रता तथा गले में रोग होता है। (३) **मिथुन राशिगत** बुध की दशा में अनेक प्रकार की बातों में बक-बक करनेवाला, स्त्री, पुत्र और जातिवालों से सुखी तथा मातृ-सुख विहीन होता है। (४) **कर्क राशिगत** बुध की दशा में विदेश-वासी, अल्प-सुखी, मित्र-विरोधी, काम-कला से धन प्राप्त करनेवाला और अनेक प्रकार का व्यवसायी होता है। (५) **सिंह राशिगत** बुध की दशा में स्थिर विभव, धैर्ययुक्त, बुद्धि-विहीन, मित्र, स्त्री और पुत्र के सुख से हीन होता है। (६) **कन्या राशिस्थ** बुध की महादशा में धन्य धान्य-युत और बड़ा विभववाला होता है। लिखने और काव्य-रचना में अनुरक्त, शत्रु-विजयी तथा नीतिमान् होता है। यदि बुध मूलत्रिकोण का हो तो जातक विवेकी, गुणी और बुद्धिमान् होता है। कीर्ति में विख्यात, परदेश-यात्रा करनेवाला और अपने बाहु-बल से धनोपार्जन करनेवाला होता है। यदि बुध मूलत्रिकोण का न हो अर्थात् २० अंश से आगे बढ़ गया हो (केवल स्वगृही हो) तो उसकी दशा में पशु सुख की हानि, बन्धु-जन से वैर, झगड़े-झंझट से हानि और शरीर विकलता होती है। (७) **तुला राशिगत** बुध की महादशा में व्याख्या करने की बुद्धि, कारीगरी, कार्य में निपुणता, व्यापार से धनलाभ, पशुओं को पीड़ा और दृष्टि-ज्योति कम होती है। (८ **वृश्चिक राशि** में यदि बुध हो तो उसकी महादशा में अल्प-सुखी, धन का अधिक व्यय करनेवाला, सज्जनों से वियुक्त और धर्म-कर्म तथा आचार आदि में अनुरागवाला होता है। (९) **धनु राशिगत** यदि बुध हो तो उसकी महादशा में बहुजनों का मालिक और जनता से मित्रता करनेवाला होता है तथा उसके प्रायः दो नाम होते हैं। (१०) **मकर राशिगत** बुध की महादशा में बहुत भोजन करनेवाला, कपटी, नीच मित्रवाला, बुद्धिहीन और ऋणी होता है। (११) **कुम्भ राशिस्थ** बुध की महादशा में जातक धनहीन और तेजहीन होता है। मित्रादि से कष्ट पाता है तथा अनेक व्यसनों से युक्त होकर विदेश-वास करता है। (१२) **मीन राशिस्थ** बुध की महादशा में जातक विवेक और सत्य से रहित, स्थानान्तर-निवासी, शरीर से दुर्बल, व्यवसाय-युक्त, परन्तु अल्प लाभ उठानेवाला होता है।

बुध की महादशा के प्रथम खण्ड में धन और अन्न का लाभ, मध्य खण्ड में राज-सम्मान तथा राजा से धन की प्राप्ति एवं अन्तिम खण्ड में स्वजनों से मतभेद होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केतु की महादशा का फल

केतु की महादशा में सुख की बहुत ही कमी होती है। जातक दीन, निर्बुद्धि, विवेक-हीन और रोगग्रस्त होता है। दुःखमय जीवन व्यतीत करता है। शारीरिक कष्ट की वृद्धि, स्त्री-पुत्र का विनाश, राज पीड़ा, विद्या तथा धन सम्बन्धी आपत्ति, राजा चोर, विष, जल, अग्नि, शस्त्र और मित्रों से भय, वाहनादि से पतन, परदेश-वास, कलि-जनित पापों में अभिरुचि, कृषि का नाश और मन में सन्ताप होता है। उसकी स्त्री और सन्तान की मृत्यु हो जाती है।

विशेष फल

(१) शुभदृष्ट केतु की महादशा में सुख, राजा से अर्थ की प्राप्ति, गृह में शान्ति का आविर्भाव, चित्त में दृढ़ता एवं राजा से अनुगृहीत होता है। (२) पापदृष्ट केतु की महादशा में पिता की मृत्यु, दुःख का भाजन और अतिसार, ज्वर, जननेन्द्रिय के रोग एवं चर्मरोगों से पीड़ित होता है।

भिन्न-भिन्न भावगत केतु का फल

केन्द्रवर्ती केतु की महादशा में निष्फलता, धन, सन्तान, स्त्री और राज्य का नाश तथा विपत्ति होती है। (१) लग्नस्थ केतु की महादशा में नाना प्रकार के भय और ज्वर, अतिसार, प्रमेह, जननेन्द्रिय रोग होते हैं। जातक चेचक आदि चर्म-रोगों से पीड़ित होता है। (२) द्वितीयस्थ केतु की महादशा में धन का क्षय, वचन में कठोरता, मन में दुःख, कुत्सित अन्न की प्राप्ति एवं शिरोव्यथा होती है। (३) तृतीयस्थ केतु की महादशा में बहुत सुख, परन्तु भ्राताओं से मतभेद और मन में विकलता होती है। (४) चतुर्थस्थ केतु की महादशा में सुख की हानि, स्त्री-पुत्रादि को भय, परन्तु अन्न, पृथ्वी एवं गृह आदि को प्राप्ति होती है। (५) पञ्चमस्थ केतु की महादशा में सन्तान की हानि, चित्त में भ्रांति एवं राज द्वारा धन की हानि होती है। (६) षष्ठस्थ केतु की महादशा में जातक को चोर और अग्नि से नाना प्रकार का भय होता है तथा वह ऋणग्रस्त होता है। (७) सप्तमस्थ केतु की महादशा में भय, स्त्री-पुत्र का नाश और मूत्र कृच्छ्र रोग से पीड़ा होती है। (८) अष्टमस्थ केतु की दशा में पिता की मृत्यु और श्वास, कास, संग्रहणी तथा क्षय इत्यादि रोग से पीड़ा होती है। (९) नवमस्थ केतु की दशा में पिता और गुरु को विपत्ति, दुःख तथा शुभ-कर्मों का नाश होता है। (१०) दशमस्थ केतु की महादशा में मान-हानि, चित्त की विकलता एवं अपकीति से पीड़ा होती है। (११) एकादशस्थ केतु की महादशा में सुख भ्रातृवर्ग को आनन्द और यज्ञ-दानादि में प्रवृत्ति होती है। (१२) द्वादशस्थ केतु की महादशा में स्थान से च्युत, प्रवासी, शासन से पीड़ित और कष्टभोगी होता है तथा उसके नेत्र-नाश का भय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केतु की महादशा के प्रथम खण्ड में सुख की प्राप्ति, मध्य खण्ड में भय और अन्तिम खण्ड में मृत्यु-भय और चिन्ता होती है।

शुभ फल देने में केतु से राहु अच्छा होता है; परन्तु केतु मुक्ति देने में प्रबलता रखता है। स्मरण रहे कि राहु और केतु तीन प्रकार से गुण और अवगुण का संग्रह करते हैं अर्थात् जिस भाव की राशि में रहते हैं उसके स्वामी के सदृश और जिस ग्रह के साथ रहते हैं उसके सदृश भी फल देते हैं। केतु के साथ यदि कोई शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा सुख देनेवाली होती है और यदि केतु पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो केतु की दशा में बहुत धन की प्राप्ति होती है; परन्तु यदि केतु के साथ पापग्रह बैठा हो तो उसकी दशा में दुष्टजनों से क्लेश एवं अपने ही कार्यों से धन का नाश भी होता है। मतान्तर से केतु की महादशा के आरम्भ में कुटुम्ब और गुरुजन को रोग, मध्य में धनागम और अन्त में सुख होता है।

शुक्र की महादशा का फल

शुक्र की महादशा में जातक को स्त्री, सन्तान, धन, समृद्धि और भूषणवस्त्रादि से सुख, राजद्वार से सम्मान तथा काम-चेष्टा प्रबल होती है। विद्या-लाभ गायन और नृत्यादि में मन लगानेवाला, शुभ स्वभावका, दानादि में अभिरुचि रखनेवाला एवं क्रय-विक्रय में चतुर होता है। शुक्र की दशा में वाहन, पुत्र, पौत्र और पूर्व सञ्चित धन आदि से सुख होता है; परन्तु निर्बल शुक्र की दशा में घरेलू झगड़े, वात-कफ-प्रकोप-जनित रोगों से निर्बलता, चित्त में सन्ताप, नीचजन से कभी वैर, कभी विरोध और मित्रादि की चिन्ता होती है। शुक्र की दशा का साधारण फल ऐसा ही है। शुक्र की अन्यान्य स्थितियों के अनुसार फल का विवरण नीचे लिखा जाता है।

विशेष फल

(१) परम उच्च शुक्र की दशा में स्त्री, पुत्र और धन का सुख, उत्तम वस्त्र तथा भोजनादि की प्राप्ति होती है। जातक भोग-विलासी होता है। (२) उच्चस्थ शुक्र की महादशा में स्त्री-सङ्ग से धन का नाश, धर्म-विरुद्ध कामों में रुचि, पिता को भय, दुःख का आगमन और शिरोव्यथा होती है; परन्तु राज-सम्मान पाता है। (३) आरोही शुक्र की दशा में वस्त्रालंकार अन्न और सम्मान की प्राप्ति तथा माता का नाश होता है। वह पर-स्त्रीगामी होता है। (४) अवरोही शुक्र की दशा में प्रचण्ड वेश्यागामी, स्त्री-पुत्र और सम्बन्धियों से मतभेद, हृदय-शूल तथा स्त्री-प्रसंग-जनित रोग होता है। (५) परम नीचस्थ शुक्र की दशा में रोग-पीड़ा से सन्तप्त, कार्य में निष्फल, चित्त में भीरु और दारा-पुत्रादि से आर्त्तचित्त होता है। (६) मूलत्रिकोणगत शुक्र की दशा में किसी बड़े पद की प्राप्ति, क्रय, विक्रय द्वारा उन्नति, किसी स्त्री द्वारा धन की प्राप्ति, कीर्ति का प्रसार एवं विज्ञान की जानकारी होती है। (७) स्वगृही शुक्र की महादशा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में परोपकारी और स्त्री, पुत्र, धन, मित्र एवं ऐश्वर्य से सुखी, गौरवशाली तथा सर्वदा सुख भोगनेवाला होता है। ८) मित्र-राशि-गत शुक्र की दशा में कलाओं का जाननेवाला परोपकारी और कुआँ तालाब, बगीचा इत्यादि का निर्माण करनेवाला, दुष्ट जनों को दण्ड देनेवाला, गुणी एवं आदर्श व्यक्ति होता है। (९) अति मित्रगृही शुक्र की दशा में राजा से सुखी और सम्मानित, राजसी आडम्बरयुक्त तथा घोड़ा, हाथी, गौ इत्यादि से सुखी होता है। उसके यहाँ भृत्यादि का समूह रहता है। (१०) समगृही शुक्र की महादशा में प्रमेह, गुल्म और नेत्र तथा गुदा-मार्ग के रोग से पीड़ा, चोर, अग्नि और राज-भय एवं थोड़ा सुख होता है; परन्तु अपने नाम से कोई पुस्तकादि प्रकाशित करता है। (११) शत्रुगृही शुक्र की महादशा में स्त्री पुत्र की मृत्यु, धन की हानि और राज-भय होता है। वह पापकर्म में निरत रहता है और उसी में सुख अनुभव करता है। (१२) अति शत्रु-गृही शुक्र की महादशा में घर के झगड़े से मन में खिन्नता, पुत्र, स्त्री और धन इत्यादि की हानि तथा प्लीहा, संग्रहणी एवं नेत्र रोग से पीड़ा होती है। (१३) उच्चस्थ ग्रह के साथ शुक्र रहने की उसकी महादशा में राज्य की उन्नति, युद्ध-विभाग का नायकत्व, वस्त्राभूषण और सुगन्धित द्रव्य, मनुष्य से ढोये जानेवाले वाहन तथा बाजा इत्यादि राजसी आडम्बर से भूषित होता है। (१४) नीचस्थ ग्रहयुक्त शुक्र की महादशा में पाप-कर्म निरत, अपवाद से कलंकित और दुःखी होता है। (१५) शुभग्रहयुक्त शुक्र की महादशा में धन, पुत्र और मित्रादि से युक्त राज-पूजित, बहुत-से हाथी-घोड़ों से सुसज्जित तथा वाहन एवं रत्नादि से विभूषित होता है। (१६) पापग्रह-युक्त शुक्र की महादशा में स्थान से च्युत, बन्धुजनों का विरोधी, आचार-विचार-हीन, कलह-प्रिय और कृषि, भूमि तथा स्त्री एवं सन्तानादि से रहित होता है। वह स्वधर्म विरुद्ध कार्य करता है। (१७) सूर्य के साथ शुक्र रहने से उसकी महादशा में नाना प्रकार की आपत्ति होती है। रोग के उद्वेग से तप्त रहता है। जीर्ण एवं टूटे-फूटे मकानों में वास और स्त्री एवं भाइयों की मृत्यु होती है। (१८) बृहस्पति के नवांश में शुक्र हो तो उसकी महादशा में स्त्री पुत्र एवं भूमि का नाश, माता से वियोग और कार्यों में विघ्न होता है। वह धार्मिक बातों का उल्लंघन करनेवाला तथा संतप्त-चित्त होता है। (१९) शुभदृष्ट शुक्र की महादशा में धन एवं वस्त्रादि का लाभ करनेवाला, राज-सम्मानित, मनुष्यों पर अधिकार रखनेवाला और कलत्र, पुत्र, मित्रादि से सुखी एवं कान्तिमान होता है। (२०) पापदृष्ट शुक्र की महादशा में जातक को सर्वदा दुःख, मान एवं अर्थ की हानि, पद-च्युति, विदेश-वास, कर्महीनता और स्त्रियों से झगड़ा होता है। (२१) स्थानबली शुक्र की महादशा में राज-सम्मान, भूषणादि की प्राप्ति, सभाओं में विद्या-विवाद की रुचि और पदवी इत्यादि की प्राप्ति होती है। (२२) कालबली शुक्र की महादशा से नाना प्रकार के यश, धन, वस्त्र, सन्तान, पदवी आदि की प्राप्ति तथा अपने नाम की कीर्ति होती है। (२३) दिग्बली शुक्र की महादशा में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आनन्द और स्त्री, पुत्र, वस्त्र तथा धनादि से सुख एवं नाम की ख्याति होती है। (२४) निसर्गबली शुक्र के होने से बहुत आनन्द-लाभ और गौ, धन, भूमि, भाई, माता आदि सब की वृद्धि होती है। (२५) दृग्बली शुक्र की महादशा में यज्ञादि शुभकर्म करने का सौभाग्य, विद्या एवं वस्त्रादि से सुख और राजगद्दी होती है; परन्तु कलह एवं विरोध भी होता है। (२६) क्रूर षष्ठांश के शुक्र की महादशा में विपत्ति और चोर, अग्नि एवं राज-भय तथा खेती, भूमि एवं पशु आदि का नाश होता है। (२७) शुभ षष्ठांशगत शुक्र के होने से जातक कुआँ, तालाब और बगीचा इत्यादि का निर्माण करता है। उसे ईश्वर-पूजा में रुचि और बहुत सुख होता है। (२८) वैशेषिकांश का शुक्र होने से भाई बहन एवं स्त्री द्वारा धन की प्राप्ति, राज-सम्मान, वाहनादि की प्राप्ति और बहुत आनन्द होता है। (२९) पाप द्रेष्काणगत शुक्र की महादशा में बहुत दुःख, चोर से भय और बन्धन एवं कारागार-निवास का दुःख होता है। (३०) वक्री शुक्र की महादशा में अनेक प्रकार से राज-सम्मान, राजसी आडम्बर अर्थात् मृदंग, भेरी आदि बाजों से सुसज्जित) और नाना प्रकार के वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है। (३१) उच्च नवमांशगत नीच के शुक्र की महादशा में कृषि, भूमि, गौ और वाणिज्य से धन-धान्य की वृद्धि होती है। (३२) नीच नवमांश गत उच्च के शुक्र की महादशा में राज्याधिकार गृह और पद आदि का नाश तथा बड़ा कष्ट होता है।

भिन्न-भिन्न भावगत शुक्र का फल

केन्द्रगत शुक्र की महादशा में उत्तम प्रकार के वस्त्र, सुगन्धित द्रव्य, नवरत्न और भूषणादि की प्राप्ति होती है। सुन्दर, उपकारी धनी, कृषि से लाभान्वित और पालकी आदि सवारी से युक्त होता है। (१) लग्नस्थ शुक्र की महादशा में राजनेताओं से लाभ उठानेवाला और कृषि से मनुष्यों का उपकार करनेवाला तथा उत्साही होता है। (२) द्वितीयस्थ शुक्र की महादशा में जातक धनी, उत्तम भोजन करनेवाला, उत्तम वचन बोलनेवाला, परोपकारी, राज-सम्मान प्राप्त करनेवाला और अन्नादि सुख से सुसम्पन्न होता है। (३) तृतीयस्थ शुक्र की महादशा में उत्साही, साहसी और उत्तम वाहन, भूषणादि एवं भाइयों से बहुत लाभ उठानेवाला होता है। (४) चतुर्थस्थ शुक्र की महादशा में राज्य की प्राप्ति, महा सुख का लाभ, वाहनादि का सुख, कृषि में उन्नति, चतुष्पद आदि में वृद्धि और अपने कार्यों द्वारा प्रताप तथा कीर्ति का अभ्युदय होता है। (५) पञ्चमस्थ शुक्र की महादशा में जातक सन्तानवान्, कीर्ति से ख्यातिमान् राज-सम्मानित और उपकारी होता है। (६) षष्ठस्थ शुक्र की दशा में अन्नादि का नाश और धन, पुत्र, कुटुम्ब एवं भाई की हानि, शत्रु से भय, कार्य विनाश, रोग का आक्रमण और अग्नि तथा चोर इत्यादि से भय होता है। (७) सप्तमस्थ शुक्र की महादशा में स्त्री का नाश, परदेश-गमन, प्रमेह और गुल्म आदि शारीरिक रोगों से पीड़ा तथा जन, सन्तान एवं बन्धुजन की हानि होती है। (८) अष्टमस्थ शुक्र की महादशा में शस्त्र,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्नि और चोर से आघात, कभी-कभी सुख, किञ्चित् धन की वृद्धि और कुछ राजकीय यश की वृद्धि होती है। (९) नवमस्थ शुक्र की महादशा में राज-सम्मान, पिता आदि गुरुजनों के सुख और यश की वृद्धि तथा यज्ञादि कर्मों में रुचि होती है। (१०) दशमस्थ शुक्र की महादशा में यज्ञादि कर्म करने का सौभाग्य, राजकीय सम्पत्ति की प्राप्ति, चारों ओर से यश एवं प्रताप की प्राप्ति, शारीरिक कान्ति और नवीन सम्पत्ति का लाभ होता है। (११) एकादशस्थ शुक्र की महादशा में राज-सम्मान पुत्र, धन, वस्त्र एवं सुगन्धि के पदार्थ आदि की प्राप्ति, कृषि तथा वाणिज्य से सुख, दानशीलता एवं पुस्तक लिखने का सौभाग्य प्राप्त होता है। (१२ द्वादशस्थ शुक्र की महादशा में राज-सम्मान, धन तथा अन्न की प्राप्ति, स्थान-च्युति, परदेश-वास, मातृ-वियोग और मन की विकलता होती है।

भिन्न-भिन्न राशिगत शुक्र का फल

(१) मेष राशिस्थ शुक्र की महादशा में धन और सुख का नाश होता है। वह सदा भ्रमणकारी, व्यसनी, चित्तोद्वेगी और चञ्चल होता है। (२) वृष राशिस्थ शुक्र की महादशा में कृषि करनेवाला, सत्यवादी और दानी होता है। उसके सुख की वृद्धि और शास्त्रों की ओर विलक्षण रुचि होती है। उसे कन्या सन्तान होती है। (३) मिथुन-राशिगत शुक्र की महादशा में काव्य-कला का जाननेवाला, हास विलास-प्रिय, कथा इत्यादि में रुचि रखनेवाला और परदेशयात्रा में उत्सुकचित्त होता है। (४) कर्क राशिगत शुक्र की दशा में जातक अपने कार्य में दक्ष, उद्यमी और अपनी स्त्री के लिए उत्सुक एवं कृतज्ञ होता है। (५) सिंह राशिस्थ शुक्र की दशा में स्त्रियों से धन प्राप्त करनेवाला, पराये धन से जीवन व्यतीत करनेवाला, पुत्र और चतुष्पद जीवों से किञ्चित् सुखी तथा पुराने मकान में वास करनेवाला होता है। स्त्री का नाश, भ्रातृ-वियोग, स्वजनों से विरोध और कलह होता है। (६) कन्या राशिस्थ शुक्र की महादशा में सुख का नाश, धन की कमी, मन में चञ्चलता मनोरथ का नाश और अपने स्थान से विचलन होता है। (७) तुला राशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी महादशा में जातक खेती करनेवाला, धन-वाहनों से युक्त और अपनी जाति में मान एवं प्रतिष्ठा पानेवाला होता है। (८) वृश्चिक राशिगत शुक्र की महादशा में परोपकार-निरत, प्रतापी एवं विदेश-वासी होता है; परन्तु ऋणग्रस्त और कलहकारी होता है। (९) धनु राशिस्थ शुक्र की महादशा में राज-द्वार से यथेष्ट सम्मान एवं प्रतिष्ठा पानेवाला और शिल्पविद्या में निपुण होता है; परन्तु उसके शत्रुओं की वृद्धि होती है और वह दुःखी रहता है। (१०) मकर राशिस्थ शुक्र की दशा में शत्रुओं को विजय करनेवाला, सहनशील, कुटुम्बीजन से चिन्तित और कफ तथा वात-रोग से निर्बल होता है। (११) कुम्भ राशिस्थ शुक्र की दशा में व्यसनों से व्याकुल, रोगी, श्रेष्ठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मों से रहित और मिथ्यावादी होता है। (१२) मीन राशिस्थ शुक्र की दशा में राज्य का प्रधान, धनी, कृषि से लाभ करनेवाला और अनेक सुखों से युक्त होता है।

ग्रहों के उच्च-नीचादि के भेद, स्थान-भेद, भावेश एवं अवस्थादि भेदजन्य नाना प्रकार के फलों का विवरण लिखा गया है। फल कहने में नाना प्रकार के फलों पर दृष्टि डालते हुए सबके निचोड़ पर स्थिरतापूर्वक ध्यान देकर फल कहना होगा। जातक की उम्र, व्यवसाय, विद्या, वित्त, समाज यानी उसकी देश-कालीन परिस्थितियों पर ध्यान देकर फल कहना होता है। जैसे, किसी जातक के यदि ६० या ७० वर्ष की अवस्था में किसी ग्रह की महादशा में पुत्र पैदा होने का सुखयोग पाया जाय अथवा किसी बालक के दस-बारह वर्ष की अवस्था में वैसे ही फल का उल्लेख मिले तो यह असम्भव होने के कारण त्याज्य होगा। इसी प्रकार यदि किसी अनपढ़ साधारण मनुष्य को किसी ग्रह के फल से पुस्तकादि का लेखन-प्रकाशन करना मालूम पड़े तो फल कहने के समय अनुमान और बुद्धि से काम लेना होगा। तात्पर्य यह है कि फल कहने में बड़ी सावधानी एवं विचार से काम लेना होगा। मनुष्य अनेक और ग्रह नौ ही हैं। शास्त्रकारों ने ग्रहों के स्थानादिपरिवर्तन द्वारा अनेकानेक फल व्यापक रूप से बतलाये हैं। व्यक्ति विशेष के लिए यही फल कुशल ज्योतिर्विद् की अन्तर्दृष्टि से देश, काल तथा पात्रानुसार एक नवीन विलक्षण विशेषता प्राप्त कर लेता है। अतः पाठकों को भी बुद्धि और विचार से काम लेना आवश्यक है।

ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

दशा-अन्तर्दशा-फल

दशा-अन्तर्दशा का फल कहना इतना सुगम नहीं है जितना कि साधारणतः लोग इसको बनाए हुए हैं। अन्तर्दशा के फल का अनुमान उसी प्रकार हो सकता है जैसे दो भिन्न-भिन्न पदार्थों के मिलने से विज्ञान-शास्त्रानुसार प्रायः कोई तीसरा पदार्थ बन जाता है। स्वच्छ दूध में खट्टा एवं काँजी के मिलाने से उसका रूपान्तर दही के रूपमें हो जाता है। दूध को बिलोने से अथवा मंथन करने से मक्खन निकल आता है। मक्खन पर अग्नि का प्रयोग करने से घृत बन जाता है। जल पर क्रिया-विशेष करने से वह बर्फ अर्थात तरल से ठोस पदार्थ बन जाता है। स्वर्ण में सुहागा मिलाकर अग्नि-प्रयोग करने से वह कठिन पदार्थ तरल हो जाता है। रसायन-विद्या में सहस्रों ऐसे प्रमाण हैं जो सिद्ध करते हैं कि भिन्न-भिन्न गुण और स्वभाव के पदार्थों को मिलाने से एक विचित्र परिवर्तन हो जाता है; परन्तु सुगमता से सर्वसाधारण मनुष्यों को समझ में आने के उद्देश्य से इन कई उपमाओं को देकर यह दिखलाया जाता है कि भिन्न-भिन्न पदार्थों को भिन्न-अवस्थाओं में संयुक्त करने से अनेकानेक विलक्षण परिणाम होते हैं। इसी प्रकार एक ग्रह की दशा में जब दूसरे किसी ग्रह की अन्तर्दशा आती है, उस समय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन दोनों ग्रहों की अनेकानेक विलक्षणताओं के अनुसार एवं उन दोनों ग्रहों की विचित्र किरणों के सम्मिलित होने से एक विलक्षण मिश्रित फल निष्पन्न होता है। स्मरण रहे कि दशान्तर-फल कहने में प्रधानता दशेश और अन्तर्दशेश की होती है। इस कारण देखना यह होगा कि (१) दशेश किन-किन भावों का स्वामी है, (२) दशेश किस भाव में बैठा है, (३) अन्तर्दशेश किस भाव में बैठा है, (४) दशेश से अन्तर्दशेश का क्या स्थान पड़ता है, (५) अन्तर्दशेश की अवस्था आदि के अनुसार फल और (६) किसी विशिष्ट सम्बन्ध के अनुसार फल। इसके अतिरिक्त उन सब बातों पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है जिनका वर्णन आगे किया गया है। यह भी देखना होगा कि ग्रहगण अपना-अपना फल देने में कब समर्थ होते हैं।

अन्तर्दशा का विचार करते समय निम्नलिखित ८ नियमों पर यदि सावधानीपूर्वक ध्यान दिया जायगा तो आशा ही नहीं विश्वास भी है कि ज्योतिषप्रेमियों को फल कहने में बहुत सफलता होगी; परन्तु परिश्रम तो अवश्य करना होगा। बिना परिश्रम के फल कहने का परिणाम यह हुआ कि इस प्राचीन गूढ़ एवं महत्त्वपूर्ण शास्त्र को आये-दिन लोग ढकोसलेबाजी, धूर्तविद्या एवं ढोंग कहते हैं। विचारपूर्वक यदि फल कहा जाय तो इस कलंक के टीका को न केवल मिटाया जा सकता है, वरन् यह विद्या बहुतों के लिए पूर्ण रीति से अर्थकरी भी हो सकती है।

अष्ट-सूत्र

(१) दशेश अर्थात् जिस ग्रह की महादशा है, वह किस भावका स्वामी है और उसकी अन्तर्दशा में शुभ और अशुभ ग्रहों की अन्तर्दशा का क्या फल होता है (२) दशानाथ की भिन्न-भिन्न भावों में स्थिति के अनुसार अन्तर्दशा फल। (३) अन्तर्दशेश जिस भाव में बैठा है उसके अनुसार फल। (४) दशानाथ से अन्तर्दशेश किस स्थान में है अर्थात् दशानाथ के साथ मे अन्तर्दशेश है अथवा दशानाथ से अन्तर्दशेश द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ इत्यादि स्थान में है, और उस स्थान में रहने के कारण क्या फल होता है ? (५) अन्तर्दशेश की अवस्था आदि का विचार एवं अन्तर्दशेश की शुभ, अशुभ दृष्टि आदि के फल का निर्णय। (६) प्रति ग्रह की दशा में अन्यान्य ग्रहों की अन्तर्दशा का स्वाभाविक फल। (७) कतिपय फुटकर योगों द्वारा दशा-अन्तर्दशा के फल। (८) ग्रहगण किन-किन कारणों से कब-कब फल देने में समर्थ होते हैं ? एवं वर्ष, ऋतु, मास, नक्षत्र, तिथि, करण, वार और योग आदि का फल किस-किस समय में विकास दिखलाता है ?

इन्हीं नियमों के अनुसार यदि ग्रहों के फलों का नियोजन किया जाय और इन फलोंके शुभत्व और अशुभत्व के तारतम्यानुसार फल कहा जाय तो निस्संदेहपूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम नियम—अर्थात् भिन्न-भिन्न भावों के स्वामी अपनी-अपनी दशा एवं अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा में क्या फल देते हैं।

साधारण नियम यह है कि ग्रह जिस भाव का स्वामी हो अथवा जिस गृह में बैठा हो अथवा जिस वस्तु का कारक हो, उन सब पर वह ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में शुभ अथवा अशुभ फल प्रदान करता है। जैसे पञ्चमेश की दशा में पुत्र सम्बन्धी अथवा भगवत्प्रेम सम्बन्धी कुछ-न-कुछ शुभ अथवा अशुभ फल अवश्य होता है। पञ्चमस्थ ग्रह भी पञ्चम भाव के फलों पर प्रभाव डालता है और इसी प्रकार ग्रहगण अपने-अपने कारकत्वानुसार (यथा बृहस्पति पुत्र का कारक होने के कारण पुत्र-सम्बन्धी विषयों पर) शुभाशुभ प्रभाव डालते हैं। (१) **लग्नेश** की दशा में जब शनि का अन्तर आता है तो धन की हानि होती है और कुटुम्ब-वर्गसे शत्रुता अथवा प्रेम का अभाव होता है। (२) **द्वितीयेश** की महादशा में मानहानि, द्रव्य को हानि, पद-च्युति, कुटुम्बियों और मित्रोंसे दुर्भाव तथा कभी-कभी कारागार भी होता है। द्वितीयेश यदि पाप ग्रह हो अथवा कोई पाप ग्रह द्वितीयस्थ हो या द्वितीयेश के साथ कोई पाप ग्रह बैठा हुआ हो तो द्वितीयेश की महादशा में जब शनि, मङ्गल, सूर्य तथा राहु की अन्तर्दशा होती है तो जातक की धन-सम्पत्ति की हानि होती है। पुनः यदि द्वितीयेश पाप ग्रह होता हुआ द्वितीयस्थ हो अर्थात् द्वितीयेश स्वगृही हो, परन्तु पाप ग्रह हो तो ऐसे द्वितीयेश की दशा में राज-कोप से जातक के धन और मान की हानि तथा देश-निकाला होता है। अपने इष्ट जनों से जातक का विरोध होता है। ऐसी महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा आने से धन और भूमि की हानि तथा सन्तान, भाई और बहन की मृत्यु होती है; परन्तु शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में अनिष्टकारी फल नहीं होता है। यदि द्वितीय स्थान में कोई शुभ ग्रह बैठा हो और द्वितीयेश भी शुभ ग्रह हो तो द्वितीयेश की महादशा में जातक की उन्नति होती है और सन्तान-सुख भी संभव होता है। यदि द्वितीयेश पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह के साथ बैठा हो तो ऐसे द्वितीयेश की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब शस्त्र, चोर और अग्नि से जातक को भय होता है तथा वह सब प्रकार के दुःख का भाजन होता है। द्वितीयेश यदि पाप ग्रह हो तो उसकी महादशा में जातक भूतप्रेतादि से पीड़ित होता है और मानसिक व्यथा, चिन्ता तथा अप्रसन्नता से सदा व्याकुल रहता है; परन्तु शुभ ग्रह की दृष्टि रहने से ऐसा फल नहीं होता। (३) **तृतीयेश** की महादशा में यदि तृतीयेश के साथ शुभ ग्रह हो तो शुभ फल होता है। यदि तृतीयेश पाप ग्रह हो तो वैसे तृतीयेश की महादशा में जब शनि, मंगल, सूर्य राहु अथवा केतु का अन्तर आता है तो भाई-बहनों की मृत्यु होती है अन्यथा कम-से-कम उन लोगों से तथा अपने मित्र-वर्ग से वैमनस्य तथा भेद-बुद्धि तो अवश्य ही होती है! यदि पापी तृतीयेश के साथ कोई दूसरा पाप-ग्रह भी बैठा हो तो वैसे तृतीयेश की दशा में जब पाप-ग्रह का अन्तर आता है तब शत्रुओं की वृद्धि और चोर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि द्वारा धन नष्ट होता है तथा शस्त्र द्वारा आघात भी होता है अर्थात् प्रायः अनिष्ट ही फल होता हैं। तृतीयेश की महादशा में, चाहे वह पाप हो चाहे शुभ, जब पाप-ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब प्रायः उसका परिणाम भ्राता और कुटुम्बियों से झगड़ा ही होता है। (४) चतुर्थेश यदि पाप-ग्रह हो तो उसकी महादशा में पाप-ग्रह का अन्तर आने पर बन्धुजन से विरोध, कृषि-गोधनादि की हानि, सम्पत्ति की कमी और स्थान-च्युति तथा मर्यादा में कमी होती है। चतुर्थेश की महादशा में पाप ग्रह, अस्त ग्रह अथवा नीच ग्रह की अन्तर्दशा जब होती है तब जातक को हठात् अपने देश का त्याग करना पड़ता है और बन्धुजन का विनाश होता है। (५) पञ्चमेश यदि शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा में धन और सन्तान की वृद्धि, राज-दरबार तथा बन्धु-बान्धवों से प्रेम, इच्छानुसार प्राप्ति और अभीष्ट-सिद्धि होती है; परन्तु पञ्चमेश की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राज-पीड़ा और पुत्रों पर आपत्ति तथा दुःख होता है। धन की हानि भी होती है। पञ्चमेश की महादशा में ईश्वर-प्रेम का भी (यदि ऐसा योग हो तो) उदय होता है। स्मरण रहे कि त्रिकोणेश पापग्रह रहने पर भी शुभप्रद होता है। (६) षष्ठेश की महादशा में यदि पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तो राज-कोप, अग्नि तथा रोग का भय और शोक होता है। पुनः यदि षष्ठेश पापग्रह हो तो षष्ठेश की वैसी महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब उपर्युक्त फलों के अतिरिक्त जातक को मुकदमेबाजी करनी पड़ती है। उसे राज-दण्ड भोगना पड़ता है तथा प्लीहा, गुल्म, कामला, प्रमेह, दमा एवं क्षय रोग का दुःखकारी प्रकोप होता है। (७) सप्तमेश की महादशा में जब पापग्रह का अन्तर आता है तब—विशेष रूप से यदि वह पापग्रह नीच हो तो—जातक की स्त्री का नाश होता है और जातक को इधर-उधर भटकना पड़ता है। सप्तमेश पापग्रह की महादशा में उपर्युक्त फल के अतिरिक्त जातक का किसी-न-किसी स्त्री से झगड़ा होता है। वह राज-कोप का भाजन होता है तथा उसके देश-निर्वासन की संभावना होती है। जातक के किसी अङ्ग अथवा गुदा-मार्ग में रोग उत्पन्न होता है। (८) अष्टमेश की महादशा में जब पापग्रह का अन्तर आता है तब शत्रु से भय द्रव्य का नाश, यज्ञ की हानि, स्थान-च्युति और जीवन भयाकुल होता है तथा स्त्री, मित्र, कुटुम्ब और भ्राता आदि की हानि होती है। (९) नवमेश की दशा में जब पापग्रह का अन्तर आता है तब माता-पिता की मृत्यु, बन्धन, द्रव्य की हानि एवं अन्याय-युक्त बातें होती है; परन्तु नवमेश की दशा में धार्मिक विचारों का उदय, सत्कर्म की योजना और अनुष्ठानादि क्रिया भी (यदि अन्य प्रकार से ऐसे योग हों तो) होती है। इसी प्रकार यदि नवमेश पापग्रह हो और उसमें राहु, शनि, मङ्गल और सूर्य की दशा आये तो जातक को परदेश-भ्रमण से अनेक प्रकार के दुःख झेलने पड़ते हैं और भाई तथा बन्धु-वर्ग से झगड़ा एवं विक्षोभ होता है। (१०) दशमेश की महादशा में जब पापग्रह का अन्तर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आता है तब मित्रों से वियोग, सुख और द्रव्य की हानि, पद-च्युति और अपमान होता है। यदि दशमेश नीच हो तो पापग्रह की अन्तर्दशा में प्रियजनों को रोग, सुख और यश की हानि, पद-च्युति और वित्त का क्षय होता है; परन्तु दशमेश की महादशा तथा अन्तर्दशा में यज्ञादि कर्म करने का (यदि धर्म-स्थान सुन्दर हो तो) उत्तम समय होता है। दशमेश यदि पापग्रह हो और उसमें पापग्रह की अन्तर्दशा आये तो जातक को कारागार-निवास, कठिन रोग और नाना प्रकार के दुःख झेलने पड़ते हैं। स्मरण रहे कि दशमस्थ ग्रह यदि उच्चादि शुभ वर्ग का हो तो वैसे ग्रह का फल अत्युत्तम होता है। (११) एकादशेश की महादशा में जब शनि, मंगल, सूर्य और राहु का अन्तर आता है तब कृषि का विनाश, राज भय, धन की कमी और दुखी जीवन होता है। (१२) द्वादशेश की महादशा में जब शनि, सूर्य अथवा मंगल की अन्तर्दशा आती है तो स्त्री, सन्तान और कुटुम्बियों से मतभेद होता है तथा द्रव्य, मान, बल एवं पुरुषार्थ को धक्का लगता है तथा राहु की अन्तर्दशा में चोर और विषधर जन्तुओं से भय होता है।

द्वितीय नियम अर्थात्—दशानाथ के भिन्न-भिन्न भावों में रहने के अनुसार अन्तर्दशा-फल।

(१) लग्नस्थ सूर्य की महादशा में जब मङ्गल, चन्द्रमा, शनि अथवा राहु की अन्तर्दशा होती है तो दुःख, राजकीय-अधिकार और गृह तथा धन का नाश होता है; परन्तु जब ऊपर लिखे हुए अन्तर्दशेश 'अगोचर' हों तो ऊपर लिखे हुए ग्रह दुःखदायी होते हैं और जब 'गोचर' हों तो ऊपर लिखे हुए विषयों में शुभ फल होता है अर्थात् लग्नस्थ सूर्य की महादशा में जब 'गोचर' मंगल, चन्द्रमा, शनि अथवा राहु की अन्तर्दशा आती है तब सुख, राज्य, अधिकार और गृह, धन तथा सुख को प्राप्ति होती है।

टिप्पणी—'गोचर' शब्द ज्योतिष-शास्त्र में दो अर्थों में प्रयुक्त होता है। जन्म-राशिस्थ चन्द्रमा से जन्म के बाद ग्रहगण अपनी-अपनी गति के अनुसार जिन-जिन भावों में जिस जिस समय जाते हैं उसी को ग्रहों का गोचर-भ्रमण कहते हैं। इस स्थान में गोचर शब्द का यह अर्थ नहीं है। गोचर से दूसरा अभिप्राय यह है कि जो ग्रह उच्च, स्वगृही, मूल-त्रिकोण, मित्रगृही हो; अस्त अथवा षष्ठ, अष्टम और द्वादशभाव-गत न हो वह "गोचर" कहलाता है। जब ग्रह अस्त हो, अथवा नीच हो अथवा स्वगृही न हो, अथवा मूलत्रिकोण में न हो, अथवा षष्ठ, अष्टम और द्वादशभावगत हो तो ऐसे ग्रह को "अगोचर" कहते हैं। इसी अर्थ में 'गोचर' 'अगोचर' शब्द का प्रयोग इस स्थान में किया गया है। लग्नस्थ सूर्य की महादशा में बृहस्पति, शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब भूमि, कृषि, चतुष्पद और पुत्रादि से सुख होता है। (२) द्वितीयस्थ सूर्य की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब धन का क्षय, रूखी बातों का श्रवण, मानसिक दुःख, बहुत भय एवं नेत्र-रोग होता है। यदि शुभ ग्रह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की अन्तर्दशा आती है तो अत्यन्त सुख, विद्या की प्राप्ति, राजनेताओं से प्रेम और भूषण, वस्त्र तथा वाहनादि का सुख होता है। (३) **तृतीयस्थ** रवि की महादशा में, 'गोचर' ग्रह की अन्तर्दशा आने से अत्यन्त सुख होता है; परन्तु 'अगोचर' ग्रह की अन्तर्दशा आने से निकृष्ट फल होता है। यदि शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो अत्यन्त सुख, धन, धैर्य संग्राम में विजय एवं सन्तान की उत्पत्ति होती है। (४) **चतुर्थस्थ** सूर्य की महादशा में जब पाप-ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब मानसिक दुःख, राज, अग्नि और चोर से भय एवं भ्राता की मत्यु होती है। शुभग्रह की अन्तर्दशा में अत्यन्त सुख, राज, धन, वस्त्र, सुगन्धादि पदार्थ और स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है। (५) **पञ्चमस्थ** सूर्य की महादशा में जब शनि, मंगल, केतु, अथवा राहु की अन्तर्दशा आती है तब चोर, अग्नि एवं राज-पीड़ा और संतान को क्लेश होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में आनन्द, राज्य, भूषण और वाहन की प्राप्ति एवं संतान-सुख होता है। (६) **षष्ठस्थ** रवि की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राज, अग्नि और चोर से भय होता है एवं जातक ऋण-ग्रस्त होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा के आरम्भ में सुख तथा उत्तम फल होता है और अन्त में दुःख होता है। (७) **सप्तमस्थ** रवि की महादशा में शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा एवं बुध की जब अन्तर्दशा आती है तब मन में उत्साह, भूषण, वस्त्र और वाहन इत्यादि की प्राप्ति एवं स्त्री-लाभ होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा में ज्वर, अतिसार, पित्त-प्रकोप, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र इत्यादि रोग एवं शत्रुओं से भय होता है। (८) **अष्टमस्थ** रवि की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब भूषण और वस्त्रादि की प्राप्ति होती है। अधिक शुभ फल होता है; परन्तु किञ्चित् दुःख भी होता है। पापग्रह की अन्तर्दशा में नाना प्रकार से भय, पराधीनता, व्याधि, पीड़ा एवं मरण का भी भय होता है। (९) **नवमस्थ** रवि की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब दान में प्रवृत्ति, उत्सवादि का सुख, यज्ञादि क्रिया की संभावना और उत्तम कार्यों के करने का अवकाश मिलता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा में दुःख की वृद्धि और गुरु तथा पिता आदि की मृत्यु होती है। (१०) **दशमस्थ** रवि की महादशा में जब जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब चोर, अग्नि और राज-भय तथा उत्तम कार्यों की हानि होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा मे धन, अर्थ की प्राप्ति एवं अस्थायी कीर्ति होती है। (११) **एकादशस्थ** रवि की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अन्तर्दशा के आरम्भ में दुःख और अन्त मे सुख होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आने पर राजकीय अनुग्रह की प्राप्ति, धन की उपलब्धि और स्त्री-पुत्र से सुख होता है। (१२) **द्वादशस्थ** रवि की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब स्थान-च्युति (दर्जा टूटना), प्रवास और राज-कोप से मानहानि होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आने पर भूमि, पशु, धन-धान्य, वस्त्रादि एवं मणि-माणिक्यादि की प्राप्ति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रमा की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) लग्नस्थ चन्द्र की महादशा में जब शुक्र, बुध और बृहस्पति की अन्तर्दशा आती है तब राज-प्रीति, भूषण, वाहन और वस्त्रादि की प्राप्ति एवं स्वास्थ्य अच्छा होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा आने पर कृषि, गौ और भूमि इत्यादि का नाश एवं दुःख होता है। (२) द्वितीयस्थ चन्द्र की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राज-भय एवं स्त्री, पुत्र और बन्धुजन से चिन्ता होती है। जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब मन में उत्साह और भोजन-वस्त्रादि का सुख होता है। (३) तृतीयस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राज-सम्मान और आनन्द होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा आने पर धैर्य एवं भाइयों का विनाश होता है और विफलता होती है। ४. चतुर्थस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राज-प्रीति द्वारा नाना प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अग्नि, चोर और राज-भय होता है एवं स्त्री, धन और गृह का नाश होता है। (५) पञ्चमस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री, सन्तान, द्रव्य एवं वस्त्रादि का लाभ और बड़ा सुख होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब मानसिक सन्ताप एवं बुद्धि चंचल होती है। (६) षष्ठस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब कृषि की हानि, प्रमेह, क्षय, पाण्डु रोगादि से दुःख होता है एवं जातक ऋणग्रस्त होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आने पर सबसे मित्रता होती है और भय का निवारण होता है। (७) सप्तमस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब वाहन, भूषण, वस्त्र और स्त्री-पुत्रादि तथा धन का सुख होता है। जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब विदेश-यात्रा और पुत्र एवं धन का नाश होता है। (८) अष्टमस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री सन्तानादि का मरण, झगड़े में पराजय एवं भोजन में दुःख होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब भूषण, वाहन और धैर्य आदि की प्राप्ति तथा महती कीर्ति होती है। (९) नवमस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब पिता को सुख, विवाहादि उत्सव, धर्मादि क्रिया और धन एवं स्त्री का सुख होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा आने पर सम्पत्ति एवं गृह का नाश, धर्म-च्युति और मन में दुःख होता है। (१०) दशमस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब जातक स्वधर्मनिरत, शास्त्रों में रुचि रखनेवाला एवं दानादि-परायण होता। जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अपकीर्ति अर्थात् अपयश, भय एवं स्वधर्म-च्युति होती है। (११) एकादशस्थ चन्द्रमा की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब नाना प्रकार का सुख और वाहन एवं धन-धान्यादि की प्राप्ति होती है। पाप ग्रह की अन्त-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा जब आती है तब नृप और चोर आदि से पीड़ा, कृषि एवं अन्न की हानि, शरीर-पीड़ा तथा नेत्र-रोग होता है। (१२) **द्वादशस्थ** चन्द्र की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब नाना प्रकार का कष्ट और सब लोगों से शत्रुता होती है और धन का नाश होता है। शुभ ग्रह जब आता है तब भूषण, वस्त्र और वाहन आदि का सुख तथा स्त्री, सन्तान एवं मित्रों की वृद्धि होती है।

मंगल की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) **लग्नस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब दुर्जनों से भय, बहुत कष्ट और क्षति होती है। जातक व्रण एवं मन्दाग्नि आदि से पीड़ित होता है। शुभ ग्रह की जब अन्तर्दशा आती है तब राज-नेताओं से प्रीति और भाई-बन्धु भूमि तथा वाहनादि का सुख होता है। (२) **द्वितीयस्थ** मंगल की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब भाइयों को सुख, विद्या की प्राप्ति, मन में उत्साह और वाहन तथा भूषणादि का सुख होता है। पाप ग्रह की जब अन्तर्दशा आती है तब पूर्व-संचित धन का नाश, राज-भय और ज्वर एवं अग्नि से पीड़ा होती है। (३) **तृतीयस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब मन में अशान्ति और भाई-बन्धुओं का नाश होता है। शुभ ग्रह की जब अन्तर्दशा आती है तब भोजन, वस्त्र, भूषण और वाहन आदि का सुख तथा कृषि से लाभ होता है। (४) **चतुर्थस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब भूमि एवं गृह का नाश और चोर, अग्नि तथा राज-भय और दुःख होता है। जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब भूमि, वाहन, पशु, भूषण और वस्त्रादि का सुख होता है। (५) **पञ्चमस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री, पुत्र, धन-धान्य, पशु, कृषि आदि की हानि होती है। जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब मंत्र की उपासना से सुख, उसकी सिद्धि, सन्तान की प्राप्ति तथा राज-सम्मान होता है। (६) **षष्ठस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब चोर, अग्नि एवं राजपक्ष से पीड़ा और चेचक, क्षय, जननेन्द्रिय रोग आदि होते हैं। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब पशुओं की हानि और मन में दुःख होना; परन्तु अन्त में सुख की प्राप्ति और राज्याधिकारियों से प्रेम होता है। (७) **सप्तमस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री, सन्तान आदि के नाश का दुःख एवं राज-कोप से पीड़ा होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब जातक को अत्यन्त सुख तथा भूषण और वाहन की प्राप्ति होती है। साथ ही वह राज-पक्ष से अनुगृहीत होता है। (८) **अष्टमस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब शरीर में दुर्बलता और मृत्युवद् पीड़ा होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब जातक को अनेक प्रकार के सुखों की प्राप्ति और कृषि तथा गौ आदि की वृद्धि होती है तथा वह राजनयिकों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से अनुगृहीत होता है। (९) **नवमस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब पिता एवं गुरु की मृत्यु, मन में अशान्ति और धर्म की हानि होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब सम्पत्ति, पशु आदि की वृद्धि, विवाह आदि उत्सव, यज्ञादि क्रिया और देवताओं के पूजन का सौभाग्य होता है। (१०) **दशमस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब विदेश-यात्रा, कीर्ति की हानि और पराजय होती है; परन्तु अनेक विद्वानों की सम्मति है कि इसमें अशुभ फल नहीं होता। (११) **एकादशस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब नाना प्रकार से सुख-सम्पत्ति को वृद्धि और भूषण एवं सुगन्धित द्रव्यों की प्राप्ति होती है। शुभ ग्रह की जब अन्तर्दशा आती है तब दानादि धर्म कार्य का सौभाग्य होता है और बहुत सुख की प्राप्ति होती है। (१२) **द्वादशस्थ** मंगल की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अनेक प्रकार के दुःख मिलते हैं और जेल जाना पड़ता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आने पर अन्तर्दशा के आदि में वाहन, भूषण और वस्त्रादि की प्राप्ति तथा अन्तर्दशा के शेष भाग में राज-भय, पद-च्युति एवं मन में विकलता होती है।

राहु की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) **लग्नस्थ** राहु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब दुःख की अति वृद्धि और नृप, चोर तथा अग्नि का भय होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब सुख की वृद्धि, भूमि और मकान आदि की प्राप्ति तथा भूषण, वस्त्र एवं भोजनादि का सुख होता है। (२) **द्वितीयस्थ** राहु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब धन का नाश, चित्त में अशान्ति और स्त्री-सन्तानादि का नाश होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब क्रय-विक्रय से धन की प्राप्ति, भूषण और भोजनादि का सुख, नौकरी में हानि तथा रोग होता है। उसकी वाचाशक्ति अच्छी हो जाती है और वह छिप कर पाप करता है। (३) **तृतीयस्थ** एवं **एकादशस्थ** राहु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राज्याधिकारियों से प्रीति और सुख होता है। अन्त में चोर, अग्नि, राज और ज्वर आदि से दुःख तथा कष्ट, बन्धुवर्ग से मतभेद और भ्रातृ-वर्ग का नाश होता है। जातक का मन दुःखी भी रहता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब नाना प्रकार से सुख होता है। (४) **केन्द्र** अर्थात् लग्न, चतुर्थ सप्तम और दशम-स्थित राहु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अग्नि से गृह दग्ध हो जाता है। स्त्री पुत्रादि को भय होता है। स्थान-च्युति, मन दुःखी और आचारादि क्रिया-विहीन होता है। चोर, अग्नि एवं राजपीड़ा होती है। अकस्मात् झगड़ा हो जाता है और नेत्र-रोग होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अन्तर्दशा के आदि में थोड़ा सुख, थोड़ी कीर्ति और धर्म में थोड़ी रुचि होती है; परन्तु अन्त में राज-कोप से धन का क्षय, युद्ध में पराजय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और नाना प्रकार का भय होता है तथा वह विद्या-विवाद में पड़ता है। (५) **त्रिकोणस्थ** राहु की दशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब जातक का शरीर बहुत दुबला पड़ जाता है। जातक नाना प्रकार के कष्ट भोगता है; पापकर्मों में निरत रहता है और उसकी अपकीर्ति होती है। उसे उत्तम भोजन नहीं मिलता। कृषि, भूमि एवं चतुष्पदों आदि की हानि तथा राजभय होता है। उसके शरीर पर छिपकली इत्यादि जीवों का पतन होता है। शुभग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अन्तर्दशा के आदि में थोड़ा सुख परदेश-वास, मन्त्र-विद्या की ओर अभिरुचि और स्त्री सन्तानादि का दुःख होता है; पर अन्त में अच्छी क्रियाओं की प्राप्ति एवं स्त्री, सन्तान और धन का सुख होता है। (६) **षष्ठ, अष्टम** तथा **द्वादशस्थ** राहु की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राजा चोर, अग्नि और वृषादि पशुओं से भय, भोजन और वस्त्र का अभाव, पद-च्युति तथा कास, श्वास, क्षय एवं जननेन्द्रिय रोग से पीड़ा होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अन्तर्दशा के आदि में थोड़ा सुख, थोड़ा धर्म और थोड़ी कीर्ति होती है। अन्तर्दशा के शेष में राजकोप से धन का नाश, युद्ध में पराजय और धन, भूमि, सन्तान तथा कुटुम्ब आदि की हानि होती है।

बृहस्पति की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) **केन्द्रस्थित** (१,४,७,१० वें भाव में स्थित) बृहस्पति की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अन्तर्दशा के आदि में राज-कोप से धन का नाश, शरीर में दुःख, कृषि, भूमि और चतुष्पद आदि का नाश, बन्धुवर्ग से विरोध और उत्साह भंग होता है; परन्तु अन्तर्दशा के शेष भाग में सुख और आनन्द की प्राप्ति होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब जमींदारी आदि की प्राप्ति, चित्त में उत्साह, वाहन, भूषण और वस्त्रादि का सुख, दान, होम और जप आदि धार्मिक क्रियाओं में प्रवृत्ति, राज-सम्मान, स्वर्ग और उत्तम वस्तुओं की प्राप्ति तथा सब प्रकार से कल्याण होता है। (२) **द्वितीयस्थ** बृहस्पति की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब दुःख की वृद्धि, राजकीय मामलों में धन का व्यय, बन्धुजन से मतभेद, मन में उद्वेग, वाणी में कठोरता, निकृष्ट भोजन, दुष्ट कर्म में रुचि और नीच-सेवा होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब आनन्द, धन, विद्या, विजय, राज, स्त्री और सन्तानादि से सुख तथा शारीरिक स्वस्थता, दानादि की चेष्टा, देश-प्रेम एवं धन की वृद्धि होती है। (३) **तृतीयस्थ** बृहस्पति की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब यश की वृद्धि और वस्त्र, वाहन, भूषण स्वर्ण एवं मणि-मुक्ता आदि की प्राप्ति होती है तथा जातक किसी देश का मालिक अथवा मन्त्री होता है। पापग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब नाना प्रकार का भय, आचार-हीनता, अपने कुलवालों का नाश और नाना प्रकार का दुःख तथा भ्रमण होता है। ये सब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल अन्तर्दशा के आदि में होते हैं; परन्तु अन्तर्दशा के शेष भाग में सुख और वाहन तथा उत्तम भोजनादि की प्राप्ति होती है। (४) त्रिकोणस्थ अर्थात् पञ्चम और नवम स्थानगत वृहस्पति की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अच्छे प्रकार का सुख, धर्मशाला और मन्दिर आदि का निर्माण, ईश्वर-पूजन, भाग्योन्नति, कीर्ति की वृद्धि, स्त्री, सन्तान आदि का सुख विद्या, यश और विजय से सुख एवं अनेक देशों से धन की प्राप्ति होती है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब स्त्री, पुत्र और राज से वैमनस्य, बन्धुजन की मृत्यु, भ्रमयुक्त बुद्धि, कार्यों में विघ्न, पद-च्युति, चोरादि से देहपीड़ा, कुलाचार से हीनता, पर-स्त्री-गमन, चित्त में चञ्चलता, मानहानि एवं रत्नादि का नाश होता है। (५) त्रिक (६, ८, १२) स्थानगत वृहस्पति की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब कुलाचार से हीनता, धन एवं सम्पत्ति का नाश, बन्धुजन की मृत्यु, विदेश में राज-भय, भूमि के लिए झगड़ा, मन में अशान्ति और रोगों से भय होता है। शुभग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब बहुत सुख, देश ग्रामादि का प्रभुत्व, यश की वृद्धि, कुछ घोड़े, हाथी और वस्त्रादि का सुख, गन्धादि की प्राप्ति, भोजन का सुख एवं शरीर में आरोग्यता होती है।

शनि की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) केन्द्रस्थ शनि की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब परदेश-वास, स्वस्थान का त्याग, नृप, चोर और अग्नि से पीड़ा, स्त्री, सन्तान एवं बन्धुओं का मरण, अपने कर्मों से च्युति, दूसरे की सेवा, मन में दुःख तथा प्लीहा एवं शूलादि रोगों से पीड़ा होती है। शुभग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अन्तर्दशा के आदि में अत्यन्त सुख, राज्याभिषेक अथवा राज-सम्मान और देश एवं ग्रामादि का स्वामित्व भी प्राप्त होता है; परन्तु अन्त में रोग से पीड़ा, अपवाद की प्राप्ति, धन का नाश एवं बन्धुजन की मृत्यु होती है। (२) द्वितीयस्थ शनि की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब राजदण्ड, कारागार-निवास, अनेक प्रकार की अशान्ति, चित्त-वैकल्य, राज्य-हानि, घोड़े-हाथियों की मृत्यु, वाहन आदि से पतन और ज्वर तथा अतिसार रोग से शरीर में पीड़ा होती है। शुभग्रह की अन्तर्दशा आने पर संकल्प में दृढ़ता, परोपकारिता, जुआ, खेल, तमाशा एवं गान आदि में रुचि, भोजन, वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति, उद्योग में सफलता तथा अधिकार एवं स्वर्ण आदि की प्राप्ति होती है। (३) तृतीयस्थ एवं एकादशस्थ शनि की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब धन की प्राप्ति होती है; परन्तु भ्रातृवर्ग अर्थात् भाई आदि का नाश, कलह से विकलता, विदेश यात्रा, दुःख, बुरे भोजन की प्राप्ति और पराधीनता होती है तथा जातक नीच स्त्रियों से प्रसङ्ग करता है। शुभग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब शुभ फल होता है और राज-प्रेम से सुख होता है। (४) त्रिकोणस्थ शनि की महादशा में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब नाना प्रकार के क्लेश, पिता, सन्तान, भूमि, अन्न और धर्म-कर्म का नाश, अपने बन्धुजन से कलह, उद्योग-भंग और वायु-प्रकोप-जनित रोग, नेत्र-रोग एवं बवासीर रोग से पीड़ा होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब बड़ा आनन्द, राजसम्मान, कृषि से लाभ, धन-धान्य की अभिवृद्धि, भूषणादि की प्राप्ति, नौकर मित्र एवं सम्पत्ति की वृद्धि और धर्म में अभिरुचि होती है तथा स्त्री, सन्तान एवं कुटुम्बी जन नीरोग रहते हैं। (५) त्रिक (६, ८ अथवा १२) स्थानगत शनि की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अनेक प्रकार का कष्ट, मानसिक चिन्ता, धन का क्षय, स्थान-नाश, बन्धुजन की मृत्यु, नौकरी आदि में बखेड़ा, विष से भय, ज्वर और गुह्यरोग से पीड़ा तथा अग्नि एवं राज-भय होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब नाना प्रकार का सुख, देश, ग्रामादि का स्वामित्व, कान्ति की वृद्धि शरीर में आरोग्य और शत्रुओं की पराजय होती है।

बुध की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) केन्द्रस्थ बुध की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब धर्म-कर्म में विघ्न, भारी दुःख, मन में चंचलता, उत्साह-भंग, भूमि, गोधन और वस्त्रादि का नाश, स्थान-च्युति, विद्या का नाश एवं महाद्वेष होता है। शुभ ग्रह की जब अन्तर्दशा आती है तब दान, धर्म एवं यज्ञादि क्रिया और विवाह आदि उत्सव का सौभाग्य होता है। ज्ञान की वृद्धि, राज-मैत्री, कृषि, भूमि और गौ आदि की वृद्धि तथा वाहन, वस्त्राभूषण और मणियों की प्राप्ति होती है। (२) द्वितीयस्थ बुध की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब धन की प्राप्ति, मित्रता की वृद्धि, ईश्वरादि-पूजन, धर्म और दानादि में बहुत प्रीति, विद्या की प्राप्ति, बन्धुजन से प्रेम और नाना प्रकार का आनन्द होता है। पापग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब बन्धुजन से द्वेष, सभी लोगों से शत्रुता, कृषि, भूमि गौ और आचार आदि का नाश तथा बन्धन अर्थात् जेल-यातना एवं राजदण्ड होता है। (३) तृतीयस्थ बुध की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब शुभ फल होता है। धैर्य, उत्साह विदेश में धन का सञ्चय, विद्या की प्राप्ति और राज्याधिकारियों से प्रीति होती है। पौष्टिक भोजन मिलता है। धार्मिक ग्रंथ अर्थात् पुराणादि-श्रवण का सौभाग्य और विवाहादि उत्सव होते हैं। पापग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब राज-जनित पीड़ा से विकलता, भ्रातृवर्ग का नाश, चोर, अग्नि और शत्रु से भय, नीच स्त्री के गृह में वास, कृषि का नाश और घोड़ा तथा हाथियों को क्लेश होता है। (४) त्रिकोणस्थ बुध की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब चित्त में अशान्ति, धर्म-कर्म, स्त्री-पुत्र और धन का नाश, कृषि एवं व्यापार मे हानि, बन्धुजन को पीड़ा, पद-च्युति तथा बन्धुजन से खेद एवं दोषा-रोपण होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब राजा से प्रेम, नाना प्रकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का सुख, दो नामों (मूल नाम और उपनाम की प्राप्ति और राजा से वस्त्राभूषण और अधिकार की प्राप्ति, किसी पुस्तकादि का प्रकाशन और शरीर में आरोग्य होता है। (५) त्रिक (६, ८, १२) भागवत बुध की महादशा में जब किसी पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है, तब चोर और शत्रु से भय, बन्धुजन का मरण, नौकर, स्त्री और पुत्र का नाश, बन्धुवर्ग से विग्रह और ज्वर तथा अतिसार रोग से पीड़ा होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अन्तर्दशा के आदि में यश की वृद्धि, देवता आदि के पूजन में रुचि और शरीर में कान्ति तथा आरोग्यता होती हैं; परन्तु अन्त में सुख का नाश, नृप से भय, वाणी में रूखापन एवं गौ तथा महिषादि को पीड़ा होती है।

केतु की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) केन्द्रगत केतु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब मान-भंग, द्वेष, राज, चोर और अग्नि से भय, स्त्री, सन्तान और भाइयों का नाश, कर्म एवं पद से च्युति, अकस्मात् झगडा तथा बार-बार भ्रमण होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब आदि में राज, कुटुम्ब एवं मित्रों से प्रेम, शारीरिक आरोग्य और वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है। शेष भाग में पद-च्युति (अर्थात् नौकरी आदि से हटाया जाना), मन में अशान्ति, अपने बन्धुजन का नाश और काम-पीड़ा होती है।

(२) द्वितीयस्थ केतु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब नाना प्रकार का दुःख, भिक्षाटन से अन्न की प्राप्ति, मन में अशान्ति, नाना प्रकार की आपत्तियाँ, बन्धुओं का नाश, धन का व्यय, स्त्री और पुत्र का नाश तथा राजा एवं चोर से धन का क्षय होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब दशा के आदि में परोपकार में प्रवृत्ति, विद्या-विवाद में जय और वस्त्र तथा भोजनादि की प्राप्ति होती है। शेष भाग में कार्य में असफलता, मन में उद्वेग, वचन में रूखापन और कुछ धन का व्यय होता है। (३) तृतीय अथवा एकादश गत केतु की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है, तब बड़ों की प्रीति, भूषण, वस्त्र एवं वाहन आदि की प्राप्ति, भूमि की वृद्धि और सुख, सुगन्धि-युक्त पदार्थों का लाभ, किसी दूरवर्ती स्थान से स्वर्णादि की प्राप्ति तथा बन्धुजन से समादर होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब पापकर्मनिरत, सब कार्यों में विघ्न डालनेवाला, बन्धुजन का आश्रित, छोटी नौकरी करनेवाला और बुरे प्रकार का वस्त्र धारण करनेवाला होता है। ये सब फल अन्तर्दशा के आाद में होते हैं और शेष भाग में सुख की प्राप्ति तथा स्त्री-पुत्रादि का सुख एवं धन का आगमन होता है। (४) त्रिकोणस्थ केतु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब मन में क्लेश, नाना प्रकार की आपत्तियाँ, पुत्र, मित्र एवं पितृवर्ग की मृत्यु, नौकरी और जमीन के लिये झगड़ा एवं कुटुम्बियों आदि से विरोध होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब उसके आदि में कृषि से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाभ, गौ और भूमि आदि की प्राप्ति, विद्या की उन्नति, बन्धुजन से प्रेम और वस्त्र तथा भोजन आदि का सुख होवा है और शेष भाग में अकस्मात् झगड़ा होता है तथा अपने स्थान से च्युत होता है। (५) त्रिक (६,८,१२) भावगत केतु की महादशा में जब पाप ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अन्तर्दशा के आदि में परदेश में मरण अथवा अपने पद से च्युति, चोर, अग्नि एवं राज-भय और प्रमेह, गुल्म एवं मूत्रस्थली के रोग से पीड़ा होती है; परन्तु शेष में किञ्चित् मात्र सुख की वृद्धि होती है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब सुखों की प्राप्ति, स्त्री पुत्र की वृद्धि, धन-वस्त्र एवं स्वर्णादि की प्राप्ति, बन्धुजन से शत्रुता, सिर, गुदा एवं नेत्र में रोग और अपने पक्ष में लड़ने की शक्ति होती है तथा जातक के शरीर पर गिरगिट एवं छिपकली इत्यादि जन्तुओं के गिरने का भय होता है।

शुक्र की दशा में अन्तर्दशाओं का फल

(१) केन्द्रगत शुक्र की महादशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब राज-सम्मान, राज्य-प्राप्ति अर्थात् भू-सम्पत्ति, वस्त्राभूषण एवं वाहनादि का सौभाग्य, पुत्र एवं धन का आगमन, कीर्ति का प्रसार, चित्त में उत्साह, मन में धैर्य, भाग्य की वृद्धि और राजदरबार में अधिकार प्राप्त होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अन्तर्दशा के आदि में धन का क्षय, भोजन वस्त्र कुत्सित और शुभ कार्यों का विनाश होता है। शेष में शुभ अर्थात् सुख, परदेश से धन का आगमन तथा धन, भूमि और पशु आदि का लाभ होता है। (२) द्वितीयस्थ शुक्र की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब प्रीति की वृद्धि, धन, पुत्र और स्त्री की प्राप्ति होती है तथा जातक के कुटुम्बियों का रक्षण होता है। पापग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब राज-दण्ड, मन में दुःख, विद्या-विवाद, कृषि की हानि, धर्म-कर्म से विमुखता, पद-च्युति और अग्नि, चोर तथा शत्रु से भय होता है। (३) तृतीयस्थ या एकादशस्थ शुक्र की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आती है तब दुःख से पीड़ा, धनधान्य का विनाश, उद्योग-भंग, चोर, अग्नि और राज-पीड़ा, भूमि के लिए बन्धुजन से झगड़ा और अपने पद से च्युति तथा क्लेश होता है। शुभ ग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अत्यन्त सुख, राज-सम्मान, मन में धैर्य, देश एवं ग्राम पर अधिकार, भूषण और वाहनादि की प्राप्ति, नौकर, पुत्र एवं स्त्री का सुख, कुआँ, बाग और तालाब आदि का निर्माण, धर्म-संग्रह एवं द्वितीय नाम अर्थात् उपनाम की प्राप्ति होती है। (४) त्रिकोणस्थ शुक्र की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब ईश्वर-प्रेम, शुभ क्रियाओं का उदय, यज्ञादि क्रिया की प्राप्ति, स्त्री और सन्तान की वृद्धि, भूषण, वाहन एवं मनो-वाञ्छित फल की प्राप्ति होती है और शरीर कान्ति-युक्त तथा नीरोग होता है। पापग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब मन में विकलता, स्वास्थ्य एवं मर्यादा की हानि, चोर, अग्नि और राज-भय, वाणी में क्रूरता, मति-भ्रम और बुरी स्त्रियों की संगति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्धुजन से मतभेद, दुःखदायी स्वप्न और गिलहरी जैसे जन्तुओं का शरीर पर पतन होता है। (५) त्रिक (६,८,१२) स्थान-गत शुक्र की महादशा में जब शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब अन्तर्दशा के आदि में राज-सम्मान, धन की प्राप्ति और पुत्र, स्त्री, धन, वाहन तथा वस्त्राभूषणादि से सुख होता है और शेष भाग में मन में विकलता, बन्धुवर्ग से द्वेष और गुरु एवं अपने परिवार के लोगों का नाश होता है। शुभग्रह की अन्तर्दशा जब आती है तब अन्तर्दशा के आदि में आरोग्य, सुख, पराये अन्न की प्राप्ति और वस्त्र एवं सुगन्धित पदार्थों का लाभ होता है और शेष भाग में नाना प्रकार के क्लेश, चोर एवं शत्रु से देह में पीड़ा तथा बन्धुजन का नाश होता है।

तृतीय नियम अर्थात्—लग्न से अन्तर्दशेश की (कतिपय) स्थितियों के अनुसार फलादेश।

[१] अन्तर्दशेश यदि लग्न से षष्ठ स्थान में हो तो उसकी अन्तर्दशा में रोग की वृद्धि होती है। [२] अन्तर्दशेश यदि सप्तम स्थान गत हो तो उसकी अन्तर्दशा में स्त्री का विनाश, शरीर में रोग, निन्दित भोजन, सबसे कलह, धन की हानि और नीच जनों का संग होता है। [३] अन्तर्दशेश यदि अष्टम भाव में बैठा हो तो उसकी अन्तर्दशा में दुःख, धन का नाश और अनेक व्यसन होते हैं। [४] अन्तर्दशेश यदि पञ्चम, नवम अथवा दशम भाव में हो तो उसकी अन्तर्दशा में धन का विशेष लाभ, मान, प्रतिष्ठा और संपूर्ण सुख होते हैं तथा शारीरिक सुख भी होता है।

चतुर्थ नियम अर्थात्—दशानाथ से अन्तर्दशेश के स्थानानुसार फलादेश।

(१) जब अन्तर्दशेश महादशेश के साथ रहता है [उदाहरण-कुण्डली में जैसे शुक्र की महादशा में सूर्य एवं बुध की अन्तर्दशा] तो सन्तान, नौकर, धन, कृषि एवं स्वजन सम्बन्धी हानि होती है। नौकरी में बखेड़ा लगता है। स्वजनों को दुःख होता है और एकाएक अपयश का भाजन होना पड़ता है (२) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश द्वितीयस्थ हो तो दुग्धादि उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्र, सुगन्धि-युक्त पदार्थों की प्राप्ति और स्वजनों की उन्नति होती है। जातक परोपकारी तथा चित्त से आह्लादित होता है और उसकी स्त्री, सन्तान एवं मित्रादि सुखी होते हैं। (३) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश तृतीयस्थ हो तो राजा से धन की प्राप्ति, आनन्द, उत्तम वस्त्राभूषण एवं सुगन्धित पदार्थों की प्राप्ति, उत्तम भोजन, अच्छा स्वास्थ्य और किसी से मित्रता होती है। (४) महादशेश से यदि अन्तर्दशेश चतुर्थस्थ हो तो स्त्री, सन्तान, धन, मकान, कुटुम्ब, वाहन उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है; परन्तु स्मरण रहे कि यदि अन्तर्दशेश पापग्रह हो तो फल विपरीत होता है। यदि अन्तर्दशेश पापग्रह भी हो, परन्तु उच्च, स्वगृही और बली हो अथवा उत्तम नवांशादि का हो तो फल उत्तम ही होता है। इसी प्रकार यदि अन्तर्दशेश शुभ ही हो; परन्तु उच्च, स्वगृही, बली अथवा शुभ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवांशादि का न हो तो फल उतना उत्तम नहीं होता है। (५) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश पञ्चमस्थ हो तो सन्तान की प्राप्ति होती है; परन्तु अन्तर्दशेश के पाप होने से सन्तानों की हानि होती है। (६) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश षष्ठ स्थान में हो और अन्तर्दशेश पाप हो तो चोर-भय अथवा व्रणादि से पीड़ा एवं स्थान-परिवर्तन हो जाता है। इसी प्रकार यदि अन्तर्दशेश शुभ हो और उच्च, स्वगृही अथवा मूलत्रिकोणस्थ हो तो आनन्द की वृद्धि और सन्तान तथा मित्रादि की प्राप्ति होती है। (७) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश सप्तम स्थान में हो और अन्तर्दशेश पाप हो तो स्त्री, सन्तान और कुटुम्बी की मृत्यु, मित्र एवं धन की हानि और स्थानीय राज्याधिकारियों से भय होता है। इसी प्रकार यदि अन्तर्दशेश शुभ हो, और शत्रुगृही अथवा नीच का न हो तो उत्तम भोजन, वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है। (८) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश अष्टम स्थान में हो और पाप हो तो मृत्यु की शंका एवं भय, बुरा भोजन तथा चोर, अग्नि, राज-भय होता है; परन्तु यदि अन्तर्दशेश शुभ हो तो अन्तर्दशा के आरम्भ में आनन्द इत्यादि शुभ फल की प्राप्ति होती है और अन्तर्दशा के अन्त में दुःख तथा अशान्ति होती है। (९) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश नवमस्थ और पाप हो तो जातक पाप में रुचि रखनेवाला और धर्मविरुद्ध कार्यों का करनेवाला होता है। स्थान का परिवर्तन होता है और मानसिक रोग होते हैं; परन्तु यदि अन्तर्दशेश शुभ हो तो पुरस्कार-रूप में धन का आगमन और विवाहोत्सव एवं धार्मिक यज्ञादि होता है। (१०) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश दशम स्थान में हो और पाप हो तो जातक को नाना प्रकार का भय होता है। मान-हानि होती है एवं वह निकृष्ट कार्यों का करनेवाला होता है; परन्तु यदि अन्तर्दशेश शुभ हो तो उसे सुख और पोखरा, कुआँ, मन्दिर तथा धर्मशाला इत्यादि के निर्माण करने का सौभाग्य होता है। (११) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश ग्यारहवें स्थान में हो और पाप हो तो धन, सन्तान एवं मित्रों की प्राप्ति होती है और किसी स्थान में स्थाई रूप से रहने का समय आता है। यदि अन्तर्दशेश शुभ हो तो उत्तम प्रकार का सुख, बहु-धन-प्राप्ति और किसी राजनेता अथवा अधिकारी का अनुग्रह-लाभ होता है तथा स्त्री और सन्तानों के सुख की वृद्धि होती है। (१२) यदि महादशेश से अन्तर्दशेश द्वादश स्थान में हो और पाप हो तो धन-हानि, राज-भय, निकृष्ट स्थान में वास और किसी प्रकार का बन्धन होता है; परन्तु यदि अन्तर्दशेश शुभ हो तो धन का सुख और वस्त्राभूषण एवं वाहनादि की प्राप्ति होती है। साधारणतः अन्तर्दशेश के द्वादश में रहने का फल पैर, कलेजा एवं नेत्रों में रोग और स्वजनों से मतभेद तथा झगड़ा होता है। (१३) यदि जन्म-कुण्डली में एक ग्रह दूसरे ग्रह से सप्तमस्थ हो तो इन ग्रहों की परस्पर दशा-अन्तर्दशा में—अर्थात् एक ग्रह की महादशा और दूसरे ग्रह की अन्तर्दशा जब कभी आती है तब स्वयं जातक अथवा उसकी स्त्री किसी कठिन रोग से पीड़ित होती है और जातक की कुछ ऐसी क्षति होती है जिसकी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्ति पुनः असम्भव हो जाती है। (१४) यदि कोई ग्रह किसी दूसरे ग्रह से षष्ठस्थ अथवा अष्टमस्थ हो (स्मरण रहे कि एक ग्रह दूसरे से षष्ठस्थ होने से दूसरा ग्रह पहले से अष्टमस्थ होगा। इसी प्रकार यदि एक ग्रह से दूसरा ग्रह अष्टमस्थ हो तो दूसरा ग्रह पहले से षष्ठस्थ होगा) तो ऐसी परिस्थिति में इन दोनों की परस्पर दशा-अन्तर्दशा में जातक को झगड़ा, अपमान, लाञ्छना, देश-त्याग आदि अनिष्ट फल होते हैं। (१५) यदि महादशेश से अन्तर्दशावाला ग्रह द्वादश स्थान में हो अथवा अन्तर्दशावाले ग्रह से महादशेश ग्रह द्वितीयस्थ हो तो ऐसे ग्रह की महादशा में और उस द्वादशस्थ ग्रह की अन्तर्दशा में मुकद्मेबाजी, नाना प्रकार के अपव्यय अथवा व्यय और चित्त में अशान्ति होती है। (१६) दशानाथ अर्थात् जिस ग्रह की महादशा हो, उससे अन्तर्दशावाला ग्रह एकादश, चतुर्थस्थ, पञ्चमस्थ, नवमस्थ अथवा दशमस्थ हो तो शुभ फल होता है। (१७) दशानाथ जिस स्थान में उच्च का होता है उस स्थान में यदि कोई ग्रह बैठा हो तो उसकी अन्तर्दशा में शुभ फल होता है। जैसे उदाहरण कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य अथवा शुक्र अथवा बुध की अन्तर्दशा का फल अच्छा होगा। इस कारण कि शनि (जिसकी महादशा का विचार करना होगा) तुला में उच्च का होता है और उस तुला राशि में सूर्य, बुध और शुक्र बैठे हैं। अतः शनि को महादशा में सूर्य, बुध या शुक्र का अन्तर शुभदायी होगा। ऊपर के नियम में यह भी लिखा है कि यदि महादशेश से अन्तर्दशेश एकादशस्थ हो (जैसे उदाहरण कुण्डली में शनि से सूर्य बुध और शुक्र एकादशस्थ हैं) तो शुभ फल होगा। यदि दशेश और अन्तर्दशेश में तात्कालिक शत्रुता रहे तो फल अनिष्ट होता है; पर यदि तात्कालिक मित्रता होती है तो आधा ही अनिष्ट फल होता है। (१८) यदि अन्तर्दशेश पाप हो और महादशेश के साथ हो अथवा उससे द्वितीयस्थ या तृतीयस्थ हो तो दुःख और अशान्ति होती है; पर यदि शुभ हो तो सुख की वृद्धि होती है।

पञ्चम नियम—अर्थात् ग्रहावस्था द्वारा फलादेश

(१) ग्रहों की कई-एक प्रकार से अवस्था जानने की विधि इसी ग्रन्थ में अन्यत्र लिखी है। उन्हीं सब नियमों के अनुसार महादशेश एवं अन्तर्दशेश का भी फल निकालना होगा और उस प्रकार से जो महादशेश एवं अन्तर्दशेश का फल हो, उन दोनों फलों के निष्कर्ष (नतीजे) के अनुसार जो फल प्रतीत हो, वही ग्रहण करना होगा। (२ अन्तर्दशेश यदि अपने नवांश में हो तो बहुत आनन्द, स्थिर सम्पत्ति और ख्याति होती है। जातक सर्व-प्रिय होता है और उसे राजा अथवा अधिकारियों से धन की प्राप्ति भी होती है। (३) यदि अन्तर्दशेश पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उत्तम शास्त्रभाषी, बहुत ख्यातिवाला, जननायक, बुद्धिमान् और धनी होता है। (४) यदि महादशेश और अन्तर्दशेश दोनों पाप हों तो राज-भय, धन-हानि, स्त्री, सन्तान और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्धुजन को दुःख, नेत्र-रोग एवं पद-च्युति होती है। (५) यदि महादशेश और अन्तर्दशेश दोनों शुभ हों तो पद, वस्त्राभूषण और वाहनादि की प्राप्ति होती है। (६) यदि महादशेश पापयुक्त और अन्तर्दशेश शुभ हो तो अन्तर्दशा के आरम्भ में सुख और आनन्द एवं अन्त में दुःख तथा भय होता है। (७) यदि महादशेश शुभ हो और अन्तर्दशेश पाप हो तो अन्तर्दशा के आदि में दुःख एवं क्लेश और अन्त में सुख तथा आनन्द होता है। (८) जब दो ग्रह आपस में मित्र रहते हैं और बड्बली रहते हैं तब उन ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में शुभ फल होते हैं; परन्तु यदि उन दोनों ग्रहों में शत्रुता हो और निर्बल हों तो उनकी दशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट फल होते हैं। (९) यदि शुभ ग्रह त्रिकोणस्थ, एकादश अथवा द्वितीयस्थ हो तो उनकी दशा-अन्तर्दशा में नाना प्रकार के सुख होते हैं। (१०) यदि महादशेश उच्च, स्वक्षेत्री, मित्रगृही अथवा लग्न से उपचयगत हो अथवा उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो अथवा उस पर मित्र ग्रह की दृष्टि हो तो उस ग्रह की दशा-अन्तर्दशा सुखदायिनी होती है। (११) यदि किसी केन्द्र या कोण में उत्तम शुभ ग्रह बैठा हो और तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव में पाप ग्रह हों तो इन ग्रहों में जो बली अथवा उच्च का हो अथवा उपचय में हो, उसकी दशा-अन्तर्दशा में बहुत उत्तम फल होते हैं।

षष्ठ नियम—अर्थात् भिन्न-भिन्न महादशा में अन्तर्दशा-फल

सूर्य

र०, र०—सूर्य की महादशा में जब सूर्य की अन्तर्दशा आती है तब ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा युद्ध द्वारा धन की प्राप्ति होती है; परन्तु साथ-ही-साथ मन में अशान्ति रहती है एवं परदेश और जंगल आदि में भ्रमण करना होता है। र०, चं०— सूर्य की महादशा में जब चन्द्रमा की अन्तर्दशा आती है तो कुटुम्ब एवं मित्रों से धन की प्राप्ति होती है। मित्र और सज्जनों से प्रमाद रहता है। वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है। मान और सुख की वृद्धि, विरोधियों का नाश और विजय तथा पाण्डु रोगादि से पीड़ा होती है। यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो विशेष लाभ होता है और क्षीण चन्द्रमा की अन्तर्दशा में पाण्डु या संग्रहणी रोग होता है। र०, मं०—सूर्य की महादशा में जब मंगल की अन्तर्दशा आती है तब स्वर्ण, रत्न एवं वस्त्रों का लाभ, राजदरबार में प्रतिष्ठा गृह में मंगल-कार्य, पित्त-जनित रोगादि का संचार और अपने कुल के लोगों से विरोध होता है। र०, रा०—सूर्य की महादशा में जब राहु की अन्तर्दशा आती है तब कुटुम्ब और शत्रुओं से पीड़ा, पद-च्युति और मन में दुःख होता है। र०, बृ०—सूर्य की महादशा में जब बृहस्पति की अन्तर्दशा आती है तब उत्तम वस्त्रों का धारण, धन-धान्य के संचय की इच्छा, सत्कर्म में अभिरुचि, देवता एवं ब्राह्मणों में भक्ति, अच्छे लोगों से समागम, पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति और शत्रुओं का क्षय होता है। र०, श०— सूर्य की महादशा में जब शनि की अन्तर्दशा आती है तब सभी लोगों से शत्रुता, मित्रों से भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विरोध, राज एवं चोर का भय, आलस्य की वृद्धि, नीच प्रकार की वृत्ति (रोजगार) और कण्डु-रोग से पीड़ा होती है। र०, बु०—सूर्य की महादशा में जब बुध की अन्तर्दशा आती है तब बन्दीजन से पीड़ा, मन में अशान्ति, उत्साह-भंग, धन का अधिक व्यय, किंचित् मात्र सुख और रुधिर-प्रकोप से दद्रु, खुजली तथा कभी कुष्ट रोग से भी पीड़ा होती है। र०, के०—सूर्य की महादशा में जब केतु की अन्तर्दशा आती है तब मन में ताप, कुटुम्बियों आदि से विग्रह, शत्रु से भय, धन की हानि, पद-च्युति, कण्डु अथवा नेत्र-रोग से पीड़ा और अकाल-मृत्यु का भय होता है। र०, शु०—सूर्य की महादशा में जब शुक्र की अन्तर्दशा आती है तब समुद्र से पैदा होनेवाली वस्तुओं की प्राप्ति, बुरी स्त्रियों की संगति, विदेश-यात्रा, निष्फल वार्तालाप, घर में कलह, ज्वर का प्रबल आक्रमण, मस्तक तथा कान में पीड़ा और शूल-रोग होता है।

चन्द्रमा

चं०, चं०—चन्द्रमा की महादशा में जब चन्द्रमा की अन्तर्दशा आती है तब विद्या एवं संगीत में प्रेम, उत्तम वस्त्रादि की प्राप्ति, उत्तम मनुष्यों की संगति, शरीर में आरोग्य, राज का सचिव (अथवा सेना-नायक), अच्छी कीर्ति, परिवार सहित तीर्थ-यात्रा, भूमि, गौ और घोड़े की प्राप्ति, धन में वृद्धि तथा कभी-कभी वातरोग का भय होता है। चं०, मं०—चन्द्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आने पर संचित धन का नाश, स्थान का त्याग, भाई एवं मित्र से क्लेश, माता और पिता के कुल में पीड़ा, अनेक रोगों की उत्पत्ति, रुधिर एवं पित्त का प्रकोप एवं अग्नि-भय होता है। चं०, रा०— चन्द्रमा की महादशा में जब राहु की अन्तर्दशा आती है तब रोग एवं शत्रु से पीड़ा, बन्धुवर्ग का नाश, धन का व्यय, किंचित् मात्र सुख और भोजन-विकार से ज्वर का आक्रमण होता है। चं०, बृ०—चन्द्रमा की महादशा में जब बृहस्पति की अन्तर्दशा आती है तब धर्म की वृद्धि, धन-धान्य का लाभ, हाथी और घोड़े आदि वाहनों की प्राप्ति, वस्त्राभूषण का सुख, भोग और आनन्द की वृद्धि, राजसत्कार, प्रयत्न में सफलता तथा पुत्रोत्सव का सुख होता है। चं०, श०—चन्द्रमा की महादशा में जब शनि की अन्तर्दशा आती है तब माता की पीड़ा से मन में दुःख, अग्नि और चोर से भय, अनेक व्यसनों में अनुरक्ति, वाणी में कठोरता, विरोधियों से बकवाद एवं अनेक प्रकार के रोगों से स्त्री, सन्तान और भाई को पीड़ा होती है। चं०, बु०—चन्द्रमा की महादशा में जब बुध की अन्तर्दशा आती है तब माता की ओर के लोगों से धन की प्राप्ति, गौ, घोड़े, हाथी और भूमि की प्राप्ति, विद्वानों का सम्मान, सम्पूर्ण ऐश्वर्य की वृद्धि तथा उदारता के कारण ख्याति अथवा खिताब प्राप्त होता है। चं,० के०—चन्द्रमा की महादशा में जब केतु की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री को रोग, कुटुम्बियों का नाश, द्रव्य की हानि और पेट के रोग से पीड़ा होती है। चं०, शु०—चन्द्रमा की महादशा में जब शुक्र की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री द्वारा धन की प्राप्ति,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृषि, पशु, जलज पदार्थ और वस्त्रादि से सुख तथा माता के रोग से पीड़ा होती है (अर्थात् माता जिस रोग से पीड़ित हो, वही रोग माता के द्वारा जातक को भी होता है)। **चं०, र०**—चन्द्रमा की महादशा में जब सूर्य की अन्तर्दशा आती है तब राजा से गौरव एवं धन की प्राप्ति, राजा-तुल्य अधिकार की प्राप्ति, शत्रुओं का क्षय, सुख एवं उन्नति का लाभ तथा रोग से छुटकारा होता है।

मंगल

मं०, मं०—मंगल की महादशा में जब मंगल की अन्तर्दशा आती है तब सुहृदों से मतभेद, भाइयों से पीड़ा, राज-भय, सब कार्यों का विनाश, शारीरिक उष्णता की वृद्धि, पित्त और उष्णता-जनित रोग तथा व्रणादि से पीड़ा होती है। **मं०, रा०**—मंगल की महादशा में जब राहु की अन्तर्दशा आती है तब राजा, चोर, अग्नि, शस्त्र एवं शत्रु से भय, धन-धान्य का विनाश, गुरुजन एवं बन्धुओं की हानि, नाना प्रकार की आपत्ति और दुष्ट-कर्म की सिद्धि होती है। **मं०, बृ०** मंगल की महादशा में जब बृहस्पति की अन्तर्दशा आती है तब राजा एवं ब्राह्मणों से धन और पृथ्वी की प्राप्ति, आरोग्य, तेज की वृद्धि, पुत्र मित्र तथा वाहनों का सुख, श्रेष्ठ कर्म अर्थात् धर्म और तीर्थ में रुचि, सुख और विजय की प्राप्ति, जनता से समादर तथा श्लेष्मा-रोग का भय होता है। **मं० श०**—शनि की अन्तर्दशा जब आती है (यहाँ से महादशा का पुनः-पुनः लिखना छोड़ दिया जाता है) तब स्त्री, पुत्र और स्वजनों की बाधा तथा मरणान्तक शरीर-कष्ट, शत्रु, चोर एवं राजा से भय, धन की हानि, रोग से पीड़ा एवं अपने स्थान पर लौट जाने की यात्रा होती है। **मं० बु०**—बुध की अन्तर्दशा जब आती है तब वैश्यों से धन की प्राप्ति, गृह, गौ एवं अन्न की वृद्धि, शत्रु, चोर और राजा से भय, मन में क्लेश, स्त्री-पुत्रादि से वियोग तथा किसी प्रकार के उत्सव का भी सुख होता है। **मं०, के०**—केतु की अन्तर्दशा जब आती है तब पेट के रोग से सन्ताप, बन्धु एवं भाइयों से कष्ट, दुष्टजन से शत्रुता और शस्त्र तथा अग्नि से अकस्मात् पीड़ा होती है। **मं०, शु०**—शुक्र की अन्तर्दशा जब आती है तब बन्धुवर्ग से धन की प्राप्ति, स्त्री को वस्त्राभूषण का सुख, स्त्री-मात्र से घृणा तथापि स्त्रियों की गोष्ठी, धन का अधिक व्यय एवं विदेश में रहने से मन में चंचलता होती है। **मं०, र०**—सूर्य की अन्तर्दशा जब आती है तब धन का लाभ, राज-द्वार में सम्मान और विजय, वन-पर्वतादि में निवास की इच्छा, पितृकुल के लोगों से वैरभाव, गुरुजनों से अपवाद और रोग एवं स्वजनों से दुःख होता है। **मं०, चं०**—चन्द्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब उच्च पद की प्राप्ति, भूषण, धन और रत्नादि का लाभ, मित्र-समागम, आलस्य एवं निरन्तर उत्सव में प्रेम तथा श्लेष्मा अर्थात् कफ-रोग भी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहु

रा०, रा०—राहु की महादशा में जब राहु की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री को रोग और झगड़ा, बुद्धि का नाश, धन का क्षय, दूर-देशाटन, दुःख, विष, रोग और जहरीले सर्प से भय एवं दुष्ट जनों से व्यथा होती है। रा०, बृ०—जब वृहस्पति की अन्तर्दशा आती है तब रोग एवं शत्रु का नाश, राज-प्रीति धन-प्राप्ति, पुत्रोत्सव एवं उत्साह, ईश्वराराधन में रुचि एवं उत्तम शास्त्रों की ओर प्रीति होती है। रा०, श०—जब शनि की अन्तर्दशा आती है तब बन्धु और मित्रादि से दुःख, दूर देश का निवास, पद-च्युति एवं पित्त-जनित रोग से पीड़ा होती है। रा०, बु० बुध की अन्तर्दशा जब आती है तब मित्र एवं बन्धु, कलत्रादि से मिलाप, धन का आगमन और राज-प्रीति होती है। रा०, के०—केतु की अन्तर्दशा जब आती है तब धन एवं मान की हानि, सन्तान का नाश, पशुओं का मरण, नाना प्रकार के उपद्रवों का आक्रमण, चोर, अग्नि, शस्त्र एवं ज्वर से भय और विष तथा व्रण से दुःख एवं कलह होता है। रा०, शु०—शुक्र की अन्तर्दशा जब आती है तब विदेश में वाहन, छत्र, चामर, राज-चिह्न और नाना प्रकार की सम्पत्ति एवं स्त्री की प्राप्ति होती है; परन्तु रोग, शत्रु एवं कुटम्बियों से विरोध का भय होता है। रा०, र०—रवि की अन्तर्दशा जब आती है तब दान-धर्म-कर्म में रुचि, अनेक प्रकार के उपद्रवों का शमन, शत्रुओं से व्यथा, विष, अग्नि एवं शस्त्र का भय और छूआछूतवाली बीमारियों से पीड़ित होने का भय होता है। रा०, च०—चन्द्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब धन का आगमन, अन्न की प्राप्ति और उत्तम भोग का सौभाग्य होता है; किन्तु कुल-बन्धु का नाश, कलह से दुःख एवं जल से भय होता है। रा०, मं०—मंगल की अन्तर्दशा जब आती है तब नाना प्रकार के उपद्रवों का आक्रमण होता है और समस्त कार्यों के सम्पन्न करने में जातक थक जाता है तथा स्मरण-शक्ति का ह्रास, चोर, शस्त्र और राज-भय एवं पद-च्युति होती है।

बृहस्पति

बृ०, बृ०—वृहस्पति की महादशा में जब वृहस्पति की अन्तर्दशा आती है तब राज्यानुग्रह, उत्साह सब कार्यों में सफलता, विद्या एव ज्ञान की प्राप्ति, मान तथा गुणों का उदय और भाग्य एवं शारीरिक कान्ति की वृद्धि होती है। बृ०, श०—शनि की अन्तर्दशा जब आती है तब वेश्या-प्रसंग, मद्य-प्रेम, धन एवं यश का नाश, शरीर की दुर्बलता, द्वेषयुक्त बुद्धि, मन में दुःख, सन्तान द्वारा धन का अधिक व्यय और कार्यों का नाश होता है। बृ०, बु०—बुध की अन्तर्दशा जब आती है तब वेश्या और व्यवसाय से धन की प्राप्ति, राज्यानुग्रह से सुख-वृद्धि, सत्यकार्यों में अभिरुचि, देवताओं में भक्ति और वाहन, मन्दिर तथा स्त्री-पुत्रादि से सुख होता है; परन्तु विदेश-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्रा, चित्त में चंचलता और शिर-पीड़ा अथवा उन्माद का भय होता है। बृ०, के०—केतु की अन्तर्दशा जब आती है तब तीर्थ-यात्रा, धन और भूषणादि की प्राप्ति, गुरुजन एवं राजनेता के लिए क्लेश, शस्त्र एवं व्रण से भय, नौकरों से मतभेद और चित्त में व्यथा होती है। बृ०, शु०—शुक्र की अन्तर्दशा जब आती है तब धन, वाहन, छत्र और चामरादि राजचिन्हों की प्राप्ति, स्त्रीगण में पीड़ा, जनता से द्वेष, मित्रों से वियोग, वायु तथा कण्डूजनित रोग और कलह एवं अनेक व्यसनों की ओर मन की अभिरुचि होती है। मतान्तर से यह भी कहा जाता है कि शुक्र की अन्तर्दशा में धर्मादि क्रिया में मन की प्रवृत्ति, उत्तम विद्या, वस्त्र एवं अन्न का संग्रह और विद्वानों की संगति का सुख होता है। बृ०, र०—सूर्य की अन्तर्दशा जब आती है तब पुत्र, धन और वस्तुओं की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, उत्साह एवं सुख की वृद्धि, आरोग्य, राज-पक्ष से अधिकार एवं मान का लाभ तथा किसी पदवी के मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है। बृ०, चं०—चन्द्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब राज्यानुग्रह से सुखों की वृद्धि, स्त्रीगण द्वारा ऐश्वर्य की प्राप्ति, उत्तम वस्त्राभूषणादि का सुख तथा राजचिन्ह एवं उत्तम विद्या का योग होता है। बृ,०, मं०—मंगल की अन्तर्दशा जब आती है तब संग्राम में विजय, यश की प्राप्ति, प्रताप का उदय, परन्तु उत्साहहीनता, ज्वर-पीड़ा, शिर और गुदा में रोग, शारीरिक बल का क्षय तथा शत्रुओं से भी भय होता है। बृ०, रा०—राहु की अन्तर्दशा जब आती है तब नाना प्रकार के क्लेश से भय, सब प्रकार के उपद्रवों का उदय, धन का ह्रास और और शत्रु एवं राज-भय भी होता है।

शनि

श०, श०—शनि की अन्तर्दशा जब आती है तब क्लेश, रोग से पीड़ा, दम्भ और ईर्ष्या के कारण नाना प्रकार का शोक एवं ताप तथा राज-पक्ष और चोर से धन-धान्य का नाश होता है। श०, बु०—बुध की अन्तर्दशा जब आती है, तब धन, यश एवं सुख की वृद्धि, सत्कर्म और आचार के बरतने से लाभ, कृषि एवं वाणिज्य की प्राप्ति, स्त्री-पुत्रादि से सुख, राजदरबार में प्रतिष्ठा की प्राप्ति तथा विद्वानों से आनन्द मिलता है; परन्तु उसे कफ का रोग होता है। श० के०—केतु की अन्तर्दशा जब आती है तब नीच एवं दुष्ट मनुष्यों से कलह और बुरे स्वप्न एवं वात-पित्त-जनित रोग से भय तथा स्त्री पुत्र से विग्रह होता है। श०, शु०—शुक्र की अन्तर्दशा जब आती है तब स्त्री एवं धन की प्राप्ति, कृषि आदि से सुख, बन्धुजन से स्नेह, जनता से प्रीति, पुत्र से सुख, ग्राम एवं देश की प्राप्ति, यश का प्रकाश और शत्रुओं का नाश होता है। श०, र०—सूर्य की अन्तर्दशा जब आती है तब स्त्री, पुत्र और बन्धु का विनाश, शरीर को क्लेश, धन की हानि शत्रुओं की उत्पत्ति, चोर एवं राजा से पीड़ा, मन को क्लेश और जठराग्नि एवं नेत्र-रोग होता है। श०, चं०—चन्द्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब स्त्री का हरण अथवा स्त्री की मृत्यु, बन्धु-वर्ग से मतभेद, निरन्तर कलह,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुख की हानि और वात-रोग से पीड़ा होती है; परन्तु धन का आगमन होता है। श०, मं०—मंगल की अन्तर्दशा जब आती है तब शरीर में विकलता, कोई कठिन रोग, स्थान-च्युति या अपने अपने स्थान पर लौटकर आना, नाना प्रकार का भय, स्त्री-पुत्रादि का वियोग, मित्र एवं भाइयों को पीड़ा और प्रतिष्ठा की हानि होती है। श०, रा०—राहुकी अन्तर्दशा जब आती है तो कलह, मनस्ताप, नेत्र-पीड़ा, खाज खुजली कुष्ठादि व्याधियों से शरीर कष्ट, पुत्र-द्वेष, धन का अपव्यय, राजभय स्वजनों का उपद्रव, विष अग्नि चोर एवं शत्रुओं का प्रकोप, गृह और खेती की हानि, बन्धु-वियोग और अपना विनाश होता है। कुण्डली में राहु शुभ हो तो दशा के पूर्वार्ध में देव ब्राह्मण में भक्ति, राजनेताओं से मैत्री सम्मान एवं सहायता प्राप्त होती है तथा गृहादि सुख-संपदा का लाभ होता है; किन्तु दशा के मध्य-काल में राज-भीति, पुत्र मित्रादि से विरोध और धन-धन्यादि का नाश होता है। श०, गु०—गुरु की अन्तर्दशा जब आती है तो सर्वकार्य की सिद्धि, राजपक्ष से धन वाहन भूषण सम्मानादि की प्राप्ति, देव और गुरु में भक्ति, विद्वानों का संग, पत्नी-पुत्र-सुख, कल्याण और विभव प्राप्त होता है। कुण्डली में गुरु अशुभ होने से अपने सगे-सम्बन्धियों का मरण, धन-धान्य का नाश, राजकीय अधिकारियों से वैर विरोध, कार्य हानि, विदेश-गमन और कुष्ठादि रोग का भय होता है। बन्धु-विद्वेष, मानसिक व्यथा, कलह, पदच्युति, कुभोजन, राजदण्ड से धन की क्षति, बन्धन तथा स्त्री पुत्र को कष्ट-पीड़ा होती है।

बुध

बु०, बु०—बुध की महादशा में जब बुध की अन्तर्दशा आती है तब सुन्दर वस्त्र और गृह की प्राप्ति बन्धुवर्ग एवं ब्राह्मणों से धन की प्राप्ति तथा सब कार्यो में अर्थसिद्धि होती है। बु०, के०—केतु की अन्तर्दशा जब आती है तब बन्धुजन से पीड़ा, मनस्ताप, सुख की हानि, शत्रु से भय और कार्यो में विघ्न होता है। बु०, शु०—शुक्र की अन्तर्दशा जब आती है तब जातक ईश्वर, गुरु ब्राह्मण एवं अतिथि आदि का आदर-सत्कार करता है। दानधर्मादि की ओर प्रीति और धन, वस्त्राभूषणादि का लाभ होता है। किसी आचार्य का कथन है कि अनेक परिश्रम द्वारा एवं सिर के रोग से जातक दुःखी होता है। बु०, र०—सूर्य की अन्तर्दशा जब आती है तब हाथी घोड़े और सवारी आदि वाहनों से सुख, धर्मकार्य में अभिरुचि होती है और राज-सम्मान मिलता है; परन्तु नेत्र-रोग होता है और अपने स्थान से विचल हो जाता है। बु०, चं०—चन्द्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब रोग से पीड़ा, शत्रुओं से दुःख, समस्त कार्यों की हानि, वाहन और चतुष्पदों से हानि और भय, मृत संतान का जन्म, अनेक विवादों की उत्पत्ति, पित्त-प्रकोप एवं खुजली आदि नाना रोगों से पीड़ा होती है। बु०, मं०—मंगल की अन्तर्दशा जब आती है तब पुण्यादि कर्म एवं यश की वृद्धि, राजपक्ष का अनुग्रह, गुदा एवं नेत्र-रोग अथवा वातरोग का भय (परन्तु रोग से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विमुक्त होना शीघ्र संभव) होता है। धन का अधिक व्यय एवं स्त्री-पुत्रादि की निष्ठुरता होती है। बु०, रा०—राहु की अन्तर्दशा जब आती है तब मित्र एवं बन्धुजन से धन की प्राप्ति, विद्या एवं सुख-लाभ का सौभाग्य, राजपक्ष का अनुग्रह, मस्तक, पेट और नेत्र-रोग से पीड़ा, अग्नि, विष और जल से भय तथा कभी-कभी धन-हानि एवं श्री-नाश होता है। बु०, बृ०—बृहस्पति की अन्तर्दशा जब आती है तब धन और सन्तान की वृद्धि, गुरुजन एवं बन्धुजन से द्वेष, माता-पिता से क्लेश, राजमन्त्रित्व और उत्तम कार्य में अनुराग, परन्तु रोगादि का भय होता है। बु०, श०—शनि की अन्तर्दशा जब आती है तब धन एवं सत्कर्म की वृद्धि, किसी साधारण या बड़े व्यक्ति से सुख की प्राप्ति और कृषि की हानि होती है। जातक कोमलस्वभाव, प्रतापी एवं वातव्याधि से पीड़ित होता है।

केतु

के०, के०—केतु की महादशा में जब केतु की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री-पुत्र के मरण का भय, धन एवं सुख का विनाश और शत्रुओं से भय होता है। के०, शु०—शुक्र की अन्तर्दशा जब आती है तब स्त्री-पुत्र को रोग अथवा उनसे कलह, मित्र एवं बंधुजन का नाश, ज्वर और अतिसार आदि से पीड़ा तथा कन्या का जन्म सम्भव होता है। के०, र०—सूर्य की अन्तर्दशा जब आती है तब शारीरिक पीड़ा, ज्वर एवं कठिन-से-कठिन रोग का आक्रमण, किसी श्रेष्ठ जन की मृत्यु, विदेश-गमन, स्वजन-विरोध, खुशी में हानि और कार्यों में विघ्न होता है। के०, चं०—चद्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब स्त्री, संतान एवं नौकरों में आलस्य का बाहुल्य, धन-धान्य का विनाश, पुत्र शोक और मन में संताप होता है। के०, मं०—मंगल की अन्तर्दशा जब आती है तब पुत्र, स्त्री, छोटे भाई एवं अपने कुल के लोगों से द्वेष-भाव, रोग, सर्प और राजपक्ष से पीड़ा तथा बंधु का नाश होता है। के०, रा०—राहु की अन्तर्दशा जब आती है तब राज एवं चोर से भय, समस्त कार्यों का नाश दुष्ट जन से बकवाद एवं दुःख होता है। के० बृ०—बृहस्पति की अन्तर्दशा जब आती है तब ईश्वर और गुरुजन में प्रीति, राज्यानुग्रह, उत्तम स्वास्थ्य तथा पुत्र एवं भूमि का लाभ होता है। के० श०—शनि की अन्तर्दशा जब आती है तब मन में सन्ताप एवं भय, अपने बन्धुजन से अनबन, स्वदेश का त्याग दुश्मनी से विग्रह में अंग-भग होने का भय और धनहानि एवं पद-च्युति होती है। के०, बु०—बुध की अन्तर्दशा जब आती है तब बन्धु-मित्रादि-समागम, स्त्री पुत्र को धन का आगमन, विद्या से सुख, धन की प्राप्ति होती है।

शुक्र

शु०, शु०—शुक्र को महादशा में जब शुक्र की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री, धर्म, वस्त्र एवं शय्या की प्राप्ति, धर्म और धन का सुख, यश की वृद्धि तथा शत्रुओं का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाश होता है। शु०, र०—सूर्य की अन्तर्दशा जब आती है तब राजभय, बन्धुजन से कलह, धन, कृषि और पशु आदि की हानि, शत्रु की वृद्धि तथा सिर, कपाल, नेत्र, छाती एवं पेट में रोग होता है। शु०, चं०—चन्द्रमा की अन्तर्दशा जब आती है तब अग्निहोत्रादि उत्तम कार्य, देवतादि के पूजन में रुचि, संग्राम में विजय, हाथी अथवा स्त्री-पक्ष से धन का लाभ, परन्तु शत्रुओं से पीड़ा, सुख की बहुत अल्पता, सिर और नख में पीड़ा, पित्त-प्रकोप, संग्रहणी, गुल्म एवं स्त्री-प्रसंगादि द्वारा रोग का आक्रमण तथा व्याघ्र आदि जीवों से भय होता है। शु०, मं०—मंगल की अन्तर्दशा जब आती है तब स्त्री एवं भूमि की प्राप्ति, धनागम और उत्साह की वृद्धि, परन्तु पित्त-रोग एवं व्रणादि से विकलता तथा उत्साह-भंग होता है। शु०, रा०—राहु की अन्तर्दशा जब आती है तब बन्धुजन से द्वेष, मित्रों से क्षति, अग्नि-भय और किसी ऐसे काले पदार्थ की प्राप्ति होती है जो लाभदायक होता है। शु०, बृ०—बृहस्पति की अन्तर्दशा जब आती है तब धन, वस्त्राभूषण की प्राप्ति, धर्माचारनिरति से शुभ, अनेक कार्यों की सिद्धि और अधिकार की प्राप्ति होती है; परन्तु स्त्री तथा सन्तान को क्लेशकर रोग होना सम्भव होता है। शु०, श०—शनि की अन्तर्दशा जब आती है तब वृद्धा स्त्रियों के साथ सम्भोग, शत्रुओं का नाश, धन, भूमि और पृथ्वी की प्राप्ति, मित्रों की उन्नति तथा ग्राम अथवा पुर का आधिपत्य होता है। शु०, बु० बुध की अन्तर्दशा जब आती है तब सन्तान एवं मित्रों के सुख और सम्मान की वृद्धि राज-अनुग्रह द्वारा भूमि-लाभ, वृक्ष, फल एवं चतुष्पदों से धन-लाभ तथा नीरोगता होती है। शु०, के०—केतु की अन्तर्दशा जब आती है तब झगड़ा, बन्धु-विछोह, शत्रु से पीड़ा, मन में अशान्ति और धन में कमी होती है।

प्रत्यन्तर्दशा-फल

सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्यादि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(सू० सू०)—सूर्य की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब उद्वेग, विशेष धन-हानि, स्त्री-कष्ट और ब्राह्मणों (बुद्धिजीवियों) के साथ विरोध होता है।

देशत्याग, राजभय, कुक्षिरोग, धनक्षय, अग्निदाह, और कुष्ठ रोग होता है।

(सू० चं०)—सूर्य की अन्तर्दशा में जब चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब उद्वेग, कलह, मनोव्यथा, धन का विचित्र तरीके से अपहरण और मणि-मुक्तादि उत्तम पदार्थों का विनाश होता है।

सज्जनों का अनुसरण, स्त्री-पुत्र और धन का सञ्चय, वात-पित्त की शरीर में हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सू० मं०)—सूर्य की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब राजभय, शस्त्रभय, बन्धन, शत्रु से पराजय और अपघात होता है।

स्थानभ्रंश, मनःसंताप, परिजनों एवं धन का नाश, अपस्मार(मृगी)रोग से पीड़ा होती है।

(सू० रा०)—सूर्य की अंतर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब कफ-व्याधि, शस्त्रभय, धन-हानि, राजभंगादि महाभय से व्यक्ति ग्रस्त होता है।

चोर, अग्नि तथा विष का भय, राजकोप से धन का नाश, बन्धु-हानि और सब प्रकार से विपत्ति होती है।

(सू गु०)—सूर्य की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब शत्रु का नाश, विजय-प्राप्ति, उन्नति, वस्त्र, स्वर्णभूषण, वाहन और गोधन आदि का लाभ होता है।

स्त्री पुत्र और मित्र की प्राप्ति, धनागम, सौभाग्य का लाभ होता है।

(सू० श०)— सूर्य की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब धन-हानि, पशु-पीड़ा, महोद्वेग और रोग तथा अनेक अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

राजकोप, बन्धु-नाश, महाभय, आँखों में रोग तथा शिर में पीड़ा होती है।

(सू० बु०)– सूर्य की अन्तर्दशा मे जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब धर्म, विद्या और धन का लाभ बन्धु-बान्धव का समागम, सुभोज्य पदार्थों की प्राप्ति और राज-नेताओं से आदर मिलता है।

मान-सम्मान, सौभाग्य, पुत्र-प्राप्ति तथा क्रय-विक्रय (व्यापार) से सम्पत्ति का अर्जन होता है।

(सू० के०)— सूर्य की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब प्राण-संकट महती धन-हानि, राजभीति और विग्रह होता है।

स्त्री, बन्धु, स्वामी, प्रजा तथा गाय, भैंस आदि पशुओं का विनाश होता है।

(सू० शु०)—सूर्य की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब सम रूप से (सुख-दुःख समान रूप में) समय व्यतीत होता है; लाभ कम होता है और थोड़ी ही सुख-सम्पत्ति प्राप्त होती है।

वाहन का लाभ, राजकीय सेवा, वैभव की प्राप्ति, दान धर्म में प्रेम तथा लक्ष्मी प्राप्त होती हैं।

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में चन्द्रादि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(चं० चं०)—चन्द्र की अन्तर्दशा में जब चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब भोज्य-पदार्थ, धन-सम्पत्ति की प्राप्ति, राजकीय नेताओं और अधिकारियों से आदर, महान् सुख और लाभ तथा स्त्री-सुख होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमि-लाभ, विवाह, पुण्य की वृद्धि, सेनापति या अन्य बड़े अधिकार की प्राप्ति होती है।

(चं० मं०)—चन्द्रमा की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बुद्धि-विवेक का विकास, लोक में मान-सम्मान, बन्धु-बान्धवों से सुख, धनागम, किन्तु शत्रु का भय भी होता है।

शत्रुओं से उपद्रव की आशंका, मित्रों-बान्धवों का समागम और महाभय होता है।

(चं० रा)—चन्द्र की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब घर में कल्याण, राजकीय वित्त की प्राप्ति होती है, अशुभ राहु हो तो अपमृत्यु का भय होता है।

सर्प का भय, जहरीले रोग, शत्रुओं से पीड़ा, धन का नाश, प्रियजनों और बान्धवों से विरोध होता है।

(चं० गु०)—चन्द्र की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब वस्त्र-लाभ, तेजोवृद्धि, सदगुरु से तत्त्वज्ञान की प्राप्ति तथा राजकीय अधिकारालंकरण की प्राप्ति होती है।

मान-सम्मान की प्राप्ति, देवताओं, ब्राह्मणों का सत्कार, अपनी अभीष्ट वस्तुओं तथा भूमि का लाभ होता है।

(चं० श०)—चन्द्र की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब दुर्दिन में पीड़ा, विशेषत: वायु-पित्त-विकार से कष्ट, धन-धान्य और यश की हानि होती है।

झगड़ा, शरीर में पीड़ा, नाना प्रकार की चिन्ताएँ, प्रियजनों से घोर कलह होता है।

(चं० बु०)—चन्द्र की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब पुत्र-जन्म, घोड़ा आदि वाहन की प्राप्ति, विद्या-लाभ, महती उन्नति और सफेद वस्त्र एवं अन्न का लाभ होता है।

ब्राह्मणत्व में आस्था, स्त्री, पुत्र, भूमि और सम्पत्ति की प्राप्ति, मणि-मुक्ता, वस्त्र आदि का लाभ होता है।

(चं० के०)— चन्द्र की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब ब्राह्मण के साथ कलह, संघर्ष, अपमृत्यु, सुख की हानि और सर्वत्र कष्ट प्राप्त होता है।

भूत-प्रेतों की बाधा, सर्प का भय, स्त्री-पुत्र आदि का वियोग, वशीकरण की शक्ति होती है।

(चं० शु०)—चन्द्र की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब धन-लाभ, विशेष सुख की प्राप्ति, कन्या का जन्म, मिष्ठान्न-भोजन और सब लोगों से प्रेम होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूँगा, मोती, मणि आदि दिव्य आभूषणों की प्राप्ति, ज्ञान-लाभ और महत्त्व में वृद्धि होती है।

(चं० सू०)—चन्द्र की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब अन्न, वस्त्र, सुख की प्राप्ति, शत्रुहानि और सर्वत्र विजय होती है।

जड़ता, मानहानि, राजकोप, धन का नाश, कार्य की हानि तथा परदेशवास होता है।

मंगल की अन्तर्दशा में भौमादि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(मं० मं०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब शत्रु-भय, घोर कलह, अकस्मात झगड़ा, रक्तस्राव और अपमृत्यु होती है।

बन्धुनाश, महाक्लेश, स्त्रीनाश, शत्रु का भय, परस्त्री-ग्रहण होता है।

(मं० रा०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बन्धन, राज्य (अधिकार) और धन का नाश, अरुचिकर भोजन और शत्रु से कलह होता है।

क्षुद्र उपद्रव, क्षुद्र-दोष, धन-धान्य का विनाश, पशुओं को पीड़ा होती है।

(मं० गु०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बुद्धिनाश, दुःख, सन्ताप, कलह और सभी मनः चिन्तित कार्य विफल होते हैं।

प्रभुता, स्थिरबुद्धि, राज-सेवा में तत्परता, सब प्रकार के साधन और सम्पत्ति का लाभ होता है।

(मं० श०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब स्वामी का नाश, कष्ट-पीड़ा, धन-हानि, शत्रुभय, विकलता, कलह और त्रास होता है।

शूद्रों या स्त्रियों से झगड़ा, देशत्याग, धनक्षय, कदन्न और निगड (बन्धन) की प्राप्ति होती है।

(मं० बु०)—मगल की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बुद्धिनाश, धनहानि, शरीर में ज्वर, वस्त्र, अन्न और मित्रों का नाश होता है।

मनः सन्तोष, राजपक्ष से सत्कार, बन्धुओं से सन्तोष, सुवर्ण और मुक्ताओं की प्राप्ति होती है।

(मं० के०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब आलस्य, शिर में पीड़ा, पाप, रोग, अपमृत्यु, राजभय और शस्त्राघात होता है।

गाय आदि पशुओं की हानि, खेती में अन्न का अभाव और अन्त में इसी चिन्ता से मृत्यु का भय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(मं० शु०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब चांडालादि निम्न जाति से कष्ट, त्रास और राज्य एवम् शस्त्र से भय, अतिसार और वमन रोग होता है।

मुक्ता और आभूषणों की प्राप्ति, देश और ग्राम का आधिपत्य, कुलटा स्त्रियों से संसर्ग और उससे व्याधि का भय होता है।

(मं० सू०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब भूमि, धन-सम्पत्ति का लाभ, वृद्धि, सन्तोष एवं मित्र-लाभ और सर्वत्र सुख की प्राप्ति होती है।

नेत्रों में रोग, शिर में व्यथा, कुक्षिरोग और गुप्तांगों में रोग होते हैं।

(मं० चं०)—मंगल की अन्तर्दशा में जब चन्द्रमा की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब दक्षिण दिशा से लाभ, श्वेत वस्त्राभूषण की प्राप्ति और सभी कार्यों की सिद्धि होती है।

लोक में कीर्ति का विस्तार, लोक-कल्याण की प्रवृत्ति, सब प्राणियों में सम भाव होता है।

राहु की अन्तर्दशा में राहु आदि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(रा० रा०)—राहु की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बन्धन, बहुधा रोग का आक्रमण, बाहु में आघात, मित्र-भय और अकस्मात व्याधि उत्पन्न हो जाती है।

जलयान से भय, गिरने से मृत्यु, कार्य में सन्देह या कार्य की हानि और वियोग होता है।

(रा० गु०)—राहु की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब सर्वत्र मान-लाभ, हाथी-घोड़ा आदि वाहन तथा धन का लाभ, राज-सम्मान या अधिकार की प्राप्ति होती है।

देवपूजा में तत्परता, लक्ष्मी की प्राप्ति, कार्यसिद्धि, धनागम और नित्य गुरुजनों का सम्मान होता है।

(रा० श०)—राहु की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब कठोर कारावास, सुख की हानि, महाभय और प्रायः वातव्याधि से पीड़ा होती है।

नीच जन से कलह, दुराचार को सहन करने के लिए बाध्यता, गलत व्यापार से वस्तुओं की हानि होती है।

(रा० बु०)—राहु की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब सर्वत्र अनेक प्रकार से लाभ, विशेषतः स्त्री द्वारा और परदेश से विशेष सिद्धि लाभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वजनों का वियोग, धन-धान्य की वृद्धि, राजपक्ष से प्रियत्व प्राप्त होता है।

(रा० के०)—राहु की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बुद्धि का ह्रास, शत्रुभीति, कार्य में विघ्न, धनहानि, महान भय, सर्वत्र कलह और उद्वेग होता है।

शूरता, मानहानि, पुत्रनाश, प्रजानाश, दूसरों के द्वारा किए गये उपद्रवों से पीड़ा होती है।

रा० शु०)—राहु की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब योगिनी से या राजपक्ष से भय, खराब भोजन, स्त्री का नाश, कुल में शोक और घोड़े आदि वाहन की हानि होती है।

विदेशों से वाहन, छत्र-चामर एवं वैभव की वस्तुएँ प्राप्त होती हैं और दिव्य स्त्री से सम्भोग के अवसर मिलते हैं।

(रा० सू०)—राहु की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब ज्वर-प्रकोप, शत्रु आदि से भय, पुत्र-पौत्र आदि को कष्ट, पीड़ा, अपमृत्यु और प्रमाद होता है।

दान-धर्म में प्रीति, शरीर में उपद्रवों का शमन और सांसारिक विरह की पीड़ा होती है।

(रा० चं०)—राहु की अन्तर्दशा में जब चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब उद्वेग, कलह, चिन्ता, मान-हानि, महाभय और पिता को शारीरिक कष्ट होता है।

नित्य सुख भोगनेवाला, सन्मार्ग में प्रवृत्त, परोपकार करनेवाला और उससे सिद्धि पानेवाला होता है।

(रा० मं०)—राहु की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब भगंदर रोग, रक्त-पित्त से कष्ट, पीड़ा, धन की हानि और महा उद्वेग होता है।

लोक में उपद्रव करने की प्रवृत्ति, अपने कार्य में बुद्धिभ्रम, चित्तभ्रान्ति का दोष होता है।

गुरु की अन्तर्दशा में गुरु आदि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(गु० गु०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब स्वर्ण-लाभ, धन-धान्य की वृद्धि तथा कल्याणकारी फल का उदय होता है। घर में अनेकशः वृद्धि और भाग्योदय होता है।

नीरोगता, सत्कार, कान्ति की वृद्धि, सुवर्ण-प्राप्ति, राजपक्ष से सम्मान-लाभ, पुत्र-पौत्रादि का सुख होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(गु० श०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब गौ आदि पशुधन एवं भूमि का लाभ, वाहन की वृद्धि, अन्नादि का संचय एवम् सर्वत्र सुख का साधन प्राप्त होता है।

सब कार्यों में बुराई, दूसरों की प्रभाववृद्धि से पराभव, दूसरों के कार्य करने की प्रवृत्ति होती है।

(गु० बु०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब विद्या, वस्त्र, मोती आदि रत्न एवं नूतन ज्ञान का लाभ और मित्रों से स्नेह-सम्मिलन होता है।

विदेशों से वाहन को प्राप्ति, विवाह, उपनयन, व्यापार में लाभ होता है।

(गु० के०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब जल से भय, चोरी की सम्भावना, बन्धन, कलह और अपमृत्यु का भय होता है।

विदेशों से झगड़ा-झंझट, बन्धुनाश, देवता और ब्राह्मणों से द्वेष होता है।

(गु० शु०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब अनेक प्रकार से धन-लाभ, सुवर्ण, वस्त्राभूषण, कुशल-क्षेम, सन्तोष की प्राप्ति होती है।

कपूर-कस्तूरी आदि सुगन्धित वस्तुओं की प्राप्ति, त्याग और भोग में रुचि होती है।

(गु० सू०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब राजपक्ष से लाभ या मित्र पिता माता से लाभ और सर्वत्र आदर-सम्मान प्राप्त होता है।

रोगादि से पराभव, अधिक अवस्था की स्त्री से समागम, स्त्री-पुत्रादि द्वारा सेवा होती है।

(गु० चं०) गुरु की अन्तर्दशा में जब चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब सब दुःखों का अन्त होकर धन, वाहन की प्राप्ति का सुयोग मिलता है और सर्व कार्य सिद्ध होने लगते हैं।

भूत-प्रेतों के उपद्रवों का संसर्ग, भूषणों की हीनता, व्याधिनाश, नित्य भक्ति में रुचि होती है।

(गु० मं०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब शस्त्र-भीति, गुदा में पीड़ा, अग्निमांद्य, अजीर्ण रोग और शत्रु से विशेष पीड़ा होता है।

बड़े लोगों की सेवा, विवाह आदि कृत्य, खोदना आदि से पैर में चोट, शस्त्र का भय और मदन की पीड़ा होती है।

(गु० रा०)—गुरु की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब चांडालादि निम्नजातिवालों से विरोध, धन-हानि और नाना प्रकार का भय होता है, शत्रु और व्याधि से भी कष्ट होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक जनों से द्वेष, धन से द्वेष, देवताराधन तथा वैभव से च्युति, लोगों से अपमान, दूसरों की आशा पर जीना होता है।

शनि की अन्तर्दशा में शनि आदि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(श० श०)--शनि की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब शारीरिक पीड़ा, झगड़ा-झंझट एवं निम्न जातियों से भय, विदेश की यात्रा और दुःख होता है।

देशत्याग, जंगली जीवों से भय, कुक्षिरोग, धननाश, अग्निदाह और कुष्ठ रोग होता है।

(श० बु०)—शनि की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बुद्धिह्रास, कलह, भय, भोजनादि का कष्ट, धन-हानि और शत्रु से भय होता है।

सज्जनों का अनुसरण, स्त्री-पुत्र और धन का संचय, वात-पित्त की हानि होती है।

(श० के०)--शनि की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब शत्रु द्वारा वध-बन्धन या तेजोहानि, क्षुधा, चिन्ता भय और त्रास की वृद्धि होती है।

स्त्रीनाश, बन्धुनाश, धननाश, सन्तान का क्षय, गाय-भैंस आदि पशुओं का नाश होता है।

(श० शु०)--शनि की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब मनोवांछित वस्त्र का लाभ, आत्मीय जन का कल्याण, मानवोचित कृति से लाभ होता है।

वाहन, छत्र-चंवर आदि वैभव से युक्त, राज्य का लाभ, दान-धर्म में प्रीति, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

(श० सू०)--शनि की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब राजकीय तेज एवम् अधिकार की प्राप्ति, किन्तु अपने घर में कलह और ज्वर आदि से पीड़ा होती है।

धननाश, राजकोप, बन्धुनाश, महाभय, आँखों में रोग, मस्तक में पीड़ा होती है।

(श० चं०)--शनि की अन्तर्दशा में जब चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब निर्मल बुद्धि, किसी बड़े कार्य का आरम्भ, कान्ति की कमी, अधिक खर्च, अनेक स्त्रियों से समागम होता है।

सज्जनों का अनुसरण, स्त्री-पुत्र और धन का संचय, वात-पित्त की हानि होती है।

(श० मं०)--शनि की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब कान्ति एवम् तेज की हानि, पुत्र-घात, अग्निभय, शत्रु-भीति और वात-पित्त से पीड़ा होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान-भ्रंश, मन को संताप, परिवार और धन की हानि, अपस्मार (मिरगी) रोग से पीड़ा होती है।

(श० रा०)—शनि की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब वस्त्र और भूमि की हानि, परदेश-गमन और मृत्यु-भय होता है।

चोर, अग्नि और विष का भय, राजकोप, धननाश, बन्धुहानि और आत्म-हत्या का भय होता है।

(श० गु०)—शनि की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब घर में स्त्रीकृत छल-छिद्र निरीक्षण में असमर्थता, कलह और उद्वेग होता है।

स्त्री-प्राप्ति, पुत्र-प्राप्ति, मित्र-प्राप्ति, धन-लाभ, सौभाग्य और वस्त्र-लाभ होता है।

बुध की अन्तर्दशा में बुधादि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(बु० बु०)—बुध की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब बुद्धि, विद्या और धन वस्त्रादि का लाभ एवम् महत सुख प्राप्त होता है।

शास्त्रों और धर्म का ज्ञान, सत्कार, गुरुजनों की संगति और धन-धान्य की समृद्धि होती है।

(बु० के०)—बुध की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब कदन्न की प्राप्ति, उदर-रोग, कामला, पीलिया रोग और रक्त-पित्त-जन्य विकार से पीड़ा होती है।

अकाल मृत्यु, सौभाग्य और धन का नाश, राजकोप और महाभय होता है।

(बु० शु०)—बुध की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब उत्तर दिशा से लाभ, पशु-हानि, जातक में अधिकार-लिप्सा जागृत होती है अथवा वह अधिकारी वर्ग से आसक्त होता है।

ज्ञान-सिद्धि, पाण्डित्य, नास्तिकता, राजाओं (श्रेष्ठ जनों) को वैवाहिक लाभ होता है।

(बु० सू०)—बुध की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब कान्ति की हानि, मन्दाग्नि आदि शारीरिक व्याधि और चित्त में अशान्ति होती है।

स्त्री-पुत्र आदि का शोक, परस्त्री के कारण धन का नाश, मित्र की मृत्यु होती है।

(बु० चं०)—बुध की अन्तर्दशा में जब चन्द्रमा की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब स्त्री धन-सम्पत्ति का लाभ, कन्या-जन्म और सर्वत्र सुख प्राप्त होता है।

अन्नदान और वस्त्राभूषण-दान, मन्दिरों में देवाराधन, भोजनादि का सुख प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बु० मं०)—बुध की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब धर्म-बुद्धि और धन की वृद्धि, चोर, अग्नि और ब्राह्मण से पीड़ा, शस्त्राघात से वस्त्र रक्त-रंजित होता है।

ऊँचे से गिरने का भय, शरीर और मस्तक में पीड़ा, स्थान-भ्रंश, मृत्यु या अन्य महाभय होता है।

(बु० रा०)—बुध की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब अकस्मात स्त्री से कलह और आकस्मिक भय, राजपक्ष तथा शस्त्र से भी भीति होती है।

शोक, दु:ख, कलह, शरीर के किसी अङ्ग में चोट, ज्वर, घाव, चोर और विष का भय होता है।

(बु० गु०)—बुध की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब राज्य या प्रशासनाधिकार की प्राप्ति, राजसम्मान, उपाधि, अन्न-वस्त्रादि की प्राप्ति होती है।

यज्ञ, अनुष्ठान, अन्नदान आदि कृत्यों में प्रवृत्ति, खेत, धन और पुत्र की प्राप्ति होती है।

(बु० श०)—बुध की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब वात-पित्त-रोग से पीड़ा, शरीर में आघात और धन का नाश होता है।

प्राणत्याग, महाभय, राजकीय अधिकारियों से झगड़ा, निन्दा और देश या स्थान से उच्चाटन होता है।

केतु की अन्तर्दशा में केतु आदि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(के० के०)—केतु की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब आकस्मिक आपत्ति-विपत्ति, देशान्तर की यात्रा एवम् धन-हानि होती है।

मस्तक और दाँतों में पीड़ा, मूत्ररोग से मृत्यु का भय, स्थानभ्रंश और प्राण-हानि होती है।

(के० शु०)—केतु की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब म्लेच्छ एवं राजपक्ष से भय, धननाश, नेत्र रोग, शिरोव्यथा और चौपायों की हानि होती है।

औषधों की सहायता से रोग की शान्ति, पदलाभ, वैभवप्राप्ति, क्षयादि रोगों का नाश होना है।

(के० सू०)—केतु की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब मित्रों से विरोध, अपमृत्यु, पराजय, बुद्धि-विभ्रंश और विवाद होता है।

माता-पिता की मृत्यु, शत्रुओं से पीड़ा अथवा ज्वर-पीड़ा, अतिसार रोग होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(के० चं०)—केतु की अन्तर्दशा में जब चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब अन्न का नाश, यश की हानि, देह-पीड़ा, मतिभ्रम और आम-वातादि रोग की वृद्धि होती है।

कीर्ति की वृद्धि, धन की प्राप्ति, ज्ञान और शास्त्र का अभ्यास, अच्छे व्यक्तियों का संग, सज्जनता और व्यापार से लाभ होता है।

(के० मं०)—केतु की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब शस्त्रघात या अग्नि से कष्ट-पीड़ा और शत्रु से भय होता है।

रक्तातिसार, हिक्का, प्लीहा(यकृत), कुष्ठ आदि रोग, व्रण, भूत-प्रेतों का उपद्रव होता है।

(के० रा०)—केतु की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब राजपक्ष, कामिनी और शत्रुओं से भय और शूद्रजन से भी कष्ट होता है।

भूत-प्रेतों की बाधा, चित्त-विभ्रान्ति, मूत्ररोग, चोर-भय और रोग-पीड़ा होती है।

(के० गु०)—केतु की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब धनहानि, महा-उत्पात, वस्त्र, मित्र की हानि और सर्वत्र क्लेश प्राप्त होता है।

आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, वाहन तथा भूषणों की प्राप्ति, विवाद में विजय होती है।

(के० श०)—केतु की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब गौ-भैंस आदि पशुओं का मरण, देह-पीड़ा, मित्र-मरण और थोड़ा लाभ भी होता है।

बन्धन, युद्ध में प्राण-भय, घर में पशुओं का नाश और विदेश में मृत्यु होती है।

(के० बु०)—केतु की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब विद्या-बुद्धि का नाश, महा उद्वेग और भय तथा कार्य में विफलता होती है।

आरोग्य, पुत्र-लाभ, गाय-भैंस आदि की प्राप्ति, अन्य देशों से धनागम होता है।

शुक्र की अन्तर्दशा में शुक्रादि ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल

(शु० शु०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब श्वेत वस्त्र, वाहन, मोती आदि रत्न का लाभ और सुन्दरी स्त्री-संग का सुख प्राप्त होता है।

सब प्रकार से कल्याण, हार आदि आभूषण तथा वाहन की प्राप्ति, दानधर्म, पुत्र, सौभाग्य तथा धन का लाभ और पद की प्राप्ति होती है और दशा के उत्तरार्ध में फल अधिक होता है।

(शु० सू०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब वातज्वर, शिरोव्यथा, राज और शत्रु का भय और अल्प लाभ होता है।

अन्य देशों से सम्पत्ति, अपने देश मे लौटना तथा वाहनों का लाभ होता है।

(शु० चं०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब कन्या का जन्म, राजपक्ष से वस्त्राभरण का लाभ, प्रशासनिक अधिकार की प्राप्ति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देशत्याग, लोगों से भय, लोगों पर कृपा की प्रवृत्ति, सुवर्ण और मूँगा की प्राप्ति होती है।

(शु मं०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब मंगल की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब रक्त-पित्त आदि रोग, कलह-ताड़ना और अनेक भारी कष्ट होता है।

(शु० रा०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब राहु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब स्त्री से कलह, आकस्मिक भय, राजपक्ष और शत्रु से पीड़ा होती है।

शत्रुओं का नाश, जलयान में धन-हानि, स्त्री-पुत्रों को पीड़ा होती है।

(शु० गु०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब गुरु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब विशेष राज्याधिकार, उच्च पद, द्रव्य, वस्त्र, अलंकरण, हाथी आदि वाहन का लाभ होता है।

पुत्र-लाभ, मन की प्रसन्नता, धन-धान्य की वृद्धि, दूसरे स्थान में जाकर वहाँ शिक्षा प्राप्त करना आदि होता है।

(शु० श०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब शनि की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब गदहा, ऊँट बकरा, लोहा, उर्द और तिल आदि की प्राप्ति और शरीर में थोड़ी पीड़ा भी होती है।

बन्धन, मृत्यु, नेत्र-हानि, अनर्थों की वृद्धि, भिक्षाचरण एवं मनस्ताप होता है।

(शु० बु०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब बुध की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब धन, ज्ञान का महान् लाभ, राज्याधिकार की प्राप्ति और दूसरे की विनियोजित पूँजी का लाभ मिलता है।

पर स्त्रियों से भोग, अच्छा सुख-लाभ, रत्नों और आभूषणों की प्राप्ति, मन्दिरों की की प्रतिष्ठा होती है।

(शु० के०)—शुक्र की अन्तर्दशा में जब केतु की प्रत्यन्तर्दशा आती है तब अपमृत्यु, मृत्युतुल्य कष्ट-पीड़ा, देशान्तर-गमन होता है। बीच-बीच में कुछ धन-लाभ भी होता है।

रोग की उत्पत्ति, दवाओं से उपचार, राज-कोप से धनहानि, बुद्धि में विषमता होती है।

सूक्ष्म दशा-फल

सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा का फल

(सू० सू०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्य के सूक्ष्मान्तर में मनुष्य को अपनी भूमि का त्याग करना पड़ता है। प्राणनाश की आशंका, स्थान-च्युति तथा महा हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुक्षिरोग, शिर-व्याधि, राजभय, धननाश, अग्निदाह होता है। ऋण के कारण भूमि-विक्रय, प्रवास, प्रियजन का वियोग, स्थान-च्युति और मानहानि होती है।

(सू० चं०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में देवता ब्राह्मण में भक्ति, स्वधर्म में प्रवृत्ति, और सब मित्रों में सुप्रीति होती है।

देवता और ब्राह्मणों की भक्ति, नित्यकर्म में तत्परता और सब मित्रजनों से प्रेम होता है।

(सू० मं०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में भौम के सूक्ष्मान्तर में क्रूर कर्म में आसक्ति, क्रूर शत्रुओं से पीड़ा, और रक्तस्राव का रोग होता है।

क्रूर कर्मों में प्रीति, स्त्रियों और शत्रुओं से पीड़ा, संग्रहणी तथा अर्श (बवासीर)-रोग का भय होता है।

(सू० रा०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मान्तर में चोर, अग्नि, विष से भय, संघर्ष में विफलता या पराजय और दान-धर्म से हीनता होती है।

चोर, अस्त्र और विष का भय, युद्ध में अंग-भंग और पराजय, दान-धर्म में प्रीति तथा विविध भोगों की प्राप्ति होती है।

(सू० गु०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में गुरु के सूक्ष्मान्तर में राजसत्कार-लाभ, राज्याधिकारियों से सम्मानित और उनका कृपापात्र और प्रशान्त होता है।

राज-सम्मान की प्राप्ति, राजपुरुषों द्वारा पूजा और राजयक्ष्मा (क्षय) जैसे रोग से छुटकारा होता है।

(सू० श०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मान्तर में चोरी, दुस्साहसिक कार्यों के निमित्त देव-ब्राह्मणों का परिपीड़न, उससे स्थान-च्युति और मानसिक व्यथा होती है।

चोर-डाकुओं का आक्रमण, बन्धुनाश, महाभय, स्थानभ्रंश और मानसिक सन्ताप होता है।

(सू० बु०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मान्तर में परमोत्तम परिधान की प्राप्ति, सुन्दरी स्त्री का संग और अप्रत्याशित कार्य की सिद्धि होती है।

दिव्य वस्त्रों की प्राप्ति, दिव्य स्त्री का उपभोग, अकस्मात् धन की प्राप्ति और कार्य-सिद्धि होती है।

(सू० के०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म-दशा में नौकर और स्त्री द्वारा गौरव और धन का नाश और कभी किसी सेवक से सम्बन्ध भी होता है।

माता-पिता की मृत्यु, दूसरों की अधीनता, कभी बन्धुओं का विनाश भी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सू० शु०)—सूर्य के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म-दशा में पुत्र, मित्र, स्त्री आदि से सुख-सम्पन्न और अनेक प्रकार की सम्पत्ति का लाभ होता है।

पुत्र, मित्र और स्त्री आदि की सुख-सम्पन्नता, नाना प्रकार से धन की प्राप्ति होती है।

चन्द्र के प्रत्यन्तर में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म-दशा का फल

(चं० चं०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में चन्द्र की सूक्ष्म-दशा में भूषण, भूमि का लाभ, सम्मान, गौरव, राज से पूजा-प्रतिष्ठा तथा स्वभाव तामसी होता है।

आभूषण और भूमि का लाभ, मान-सम्मान और राजपक्ष से सत्कार-प्राप्ति, क्रोध और अहंकार की वृद्धि होती है।

(चं० मं०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा में दुःख, शत्रु से विरोध, कुक्षि-स्थान में रोग, पिता की मृत्यु और वात-पित्त-कफजनित रोग होता है।

राजपक्ष तथा शत्रुओं से विरोध, कुक्षि में रोग, पिता की मृत्यु, वात-पित्त या कफजन्य रोग होते हैं।

(चं० रा०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म-दशा में मित्र तथा बन्धुओं पर क्रोध, देश-त्याग, धन का नाश, विदेश में बन्धन होता है।

(चं० गु०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म-दशा में राज-चिह्न से संयोग, वैभव की प्राप्ति, पुत्र-लाभ और सर्वत्र सुख होता है।

आरोग्य-लाभ, लोगों से मैत्री, वाहन तथा भूषणों का लाभ, युद्ध में विजय होती है।

(चं० श०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा में राजकीय प्रकोप से हानि, व्यवहार में धन की क्षति होती है। ब्राह्मण से विद्वेष और चोरी का भय होता है।

राजपक्ष से उपद्रव, व्यापार में धन की हानि, चोरी का अपवाद और प्राणों पर संकट आता है।

(चं० बु०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा में राजपक्ष से सम्मान एवं वस्तुओं का लाभ, विदेश से वाहनादि की प्राप्ति और पुत्र-पौत्र आदि की समृद्धि होती है।

राज-सम्मान, वस्तुओं का लाभ, झगड़े से भूमि आदि की प्राप्ति, पुत्र-पौत्र आदि की वृद्धि होती है।

(चं० के०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा में अन्नौषधि और सींग-वाले जानवर बैल आदि से अपनी वृत्ति का उच्छेद, अग्नि एवं सूर्यतापजन्य भय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शस्त्र, सींग, विष आदि से मृत्यु, अग्नि और सर्प से भय होता है।

(चं० शु०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा में विवाह, भूमि, वस्त्राभूषण आदि वैभव की प्राप्ति, राज्य और सुयश लाभ होता है।

विवाह, भूमि का लाभ, वस्त्र, आभूषण और राज्य-वैभव की प्राप्ति, शक्ति की वृद्धि होती है।

(चं० सू०)—चन्द्र के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा में क्लेश-पर-क्लेश, कार्य की हानि, पशु और धन-धान्य का नाश, शरीर तथा भूमि सम्बन्धी वैषम्य होता है।

देश-त्याग, धन-धान्य का नाश, कार्य की हानि, अपने गोत्रवालों से झगड़ा होता है।

भौम के प्रत्यन्तर में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा का फल

(मं० मं०)—मंगल के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्मदशा में भूमि की हानि से चित्त में खेद, मृगी रोग, बन्धन, मनस्ताप और ग्राम से क्षोभ होता है।

भूमि का नाश, मानसिक संताप, अपस्मार रोग (मिरगी), बन्धन, दूसरों के अपमान से ग्लानि आदि होती है।

(मं० रा०)—मंगल के प्रत्यन्तर में राहु को सूक्ष्मदशा में अंग-विशेष में विकार, जन-भय, स्त्री-सन्तान का नाश, अग्नि तथा सर्प-भय होता है।

अङ्गच्छेद, स्त्री-भय, असावधानी के कारण धन का नाश, अग्नि का भय, विष-जन्य व्यथा होती है।

(मं० गु०)—मंगल के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा में देवता में भक्ति, मन्त्र-साधन में तत्परता, लोक में आदर और प्रमोद प्राप्त होता है।

देव-पूजा में प्रेम, श्रेष्ठ जन और मित्रों से संमति, मन्त्रानुष्ठान में तत्परता होती है।

(मं० श०)—मंगल के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा में बन्धन से मुक्ति होती है। जातक धन-धान्य-वस्त्रयुक्त, सेवक आदि से विशेष सुखी, श्रीसम्पन्न होता है।

बन्धन से मुक्ति, धन-धान्य और प्रजा का नाश, स्त्री सेवकों को हानि होती है।

(मं० बु०)—मंगल के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्मदशा में वाहन, छत्र-चामर आदि राजकीय वैभव से परम सुख-लाभ, किन्तु कास-श्वास आदि से पीड़ा भी होती है।

छत्र चामर आदि राजकीय वाहनों की प्राप्ति, कास-श्वासादि रोगों का नाश होता है।

(मं० के०)—मंगल के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्मदशा में दूसरे की प्रेरणा से जातक अनुचित कार्य करता एवं सर्वत्र निन्दित होता है। उसके सभी कार्य अपवित्र होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरों की बुद्धि से कार्य करता है, सब कार्यों में गलतियाँ करता है।

(मं० शु०)—मंगल के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्मदशा में अभीष्ट स्त्री से सुख-भोग, धन का संग्रह होता है।

मनचाहा भोजन, सब प्रकार की इष्ट-सिद्धि और आर्थिक लाभ होता है।

(मं० सू०)—मंगल के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा में राज-कोप, ब्राह्मणों से कष्ट, कार्याभिप्राय में वञ्चकता और लोक-निन्दा होती है।

राज-द्वेष, ब्राह्मणों से द्वेष, कामचोरी की प्रवृत्ति, सबको दोष देने की प्रवृत्ति पैदा होती है।

(मं० चं०)—मंगल के प्रत्यन्तर में चन्द्र की सूक्ष्मदशा में चित्त की शुद्धता एवं धन-लाभ, देवता और ब्राह्मण में भक्ति, किन्तु व्याधिग्रस्त होता है।

सब प्रकार की सम्पत्ति, देवता और ब्राह्मणों की भक्ति, शुचिता, सब प्रकार की व्याधियों से छुटकारा होता है।

राहु के प्रत्यन्तर में राहु आदि ग्रहों की सूक्ष्मदशा का फल

(रा० रा०)—राहु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा में लोकोपद्रव में प्रवृति, स्वकार्य में बुद्धि-विभ्रम, विचारहीनता एवं मनःदोष होता है।

सभा में लोगों से भय, जलयान से भय, पशुओं का क्षय और पाप का संचय होता है।

(रा० गु०)—राहु के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्मदशा में दीर्घरोग एवं दरिद्रता होती है। जातक दान-धर्म में रत एवं सबको प्रिय लगता है।

सोच-विचारकर कार्य करनेवाला, सबको प्यारा लगनेवाला, दान धर्म में निरत और विख्यात होता है।

(रा० श०)—राहु के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा में कुमार्गगामी, उग्रस्वभाव, दुष्ट, परसेवक, कुसंगी और मूढ़मति होता है।

बुरे मार्ग में प्रवृत्ति, उससे उत्पन्न उग्रता और दुर्जनोंका संग होता है।

(रा० बु०)—राहु के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्मदशा में संभोग-वासनामयी बुद्धि, वाक्पटुता, लोक-ख्याति और सतत अन्नाभिलाषा से शरीर क्लेशयुक्त होता है।

स्त्री-संभोग की इच्छा, बोलने में पटुता, लोक में सम्मान, इष्टकार्यों में सिद्धि और पुत्र-लाभ होता है।

(रा० के०)—राहु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्मदशा में स्वभाव में मृदुता, मान-हानि, बन्धन, अप्रमाद, हृदय में कठोरता और जीव-हानि होती है।

मधुरता, मानहानि, बन्धन, हितैषियों की हत्या, पशुओं की हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(रा० शु०)—राहु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्मदशा में बन्धन से मुक्ति, स्थान, मान, धन का लाभ और भाग्योदय होता है।

बन्धन से मुक्ति, स्थान, मान एवं धन का संचय होता है। धन-लाभ के साधन जुटते हैं।

(रा० सू०)—राहु के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्मदशा में अर्श (बवासीर), गुल्मरोग, क्रोधाधिक्य और वाहनादि सर्व सुखों की हानि होती है।

खूनी बवासीर, गुल्म रोग, कुक्षिरोग, नेत्र-रोग और गुदा-रोग होते हैं। वाहनादि से सुख भी होता है।

(रा० चं०)—राहु के प्रत्यन्तर में चन्द्र की सूक्ष्मदशा में मणि आदि रत्न और धन की प्राप्ति, विद्योपासना, शील और देवता की भक्ति प्राप्त होती है।

विविध विद्याओं को सीखने की इच्छा, धन-लाभ, विद्या-लाभ, यश-लाभ और नित्य विद्यार्जन में तत्परता रहती है।

(रा० मं०)—राहु के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्मदशा में जन-विद्रोह, पराजय, पलायन, जनसमुदाय का कोपभाजन, बन्धन होता है और चोरी की सतत प्रवृत्ति होती है।

दुर्जनों के सिखाने पर सज्जनों से द्वेष, सर्पों से भय, बन्धन होता है तथा पराक्रम, स्वभाव एवं प्रेम की हानि होती है।

गुरु के प्रत्यन्तर में गुरु आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा का फल

(बृ० बृ०)—गुरु के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा में शोक का नाश, धन की वृद्धि, अग्निहोत्र, शिव की भक्ति और राजकीय चिह्न सहित वाहन का लाभ होता है।

अपमृत्यु का निवारण, धन की वृद्धि, अग्निहोत्र, शिवपूजा, वाहन और छत्र की प्राप्ति होती है।

(बृ० श०)—गुरु के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा में व्रत-भंग, विदेश-गमन एवं धन-नाश और बन्धु-विरोध होता है।

ब्रह्महत्या, ग्रामवास, विदेश में वस्तुनाश और अपनी बेवकूफी से धान्य का नाश होता है।

(बृ० बु०)—गुरु के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्मदशा में विद्या, मान, यश का लाभ, धनागम और गृह में मंगलोत्सव होता है।

ज्ञान, वैभव, पांडित्य और शास्त्रों का अभ्यास, शिवपूजा तथा अग्निहोत्र में रुचि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बृ० के०)—गुरु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्मदशा में ज्ञानवृद्धि, वैभव, पाण्डित्य, शास्त्राध्ययन का लाभ होता है। जातक शिव की पूजा, अग्निहोत्र और गुरु की सेवा-पूजा में संलग्न होता है।

वाहन आदि वस्तुओं का नाश, राजपक्ष से भय, बड़े या पूज्य जन की हानि, मन्दिर का ध्वंस होता है।

(बृ० शु०)—गुरु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्मदशा में रोग से मुक्ति, सुख-भोग, धन-धान्य का लाभ और स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है।

रोगी रोग से मुक्त होता है, धन की वृद्धि, ज्ञान की प्राप्ति, पुत्र-स्त्री आदि का सुख होता है।

(बृ० सू०)—गुरु के प्रत्यन्तर में रवि की सूक्ष्मदशा में वात-पित्त का प्रकोप दारुण श्लेष्मा (जुकाम) से कष्ट और रसदोष से शूलरोग होता है।

वात और पित्त का प्रकोप, कफ का उद्वेग, खान-पान में गड़बड़ी से शरीर में विषमता होती है।

(बृ० चं०)—गुरु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में छत्र आदि राजचिह्न-युक्त विभव की प्राप्ति, पुत्र-सुख, नेत्र और कोख में पीड़ा होती है।

छत्र-चँवर से युक्त, धन-लाभ और पुत्रोत्पत्ति की सम्भावना, स्त्री-सुख और अप-मृत्यु का निवारण होता है।

(बृ० मं०)—गुरु के प्रत्यन्तर और मंगल की सूक्ष्म-दशा में स्त्री द्वारा विष-प्रयोग, बन्धन, दमन, भर्त्सना, देशान्तर-गमन और मति-भ्रान्ति होती है।

स्त्रीजन से विशेष पीड़ा, बन्धन, घर में बाधा, देशान्तर गमन होता है।

(बृ० रा०)—गुरु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा में व्याधियों से आक्रान्त चोरों द्वारा धन का अपहरण और सर्प-बिच्छू के काटने का भय होता है।

माता-पिता की मृत्यु, सर्वनाश, चोर और विष का भय होता है।

शनि के प्रत्यन्तर में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा का फल

(श० श०)—शनि के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा में धन-हानि, वात-व्याधि से पीड़ा, कुलक्षय, पृथक् भोजनकारी और महादुःखी होता है।

स्त्री-हानि, महाव्याधि, शत्रु से पीड़ा, नेत्र-रोग, भिक्षाचरण, मनमें संताप होता है।

(श० बु०)—शनि के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्मदशा में व्यापार में लाभ, विद्या-वैभव की वृद्धि, स्त्री और भूमि की प्राप्ति होती है।

व्यापार, भूमि का लाभ, विद्या-प्राप्ति, धनागम, विवाह, बन्धुओं का कल्याण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(श० के०)—शनि के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्मदशा में चोरोंका उपद्रव, कुष्ठ रोग, जीविका की हानि, सर्वाङ्ग में पीड़ा और व्याधि से कुंठित होता है।

चोरों का उपद्रव, कुष्ठ रोग, मृत्यु-तुल्य कष्ट, दवा करने से रोग में वृद्धि होती है।

(श० शु०) शनि के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्मदशा में ऐश्वर्यलाभ, शस्त्राभ्यास, पुत्रलाभ, अभिषेक, आरोग्यता, अर्थ और काम की सिद्धि होती है।

ऐश्वर्य, अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास, अभिषेक से धन-प्राप्ति, आरोग्य, देवपूजा और मन को शान्ति होती है।

(श० सू०)—शनि के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्मदशा में राजकोप से विकार, अपने घर में कलह और शरीर में पीड़ा होती है।

द्रव्यनाश, अपस्मार (मिरगी) की व्याधि और उससे मानसिक सन्ताप और सबसे झगड़ा होता है।

(श० चं०)—शनि के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में बुद्धि का विकास, किसी बड़े कार्य का प्रारम्भ, तेजोहानि, व्यय की अधिकता और स्त्री-पुत्र से सुख होता है।

ऐश्वर्य, रोग-नाश, नाना प्रकार से धन-प्राप्ति, राजपुरुष से नित्य सम्मान की प्राप्ति होती है।

(श० मं०)—शनि के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्मदशा में नेत्र-हानि, महान् उद्वेग, मन्दाग्नि, क्षय, भ्रम, कलह और वात-पित्त से कष्ट पीड़ा होती है।

रक्त-पित्त का विकार, कुष्ठ रोग, मानसिक संताप, गुरुजनों की हत्या, सर्वत्र व्याकुलता होती है।

(श० रा०)—शनि के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा में माता-पिता की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट, हार्दिक दुःख, व्ययाधिक्य और सर्वत्र विफलता होती है।

भूत-प्रेतों का उपद्रव-दोष, क्षय रोग तथा श्राप की प्राप्ति, चित्त में भ्रान्ति होती है।

(श० गु०)—शनि के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा में द्रव्य-लाभ, मान-सम्मान, धन-धान्य की वृद्धि और छत्रादि राजकीय चिह्न की प्राप्ति होती है।

स्त्री-सहवास-सुख, राज-सम्मान, धन-धान्य की वृद्धि, छत्र-चंवर से युक्त होता है।

बुध के प्रत्यन्तर में बुध आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा का फल

(बु० बु०)—बुध के प्रत्यन्तर में बुध की ही सूक्ष्म दशा में भाग्योदय, राजसम्मान की प्राप्ति, धन-धान्य का लाभ और सब का प्रेम-पात्र होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौभाग्य, राजसम्मान, छत्रादि राजचिह्नों की प्राप्ति और सबसे प्रियवाणी बोलने वाला होता है।

(बु० के०)—बुध के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्मदशा में बालग्रह तथा अग्निप्रकोप, ज्वर-संताप, स्त्री को रजोविकार से कष्ट, कुमार्ग में प्रवृत्ति और कदन्न का भोजन होता है।

बालग्रह (पूतना आदि) से प्राण-भय, विशेषकर त्रिदोष (वात-पित्त-कफ-दोष से सन्निपात) का भय, अपस्मार (मिरगी) का प्रकोप होता है।

(बु० शु०)—बुध के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्मदशा में वाहन, अन्न-धन, जलोत्पन्न पदार्थ और द्रव्य का लाभ, सुयश और महान् सुख-भोग प्राप्त होता है।

वाहन और बन्धु का लाभ, जल, धन-धान्य का सञ्चय, महासुख और शुभत्व की प्राप्ति होती है।

(बु० सू०)—बुध के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्मदशा में राजकीय दण्ड, ताड़ना, बुद्धि-मांद्य का रोग, धन-हानि और जनापवाद होता (कलंक लगता) है।

राज्याधिकारी से झगड़ा होने के कारण ताडन का भय, बुद्धि का स्खलन, रोगों की वृद्धि, तीव्र ज्वर, महाव्याधि होती है।

(बु० चं०)—बुध के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में सुख-सौभाग्य, स्थिर-बुद्धि, राजसम्मान और सम्पत्ति का लाभ, मित्रों और गुरु से सुसंस्कार का लाभ होता है।

सौभाग्य, स्थिरबुद्धि, सब प्रकार की सम्पत्ति एवं धन की प्राप्ति, सत्कार, गुरुओं (बड़े लोगों) का दर्शन होता है।

(बु० मं०)—बुध के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा में अग्नि और विष का भय, अपघात, बुद्धि में जड़ता, भ्रम, महान् उद्वेग एवं दारिद्रय दुःख होता है।

शरीर में जहरीले रोगों की उत्पत्ति, मूर्खता, दरिद्रता, स्थान से च्युति और पर्वत से पतन होता है।

(बु० रा०)—बुध के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा में अग्नि, सर्प और राज-भय, बड़ी कठिनता से शत्रु का पराभव, भूतावेश के भ्रम से बुद्धि भ्रान्त होती है।

अग्निदाह का भय, राज-भय, व्यापार में दुष्टों की संगति, चित्त में आवेश, और भ्रान्ति होती है।

(बु० गु०)—बुध के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्मदशा में भव्य गृहोपकरणों का लाभ, त्यागपूर्वक वैभवादि का भोग और राज्य-प्रशासन से आर्थिक लाभ होता है।

घर के उपयोग में आनेवाली सामग्री तथा भाग्य की वृद्धि, त्याग और भोग की वृद्धि, राज-पक्ष से सम्पत्ति का लाभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बु० श०)—बुध के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा में व्यापार से लाभ, विद्या और वैभव की वृद्धि, स्त्रीलाभ और महाव्याधि की संभावना होती है।

जनों में निन्दा, अपवाद, पाप मे प्रवृत्ति, दोषों की वृद्धि, क्षय आदि महारोगों का भय होता है।

केतु के प्रत्यन्तर में केतु आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा का फल

(के० के०)—केतु के प्रत्यन्तर मे केतु की ही सूक्ष्म दशा में पुत्र, स्त्री से दुःख, शरीर में विकलता और दरिद्रता या भिक्षावृत्ति की दशा प्राप्त होती है।

स्त्री-पुत्र आदि का विद्रोह, गोत्रजों से कलह, दरिद्रता और याचना की प्रवृत्ति होती है।

(के० शु०)—केतु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्मदशा में रोग का नाश, धन-लाभ, देव, गुरु और ब्राह्मण में भक्ति और स्वजनों से समागम होता है।

पुत्रलाभ, रोगनाश, ब्राह्मण-कर्म में आस्था, पुण्य और यश, मित्रों की संगति प्राप्त होती है।

(के० सू०)—केतु के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्मदशा में पुत्र, भूमि की हानि, स्वदेश से अन्यत्र-प्रवास, मित्र पर भी विपत्ति आती है।

युद्ध का भय, विनाश, देशान्तर में भ्रमण और परिश्रम, माता-पिता के प्रति विमुखता होती है।

(के० चं०)—केतु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म-दशा में दास-दासी की वृद्धि, युद्ध में विजय और लोक में सुयश-कीर्ति प्राप्त होती है।

दासी-दासों की वृद्धि, युद्ध में विजय, बड़ी सम्पत्ति और कीर्ति का लाभ होता है।

(के० मं०)—केतु के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्मदशा में आसन या घोड़े से गिरने की संभावना, चोर और दुष्टों से पीड़ा, गुल्म रोग और शिरोव्यथा होती है।

बिजली गिरने का भय, विष का भय, दुष्टों तथा चोरों से पीड़ा, गुल्म-रोग तथा शिरोरोग होता है।

(के० रा०)—केतु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा में स्त्री या गुरुजन का विनाश, दुष्ट स्त्री के संग से लघुता प्राप्त होती है। रुधिर या पित्त का वमन होता है।

स्त्री-हानि, सदगुणों का नाश, बुरे दोषों की वृद्धि, जलन, रक्तप्रकोप, पित्त-विकार होता है।

(के० गु०)—केतु के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्मदशा में शत्रु से विरोध, सहसा सम्पत्ति या राजवैभव का लाभ, किन्तु पशु और खेती की हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैर-विरोध की वृद्धि, साहस से राज्य-लाभ, पशु, भूमि तथा धन की प्राप्ति होती है।

(के० श०)—केतु के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा में व्यर्थ ही कष्ट-पीड़ा, अल्प सुख, उपवास, स्त्री-विरोध और सत्य की हानि होती है।

बन्धन, घाव लगने का डर, अग्नि से पशुओं का नाश और विदेश में दुःख की प्राप्ति होती है।

(के० बु०)—केतु के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्मदशा में अनेक लोगों से संयोग-वियोग, शत्रु-पीड़ा और धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

नाना प्रकार से विजय, वाहन और पुत्र की प्राप्ति, रस, सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

शुक्र के प्रत्यन्तर में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा का फल

(शु० शु०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में शुक्र की ही सूक्ष्म दशा में शत्रु की हानि, महान् सुख, शिव-मन्दिर, तालाब, कुओं आदि के निर्माण की सम्भावना होती है।

दान, धर्म और आर्थिक कार्यों में शोक, शिवालय, वापी या कूप का निर्माण होता है।

(शु० सू०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्मदशा में हृदयरोग, मतिभ्रम, इधर-उधर भटकना, कभी लाभ और कभी हानि होती है।

छाती में दर्द, ब्राह्मणों का-सा शुद्ध आचरण, गमनागमन की प्रवृत्ति, कहीं कार्य-सिद्धि और धन-लाभ होता है।

(शु० चं०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में आरोग्य, धन-सम्पत्ति का लाभ, गमनागमन से कार्य की सिद्धि, विद्या और बुद्धि की वृद्धि होती है।

आरोग्य, धन-सम्पत्ति-लाभ, आने-जाने से कार्य-सिद्धि, वैदिक आचार में प्रवृत्ति होती है।

(शु० मं०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्मदशा में बुद्धि में जड़ता, शत्रु-भीति, देशत्याग, महादुःख और व्याधि की प्राप्ति होती है।

जड़ता, राजपक्ष से झगड़ा, देश-त्याग; धन-क्षय और महाव्याधि की उत्पत्ति होती है।

(शु० रा०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा में राज-प्रकोप, अग्नि और सर्प से भय, बन्धु-विनाश, भारी व्यथा, स्थानच्युति (पदावनति) और महाभय होता है।

राजपक्ष, अग्नि और जनता से पीड़ा, बन्धुओं का नाश, बड़े जनों को कष्ट, स्थान-भ्रंश, घर से भी डर होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(शु० गु०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा में सब कार्यों से लाभ, खेती और धन तथा वैभव की उन्नति, वाणिज्य-व्यापार से विशेष लाभ होता है।

इधर-उधर से कार्यलाभ, खेती, धन और ऐश्वर्य की उन्नति, व्यापार में वृद्धि और लाभ होता है।

(शु० श०)—शुक्र के प्रत्यन्तर मे शनि की सूक्ष्म दशा में शत्रु-पीड़ा, महान दुख, चौपायों का विनाश, अपने गोत्रज और गुरुजनों की हानि होती है।

रोना, शत्रुजन्य बाधा, पशुओं की हानि, अपने गोत्र के बड़े जनों की मृत्यु होती है।

(शु० बु०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा में बन्धु-बान्धवों से सम्पत्ति की वृद्धि, व्यवहार से आर्थिक लाभ और स्त्री-पुत्रादि से सुख होता है।

बान्धवों में सम्पत्ति की वृद्धि, विवाह, रथ और गायों का लाभ, स्त्री-पुत्र, धन आदि की प्राप्ति होती है।

(शु० के०)—शुक्र के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा में जठराग्नि सम्बन्धी रोग से महाकष्ट, मुख, नेत्र और शिर में पीड़ा, संचित धन की हानि एवम् मन में सन्ताप होता है।

उत्कट रोग, महाव्यथा, विष, अग्नि का भय, मस्तक-पीड़ा, संचित द्रव्य के लिए मनस्ताप होता है।

सूर्य के सूक्ष्मान्तर में सूर्यादि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(सू० सू०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में दुराचार, व्यभिचार, विष, चोर से बाधा, शरीर की शुष्कता, नेत्र-विकार और मरण भी हो सकता है।

मूसल से शरीर को कूटे जाने का-सा दर्द, रुदन, विष-पान, यहाँ तक कि मृत्यु का भी खतरा होता है।

(सू० चं०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में सुख, सुभोजन, सुसंस्कार की प्राप्ति और उदार पुरुष की कृपा से राजवैभव का लाभ होता है।

सुख, अच्छे भोजन की प्राप्ति, लोगों द्वारा सत्कार, रूपवती स्त्री पुत्र और धन का लाभ होता है।

(सू० मं०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में मंगल की प्राणदशा में राज्योपद्रव की वृद्धि, धनहानि, आतंक, भय और धनादि की महान् हानि होती है।

राजपक्ष से उपद्रव, द्रव्य-नाश, महाभय और बड़े पाप-कर्मों की प्राप्ति होती है।

(सू० रा०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में अन्न-कष्ट, विशेषतः विष की उत्पत्ति से महापीड़ा, अग्नि और राजपक्ष से धन-हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाने और पीने में विष का भय, धन-हानि तथा सब प्रकार से भय-प्राप्ति होती है।

(सू० गु०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में अनेक विद्या और धन-सम्पत्ति का लाभ, गमनागमन से कार्य की सिद्धि और नीच जन की संगति समाप्त हो जाती है।

नाना प्रकार की धन-सम्पत्ति का लाभ, गमनागमन से कार्य-सिद्धि, विद्या और सन्तान की प्राप्ति होती है।

(सू० श०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में बन्धन, मृत्यु-भय या मृत्युतुल्य कष्ट, चित्त में उद्वेग, अनेक विघ्न-बाधाएँ और महा हानि होती है।

पशु, बान्धव तथा अन्न का नाश तथा मानहानि का भय होता है।

(सू० बु०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में निरन्तर राजकीय चिह्न एवं राजकीय पद प्राप्त होता है और आत्म-शान्ति मिलती है।

निरन्तर राज-पक्ष से आजीविका की प्राप्ति, राजकीय अधिकार और सम्पत्ति का लाभ भक्तिपूर्वक देवताओं की आराधना होती है।

(सू० के०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राण दशा में पारस्परिक कलह भूमि की हानि और पराजय, गुरु, स्त्री और बन्धु को कष्ट होता है।

परस्पर कलह, वस्तुओं की हानि, पराजय, माता-पिता (या संरक्षका) तथ स्त्री को चोट लगती या मृत्यु होती है।

(सू० शु०)—सूर्य के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में राज-सम्मान, पुरस्कार-प्राप्ति, धन की वृद्धि, स्त्री-पुत्र-सुख और अन्न-पानादि का योग होता है।

राजपक्ष से सत्कार, धन की वृद्धि, स्त्री एवं जमीन-जायदाद की प्राप्ति, खाने-पीने का सुख होता है।

चन्द्र के सूक्ष्मांतर में चंद्रादि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(चं० चं०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में योगाभ्यास, समाधि-सिद्धि, स्त्री-पुत्रादि से सुख, धन, वस्त्र का लाभ होता है।

योगाभ्यास में प्रवृत्ति, समाधि-लाभ और गुरुत्व (नेतृत्व) का विनाश होता है।

(चं० मं०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में मंगल की प्राणदशा में क्षय या कुष्ठरोग की सम्भावना, बन्धु-विनाश, रक्तस्राव से कष्ट और भूतादि का आवेश होता है।

क्षय या कुष्ठ रोग, बन्धु-नाश, रक्त-स्राव, महाभय, भूत-प्रेतों का आवेश होने से कष्ट होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(चं० रा०) – चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में विशेषतः सर्प का भय, भूत-पिशाच का उपद्रव, दृष्टि-दोष और बुद्धि का ह्रास होता है।

देश-त्याग, धन का नाश, राजपक्ष से उपद्रवों में वृद्धि, रोग-भय तथा बुद्धिनाश होता है।

(चं० गु०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में धार्मिक बुद्धि, क्षमाशीलता, देवता और ब्राह्मण को भक्ति प्राप्त होती है और भाग्योदय होता है।

भूमिप्राप्ति, धर्म की वृद्धि, देवताओं और ब्राह्मणों का पूजन, सौभाग्य की प्राप्ति और प्रियजनों का समागम होता है।

(चं० श०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में अकस्मात् शरीर का पतन, शत्रुओं के उपद्रव से वेदना, नेत्रान्धता और धन का लाभ होता है।

आत्महत्या या किसी मारपीट में देहघात, शत्रुओं के उपद्रव से पीड़ा, अकस्मात बन्धन होता है।

(चं० बु०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में राजचिह्न या राज्यलाभ और सभी प्राणियों के प्रति समदृष्टि होती है।

छत्र-चँवरादि राजकीय लाभ, नाना प्रकार का वैभव, सब प्राणियों में समभाव होता है।

(चं० के०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में विष, अग्नि, शस्त्र, और राज-भय, उदर-रोग और स्त्री-पुत्र से वियोग होता है।

शस्त्र, अग्नि, शत्रु से बाधा, विष की पीड़ा, कुक्षिरोग, स्त्री-पुत्र आदि का वियोग होता है।

(चं० शु०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में पुत्र, मित्र, स्त्री आदि की प्राप्ति, परदेश से धन-लाभ और सब भाँति का सुख होता है।

पुत्र, स्त्री, भ्राता का नाश, विदेशों से धन-प्राप्ति, सुखों का उदय और पुण्य की प्राप्ति होती है।

(चं० सू०)—चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में तीव्र दोष, तीव्रतर दोष, प्राणनाश, मनोव्यथा, देशत्याग, महाभय आदि फल होते हैं।

तीव्र रोग, क्रोध की वृद्धि, प्राणों का भय, मानसिक सन्ताप, देश-त्याग और राज से भय होता है।

भौम के सूक्ष्मांतर में भौमादि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(भं० मं०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में भौम की ही प्राणदशा में परजन, या शत्रु से संघर्ष, बन्धन या मरण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्प से, शत्रु से अथवा गिरकर या रस्सी द्वारा आत्महत्या करने से मृत्यु होती है।

(मं० रा०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में स्त्री से वियोग, बन्धुओं के उपद्रव से पीड़ा और विष से मरण होता है।

देवी-पूजा में रत, श्रीमान, मंत्रों के अनुष्ठान में तत्पर, पुत्र, पौत्र आदि के सुख को प्राप्त होता है।

(मं० बृ०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में देवार्चन में अनुराग, मन्त्रानुष्ठान में निरति, धन एवं पुत्र-पौत्रादि का सुख प्राप्त होता है।

पदच्युवि, मान-हानि, बन्धुओं के द्वारा उपद्रव और पीड़ा, विष या विषैले रोगों से कष्ट होता है।

(मं० श०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में अग्निकांड, मृत्युभय, धननाश, पदच्युति, पदावनति, किन्तु बन्धुओं से भ्रातृत्व का लाभ होता है।

अग्निबाधा, मृत्यु, धन-नाश, पदच्युति, बन्धुओं द्वारा बन्धन को प्राप्त होता है।

(मं० बु०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में उत्तम वस्त्राभूषण का लाभ और श्रेष्ठ स्त्री की प्राप्ति होती है।

दिव्य वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, दिव्याङ्गनाओं से संभोग होता है।

(मं० के०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राण-दशा में पतन का भय, अनेक उत्पात, पीड़ा, सर्प-भय और मानहानि होती है।

गिरने से पैर में चोट, आँखों में विकार, महाभय, सर्प का भय या इस संबंध से द्रव्य-हानि होती है।

(मं० शु०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राण-दशा में धन-धान्यादि सम्पत्ति का लाभ, लोक में मान-प्रतिष्ठा से सुख और अनेक भोगों के अतिरेक से रोगों की सम्भावना रहती है।

अन्न आदि भोज्य वस्तुओं का सुख, धन का आगमन, वैभव की वृद्धि और उसके उपभोग की सामर्थ्य प्राप्त होती है।

(मं० सू०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में ज्वर, उन्माद, धन-हानि, राजद्रोह, दीर्घरोग एवं दरिद्रता होती है।

ज्वर-रोग, उन्माद, क्षयरोग, राजपक्ष से विरोध, दीर्घकालीन रोग, दरिद्रता की उत्पत्ति होती है।

(मं० चं०)—भौम के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में भोजन, वस्त्रा-भूषण के लाभ से सुख प्राप्त होता है; किन्तु सर्दी-गर्मी से कष्ट-पीड़ा भी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विविध प्रकार के भोजन, सम्पत्ति, वस्त्र, आभूषण, घोड़े आदि की प्राप्ति, कभी शीत, कभी उष्ण प्रकृति, सुख और सन्तोष प्राप्त होता है :

राहु के सूक्ष्मांतर में राहु आदि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(रा० रा०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में राहु की ही प्राणदशा में अन्न-पानादि में अरुचि, विषभय और समस्त धन का नाश होता है।

खाने-पीने में सुरक्षा होने पर भी विष का भय, चोरी या डाके से धन का नाश होता है।

(रा० गु०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राण-दशा में शारीरिक सुख, निर्भयता वाहनादि सम्बन्धी व्यग्रता और नीच जन से कलह की सम्भावना होती है।

शरीराङ्गों में सुखानुभूति, निर्भीकता, वाहन-सुख, सब प्रकार के धन की प्राप्ति होती है।

(रा० श०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में गृह और शरीर को अग्नि-भय, नीचजन से धन का अपहरण, रोग, बन्धन की प्राप्ति होती है।

गृहदाह, शरीर में जलन, नीचों द्वारा धन का हरण, विविध रोगों की उत्पत्ति होती है।

(रा० बु०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में गुरु के सदुपदेश से वैभव की प्राप्ति, गुरु की सेवा-सत्कार में वृद्धि, सद्गुण और सुशीलता प्राप्त होती है।

सज्जनों के उपदेश से वैभव की प्राप्ति, गुरुजनों के सत्कार में लगे रहना, गुण और शील में वृद्धि होती है।

(रा० के०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में स्त्री-पुत्रादि से विरोध, गृहत्याग और साहसिक कार्य से हानि होती है।

स्त्री-पुत्रों के साथ विरोध, घर से निकल जाना, अकार्य कर बैठने से हानि होती है।

(रा० शु०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में छत्र, वाहन आदि सम्पत्ति का लाभ, सर्वकार्य-सिद्धि, शिव-पूजन और गृहारम्भ होता है।

छत्र, चँवर आदि श्रेष्ठ उन्नतिकारक वस्तुओं का संग्रह होता है। देवालय का निर्माण होता है।

(रा० सू०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राण-दशा में बवासीर आदि रोग, राज-कोप और चौपाए जानवरों की हानि होती है।

खान-पान से रोग का भय, रोगों का उपद्रव और पशुओं का भय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(रा० चं०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में सज्जनता की प्राप्ति, गुरु का दर्शन और सत्कार, पाप से भय तथा सुखद अवसर प्राप्त होता है।

सज्जनता, सुबुद्धि, गुरुजनों का सत्कार और उनसे समागम, पापों से भय और मन को सुख होता है।

(रा० मं०)—राहु के सूक्ष्मान्तर में मंगल की प्राणदशा में चाण्डाल और अग्नि से भय, पदच्युति या पदावनति, आपत्ति-विपत्ति, मलीनता और नीचवृत्ति होती है।

चाण्डाल, अग्नि और विष का भय, अपने पद से च्युत होना, मलीनता, शक्ति से अधिक कार्य करने से हानि होती है।

गुरु के सूक्ष्मांतर में गुरु आदि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(गु० गु०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर गुरु की ही प्राणदशा में शोक का नाश, धन की वृद्धि, अग्निहोत्र, शिव का पूजन और वाहन छत्रादि का लाभ होता है।

पुत्र-लाभ, मन को सौख्य, अर्थलाभ, अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति, विद्या और भक्ति की वृद्धि होती है।

(गु० श०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में व्रतभंग, परदेशगमन, सम्पत्ति की हानि, वैर-विरोध और धन का नाश होता है।

इन्द्रियों का नष्ट होना, उत्कट रोग, देशान्तरों में भ्रमण, बन्धु और धन का नाश होता है।

(गु० बु०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में विद्या, बुद्धि और धर्म की वृद्धि, लोक में आदर-सम्मान, सुख और धन लाभ होता है।

वाहन, बन्धु, कीर्ति और सौभाग्य की प्राप्ति, उत्साह से कार्यसिद्धि होती है।

(गु० के०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में ज्ञान, वैभव, पांडित्य, शास्त्र-श्रवण, शिवपूजन, अग्निहोत्र और गुरु में निष्ठा, भक्ति होती है।

व्याधि (बवासीर) का भय, बन्धु-हानि, भ्रमण में गिरने का भय, देश-त्याग, राज-भय होता है।

(गु० शु०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में रोग से मुक्ति, सुख-भोग, धन-धान्य का आगम और स्त्री-पुत्र-सुख होता है।

वस्त्र, अन्न और धन की सिद्धि, मित्रों, बन्धुओं का समागम, विविध कल्याण और कान्ति की प्राप्ति होती है।

(गु० सू०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में वायु-पित्त का प्रकोप, कफ-वृद्धि, तथा रस-व्याधि से शूल होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्वर आदि से मृत्यु, पुत्र के संबंध में व्याकुलता और शरीर में ताप की वृद्धि होती है।

(गु० चं०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में छत्र चामर आदि विलासिता की वस्तुओं की प्राप्ति, ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्र-लाभ और नेत्र तथा उदर-रोग से कष्ट होता है।

वस्त्र, अन्न और धन की सिद्धि, मित्रों और बन्धुओं का समागम, कल्याण और कान्ति की उत्पत्ति होती है।

(गु० मं०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा में स्त्री-जाति से विष का भय, बन्धन, जेल या देशान्तर-यात्रा, वैर-विरोध, और मति-भ्रान्ति होती है।

वात रोग का नाश, कार्य में सिद्धि, सब धर्मों में श्रद्धा और समुद्र से वस्तुओं का लाभ होता है।

(गु० रा०)—गुरु के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में व्याधि का आक्रमण, चोर द्वारा द्रव्य का अपहरण, सर्प तथा बिच्छू आदि के काटने का भय होता है।

व्याधियों से पराभव, चोरों द्वारा धन का हरण, सर्पादि से डसने का भय होता है।

शनि के सूक्ष्मान्तर में शनि आदि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(श० श०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में शनि की ही प्राणदशा में ज्वरादि रोग, कान्तिहीनता, कुष्ठ रोग की सम्भावना, जल अग्नि से मृत्यु-भय होता है।

ज्वर, अतिसार, ताप, कुष्ठ रोग, जल में डूबने से मृत्यु आदि होते हैं।

(श० बु०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में धन-धान्य लाभ, मंगल-कृत्य एवं पारस्परिक व्यवहार में आदर-सम्मान, देवता और ब्राह्मण में भक्ति होती है।

मंगलकार्य, सुवर्ण-लाभ, पुत्र-प्राप्ति, राज-सम्मान, प्रतिदिन ऐश्वर्य-वृद्धि होती है।

(श० के०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में मृत्युतुल्य कष्ट, भूतादि का उपद्रव और परस्त्री के वशीभूत होने की सम्भावना होती है।

व्यसन, दुर्व्याधि या भूतप्रेतों के उपद्रव से मृत्यु, पुत्र स्त्री आदि का विनाश होता है।

(श० शु०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में पुत्र, धन, वैभव का सुख, राज्याधिकारियों की कृपा से सुख-लाभ एवं अग्निहोत्र या विवाह होता है।

पुत्र और धन का सुख, ख्याति और सम्मान-लाभ, अग्निहोत्र और विवाह-सुख की प्राप्ति होती है।

(श० सू०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में अग्नि-भय, शिरोव्यथा, सर्प तथा शत्रु-भय, धन-हानि और महाकष्ट होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आँखों में रोग, शिर में व्यथा, शत्रुओं का भय, अपमृत्यु, धन-नाश, बड़े जनों को कष्ट होता है।

(श० चं०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में आरोग्य-लाभ, पुत्र-जन्म, शान्ति एवं पौष्टिक कर्म की वृद्धि और देवता-ब्राह्मण में भक्ति होती है।

आरोग्य, पुत्र-लाभ, शान्तिक तथा पौष्टिक यज्ञ, देवताओं और ब्राह्मणों की पूजा होती है।

(श० मं०)—शनि के सूक्ष्मांतर में भौम की प्राणदशा में गुल्मरोग, शत्रु भय, शिकार में मरण-भय, सर्प तथा अग्नि से भी भय होता है।

गुल्म-रोग, शत्रुओं से पीड़ा, क्लेश तथा विविध प्रकार के रोग, अग्नि-भय तथा जंगली जीवों से भय होता है।

(श० रा०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में देशत्याग, राजभय, मोह, विषपान, वात-पित्त-रोग से पीड़ा होती है।

देशत्याग, महाभय, भ्रान्ति, विष खा लेना, वात-पित्त कफ की वृद्धि होती है।

(श० गु०)—शनि के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में सेनापतित्व, नेतृत्व, अधिकार की प्राप्ति, भूमि-लाभ, आत्मीयजनों से समागम, राज्याधिकारियों, विद्वानों से गौरव प्राप्त होता है।

सेनापति का पद, भूमि का लाभ, अच्छे जनों से संगम, राज-सम्मान, विविध गन्ध, अन्न-पानादि की प्राप्ति होती है।

बुध के सूक्ष्मांतर में बुध आदि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(बु० बु०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में आरोग्य-लाभ, सुख-सम्पत्ति, धर्म-कर्म आदि के साधनों की प्राप्ति और सभी प्राणियों में समत्वबुद्धि होती है।

विषमता, रोग-नाश, शत्रु-नाश, शिव-पूजन, सब प्राणियों में समता का भाव होता है।

(बु० के०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में अग्नि, चोर और विष का भय, महाव्याधि की सम्भावना तथा मरणतुल्य कष्ट होता है।

जलन, छाती और पेट में दर्द, खाने-पीने में विष का भय, विशेषकर त्रिदोष (वात पित्त कफ-सन्निपात) का भय, अपस्मार (मिरगी) की सम्भावना होती है।

(बु० शु०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में प्रभुत्व, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति, धर्म की वृद्धि, शिवपूजन और स्त्री पुत्र से सुख होता है।

वाहन और बन्धु का लाभ, भूषण और धन की प्राप्ति होती है। सबसे पूजित होता और शुभ दशा का भोग करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बु० सू०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में अन्तर्दाह, ज्वर, उन्माद, बन्धु-बान्धव तथा स्त्री से प्रेम और अवैध रीति से धनलाभ होता है।

अन्तर्दाह, ज्वर उन्माद, बान्धवों द्वारा तिरस्कार, पापों और रोगों की प्राप्ति होती है।

(बु० चं०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में स्त्री, धनसम्पत्ति का लाभ, कन्या-जन्म, धनागम और सर्वत्र सुख की प्राप्ति होती है।

आरोग्य, धनलाभ, वस्त्रलाभ, भूषण-लाभ, राजपक्ष से सम्मान होता है।

(बु० मं०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा में उदर-रोग, दांत नेत्र आदि में पीड़ा और बवासीर, प्राण-हानि या पतन की सम्भावना होती है।

अकस्मात शत्रु द्वारा प्रहार, अकस्मात धन-हानि, रक्तपित्त की पीड़ा होती है।

(बु० रा०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में वस्त्राभूषण और सम्पत्ति से वियोग, ब्राह्मण से बैर, सन्निपात-रोग का भय होता है।

वस्त्र-आभूषण आदि की हानि, ब्राह्मणों और बान्धवों से विरोध, व्याधि और घावों की अधिकता होती है।

(बु० गु०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में गुरुत्व (गौरव), धन-सम्पत्ति, विद्या और सद्गुण का संग्रह और वाणिज्य-व्यवसाय से लाभ होता है।

बड़े जनों से मेल, सन्तान और विद्या का लाभ, विवाह, व्यापार में पराधीनता, अथवा नौकरी का लाभ होता है।

(बु० श०)—बुध के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में चोरी से मरण-भय, निर्धनता और भिक्षावृत्ति का प्रादुर्भाव होता है।

चोर, अग्नि और शत्रु की बाधा, कठोरता, दरिद्रता और विशेषकर अपवाद लगने का भय होता है।

केतु की सूक्ष्मदशा में केतु आदि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(के० के०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में केतु की ही प्राणदशा में सवारी से गिरने या पैर फिसलने से चोट लगती है। शत्रु से झगड़ा या अविचार से वध का पाप लगता है।

शरीर में पीड़ा, सन्ताप, वस्त्र और आभूषणों की हानि, अनेक जनों से विवाद होता है।

(के० शु०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में भूमि और वाहन का लाभ, वैरी का नाश, मानसिक सुख और पशु-धन की वृद्धि होती है।

वृक्ष से गिरना, चोट लगना, पैर फिसलना, अविचार के कार्य करना, विष का भय होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(के० सू०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में चोर, अग्नि, शत्रु से अवरोध या घात, मनोव्यथा और प्राणान्त तुल्य कष्ट होता है।

जल अग्नि, शत्रु और शस्त्र आदि से भय, दीर्घकालीन रोग, प्राणों का संशय और पीड़ा होती है।

(के० चं०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में देवता, ब्राह्मण और गुरु में भक्ति दूर की यात्रा, धन और सुख की प्राप्ति, किन्तु कष्ट या नेत्र में रोग होता है।

देवता और ब्राह्मणों की पूजा तथा तीर्थ-यात्रा में रुचि, कमर तथा नेत्र में रोग होता है।

(के० मं०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा में तीव्र रोग, आलसी बुद्धि, सन्निपात आदि रोग से बुद्धि-विभ्रम और अपने बन्धुओं से विद्वेष होता है।

तीव्र क्रोध की बुद्धि, शत्रुओं की वृद्धि, अङ्गों में असाध्य पीड़ा, खाने-पीने में अरुचि होती है।

(के० रा०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में स्त्री-पुत्रादि से विरोध, गृह-त्याग, साहस के कार्य में हानि होती है।

शस्त्र से चोट लगना, मित्रों को पीड़ा, निर्धनता, स्त्री का वियोग, हाथी-घोड़ों का विनाश होता है।

(के० गु०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में शस्त्राघात, व्रण और हृदय-रोग, स्त्री-पुत्रादि से वियोग होता है।

अच्छे-अच्छे वस्त्रों और आभूषणों की प्राप्ति, स्वामी की सेवा में कुशलता, लोगों की अनुकूलता होती है।

(के० श०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में मतिभ्रम, तीक्ष्ण स्वभाव, सदा क्रूर कर्म में प्रवृत्ति एवं दुर्व्यसन के कारण बन्धन और दुःख होता है।

युद्ध में प्रीति, मन की तीक्ष्णता, क्रूर कर्म में रुचि, दूसरों को ठगने से बन्धन की प्राप्ति होती है।

(के० बु०)—केतु के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में पुष्प-शय्या पर शयन, सुगन्ध-लेपन सुभोजन और सर्वाङ्गपूर्ण सुख-भोग प्राप्त होता है।

फूलों की शैय्या, आभूषण सुगन्धित द्रव्यों का सेवन और संसार के सुखों का उपभोग होता है।

शुक्र के सूक्ष्मान्तर में शुक्र आदि ग्रहों की प्राणदशा का फल

(शु० शु०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में शुक्र की प्राणदशा में ज्ञान, ईश्वर-भक्ति, सन्तोष एवं रसायन की प्राप्ति और पुत्र-पौत्रादि की समृद्धि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान, ईश्वर-भक्ति, जल-कर्म, रसायन कर्म, पुत्र-पौत्र की वृद्धि होती है ।

(शु० सू०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में सूर्य की प्राणदशा में संसार में यश, कीर्ति, पुत्र-सुख की हानि, उष्ण रोगादि दुःख होता है ।

लोक में प्रताप और कीर्ति-लाभ, पुत्र और सुख का अभाव, गर्मी आदि से सम्बद्ध रोग होते हैं ।

(शु० चं०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में चन्द्रमा की प्राणदशा में देवार्चन, मन्त्रानुष्ठान में तत्परता, सन्तोष, धन और सौभाग्य की प्राप्ति होती है ।

देवताओं की पूजा, मन्त्रों का जप, अनुष्ठान, धन-लाभ, सौभाग्य-वृद्धि होती है ।

(शु० मं०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में भौम की प्राणदशा में ज्वर, व्रण, मसूरिका (चेचक), दाद खुजली-रोग और देव-ब्राह्मण में भक्ति होती है ।

ज्वर, शरीर में चकत्ते पड़ जाना, विष फैलानेवाले फोड़े और घाव होना, नित्य ब्राह्मणों का सत्कार होता है ।

(शु० रा०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में राहु की प्राणदशा में नित्य शत्रु से पीड़ा, नेत्र, कुक्षि में रोग, मित्र-विरोध और दुःख होता है ।

विष से या नजर लगने से पीड़ा, नेत्र कुक्षि और गुदा के रोग, आत्मीय जन से कलह होता है ।

(शु० वृ०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में गुरु की प्राणदशा में आयुर्दाय, आरोग्यता और ऐश्वर्य का लाभ, धन, स्त्री, पुत्र का सुख, उत्तम वाहन की प्राप्ति होती है ।

आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, पुत्र, स्त्री, सेवक, छत्र-वाहन आदि का लाभ होता है ।

(शु० श०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में शनि की प्राणदशा में राज-प्रकोप, सुख की हानि, महारोग और नीच जन से विवाद होता है ।

राजपक्ष से उपद्रव, बुरे मार्ग में प्रवृत्ति, सुख-हानि, रोग और नीचों से झगड़ा होता है ।

(शु० बु०)—शुक्र की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा में सुख-सन्तोष, राज-सम्मान, अनेक दिशाओं से भूमि-धन का लाभ और नित्य उत्साह में वृद्धि होती है ।

सन्तोष, राज-सम्मान, विभिन्न देशों से सम्पत्ति-प्राप्ति, नित्य उत्साह में वृद्धि होती है ।

(शु० के०)—शुक्र की सूक्ष्मदशा में केतु की प्राणदशा में आत्म-यश की हानि, धन-धान्य का क्षय, दानपूर्वक ही सम्पत्ति का भोग शक्य होता है ।

अत्यन्त आत्म-ग्लानि, धन-धान्य और परिजन आदि सबका त्याग करके रहने की प्रवृत्ति होती है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशाफलादेश की सरल संक्षिप्त रीति

पराशर-मतानुसार दशा-फलादेश में ग्रहों की पूर्ण दृष्टि ही उपादेय है। सब ग्रह अपने स्थान से सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं एवं शनि ३, १० स्थान को और बृहस्पति ५, ९ को और मंगल ४, ८ स्थानों को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। सूर्य, शनि, मंगल नैसर्गिक क्रूर ग्रह तथा गुरु, शुक्र नैसर्गिक सौम्य ग्रह है। पूर्णबली चन्द्रमा शुभ, क्षीणबली पापी होता है। बुध पापग्रह के साथ पापी, शुभग्रह के साथ शुभद होता है। राहु केतु सहवासानुसार फल देते हैं। सम्बन्ध-मात्र से योग-कारकत्व कहा गया है; परन्तु सम्बन्ध कई प्रकार के होते हैं जिनमें मुख्य सात ये हैं—

(१) दो या अधिक ग्रह किसी एक ही घर में बैठे हों। (२) दो या अधिक ग्रह एक दूसरे को देख रहे हों। (३) कोई ग्रह अपने घर में बैठे ग्रह को देख रहा हो। (४) कोई ग्रह जिस ग्रह के घर में बैठा हो, उस ग्रह को देख भी रहा हो। (५) दो ग्रह एक दूसरे के घर में बैठे हों। (६) दो ग्रह एक दूसरे के घर में बैठे हों और उनमें से कोई एक दूसरे को देख रहा हो। (७) दो ग्रह एक दूसरे के घर में बैठकर एक दूसरे को देख भी रहे हों। ये सात प्रकार के सम्बन्ध उत्तरोत्तर बली होते हैं। ये सात प्रकार के सम्बन्ध जब निम्नांकित भावाधिपतियों में बनते हैं तो निश्चित रूप से उत्कृष्ट फल प्रदान करते हैं। १—आत्मसम्बन्धी—केन्द्रेश त्रिकोणेश का परस्पर सम्बन्ध (उक्त सातों प्रकार में-से कोई भी एक) २—त्रिषडायपति और द्वितीय द्वादश-पतियों का परस्पर सम्बन्ध। ३—साधर्म्य सम्बन्धी—त्रिकोणेश का त्रिकोणेश के साथ, केन्द्रेश का केन्द्रेश के साथ, त्रिषडाय पति का त्रिषडाय पति के साथ, द्वितीय द्वादशाष्टम-पति का द्वितीय द्वादशाष्टम-पति के साथ। दशा-फलादेश में इन सभी सम्बन्धों का विचार करना नितान्त आवश्यक होता है, क्योंकि ग्रहों की दशा का सर्वाधिक शुभाशुभ फल उनके पारस्परिक सम्बन्ध से ही प्राप्त होता है।

कोई भी ग्रह यदि त्रिकोण १।५।९ वें भाव का स्वामी हो तो शुभ फल देता है। त्रिषडाय ३।६।११ वें भाव का अर्थात् काम, क्रोध, लोभ का स्वामी हो तो अशुभ फल देता है; परन्तु त्रिकोण का स्वामी त्रिषडाय पति भी हो तो मिश्र-फल देता है। आशय यह है कि लग्न से ग्रह अपने दशा-काल के पूर्वार्द्ध में त्रिषडाय पति हो तो अशुभ फल देगा, और उत्तरार्द्ध में त्रिकोण-पति हो तो शुभ फल देगा। एवं पूर्वार्द्ध में त्रिकोण पति हो तो शुभ और उत्तरार्द्ध में त्रिकोण पति हो अशुभ फल देगा। फल-विचार में लग्नेश से पञ्चमेश और पञ्चमेश से नवमेश बली होता है एवं तृतीयेश से षष्ठेश और षष्ठेश से एकादशेश बली होता है।

यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध, पूर्ण चन्द्र) केन्द्रेश हों तो शुभ दशाफल नहीं देते, जब उनका किसी शुभ ग्रह से सम्बन्ध न हो। पापग्रह (क्षीण चन्द्र, पापयुत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध तथा, रवि, शनि, मंगल) केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पापफल नहीं देते, जब तक उनका किसी पापग्रह से सम्बन्ध न हो। यदि पापग्रह केन्द्रेश के अतिरिक्त त्रिकोणेश भी हो तो उसमें शुभत्त्व आ जाता है; यदि त्रिषडाय पति हो तो अशुभत्त्व प्राप्त होता है। चतुर्थेश से सप्तमेश और सप्तमेश से दशमेश बली होता है।

जन्म-पत्र में किसी भाव का विचार करना हो तो उसे तनु (प्रथम) भाव मानकर उसी से व्ययेश (द्वादशेश) व धनेश (द्वितीयेश) का विचार करना चाहिए। लग्न के द्वादशेश तथा द्वितीयेश दूसरे ग्रहों के साहचर्य से उनके स्वभावानुसार शुभाशुभ फल देते हैं। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो, तदनुरूप फल वह देता है। यदि कोई ग्रह साथ में न हों तो वह जिस दूसरे स्थान का स्वामी हो, तदनुसार फल समझना चाहिये। यदि रवि चन्द्र दो में-से कोई धनेश या नवमेश हो तथा असम्बन्धी होकर स्वराशि में बैठा हो तो वह अपने निजी फल के बजाय अपने अन्तर्दशेशों के अनुसार फल देगा। इस भाँति उस भाव की वृद्धि और नाश का विचार करना चाहिये। भाग्य का व्ययाधिप अष्टमेश शुभ फल नहीं देता। यदि वह लग्न या त्रिकोण का स्वामी भी हो तो शुभ फल देता है। अष्टमेश रवि चन्द्र हो तो शुभकारक हैं।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है, वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। शुभ ग्रहों का मारकत्वः—सप्तमेश होने पर गुरु, शुक्र में विशेषकर मारकत्व दोष आता है तथा केन्द्रेश होकर मारक-स्थान (२।७।१२) में रहना भी गुरु शुक्र का विशेष दोषकारक होता है। इन दोनों से न्यून मारकत्व बुध में, बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। पापग्रहों का मारकत्वः—त्रिषडाय पति होने से पापकारक शनि का मारकग्रह से सम्बन्ध हो तो अन्य मारकों को हटाकर शनिदेव स्वयं मारक हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं। राहु केतु तो सूर्य और चन्द्रमार्ग के सम्पात-विन्दुरूप बिम्बहीन ग्रह हैं, अतः जिस-जिस राशि में अथवा जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी राशि अथवा भावेश के स्वाभावानुसार शुभाशुभ फल देते हैं।

सम्बन्ध रहित केन्द्रेश ग्रह अपने नैसर्गिक शुभाशुभ स्वभाव को भूल जाते हैं। जब केन्द्रेश का त्रिकोणेश से सम्बन्ध हो तो विशेष शुभ फल होता है अन्यथा जैसे स्वभाववाले ग्रह से सम्बन्ध होगा, वैसा ही फल वह देगा, परन्तु त्रिषडाय पति से सम्बन्ध हो तो सामान्य रूप से फल देगा। यदि केन्द्रेश त्रिकोणेश स्वयं अस्त, वक्री, नीचादि दोष से युक्त भी हों तथापि उपर्युक्त सहवासादि सम्बन्धों के कारण योगकारक होने से विशेष फलदायक होते ही हैं। यदि दशमेश त्रिकोण में, त्रिकोणेश दशम में अथवा वे दोनों एक ही साथ दशम में या त्रिकोण में हों तो उत्कृष्ट योगकारक होते है। इसी प्रकार यदि अन्य केन्द्रेश त्रिकोण में या त्रिकोणेश केन्द्र में हो तो भी उत्तम योगकारक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है। आशय यह है कि केन्द्रेशों में सबसे बली दशमेश है, उससे नवमेश का सम्बन्ध उत्तम और पञ्चमेश का सम्बन्ध मध्यम राजयोगकारक होता है। तथैव सप्तमेश, चतुर्थेश का सम्बन्ध क्रमशः नवमेश, पञ्चमेश से हो तो उत्तरोत्तर न्यून राजयोग होता है। यदि एक ही ग्रह केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी हो और उसका दूसरे त्रिकोण से भी सम्बन्ध हो जाय तो इससे बड़ा शुभ राजयोग क्या हो सकता है?

यदि तमोग्रह (राहु व केतु) केन्द्र में हों और त्रिकोणेश से सम्बन्ध हो, अथवा त्रिकोण में हों और केन्द्रेश से सम्बन्ध हो तो शुभ योगकारक होते हैं। वृष लग्नवाले की कुण्डली में नवमेश और दशमेश एक शनि, और अष्टमेश-लाभेश एक गुरु के उपाधिवश द्विधाभूत सम्बन्ध-मात्र से जातक भाग्यशाली नहीं हो सकता; परन्तु लग्नेश शुक्र या योगकारक बुध भी उनसे सम्बन्ध करता हो तो उक्त योग भंग हो जाता है अर्थात् जातक भाग्यशाली हो जाता है। अब विचारणीय यह है कि योगकारक ग्रहों का शुभाशुभ फल कब मिलेगा? केन्द्रेश त्रिकोणेश से सम्बन्ध रहित शुभकारक ग्रह की दशा में भी जब एक योगकारक की अन्तर्दशा और दूसरे की प्रत्यन्तर्दशा होती है तभी विशेषतया योगफल प्राप्त होता है। अतः सम्बन्धित शुभकारक की दशा में तो अवश्य पूर्ण रूपेण फल प्राप्त होगा। स्वाभाविक अथवा तात्कालिक स्वयं पापग्रह भी योगकारक ग्रह के सम्बन्ध से अपनी दशा में तथा योगकारक की अन्तर्दशा-प्रत्यन्तर्दशा में योगज फल देते हैं; जैसे, दुष्ट मनुष्य सज्जन के सम्बन्ध से हित-साधक हो ही जाते हैं। सब पाप तथा शुभग्रह अपनी दशा में, अपनी अन्तर्दशा आने पर अपने स्वभावानुरूप प्राणियों को शुभाशुभ फल विशेष रूप से नहीं देते हैं। जो ग्रह अपने सम्बन्धी तथा जो अपने सधर्मी रहते हैं उनकी अन्तर्दशा में ही स्वभावानुसार अपनी दशा का फल विशेष रूप से देते हैं। केन्द्र-पति अपनी दशा में स्वसम्बन्धी त्रिकोणेश की अन्तर्दशा आने पर शुभ फल देता है एवं त्रिकोणेश स्वसम्बन्धी केन्द्रेश की अन्तर्दशा आने पर शुभ फल देता है। सम्बन्ध न होने पर केन्द्रेश की दशा में त्रिकोणेश की अन्तर्दशा आने पर केन्द्रेश अशुभ फल ही देता है।

शनि तथा शुक्र दोनों एक दूसरे की अन्तर्दशा एवं अपनी महादशा में अपना शुभाशुभ फल विशेष रूप से देते हैं अर्थात् शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा शुक्र संबंधी फल का और शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा शनि के फल को विशेष रूप से देती है। पञ्चमेश की दशा में नवमेश की अन्तर्दशा शुभ फल देती है तथा पञ्चमेश नवमेश से युक्त हो तो इनकी दशा-अन्तर्दशा धन, वैभव और पुत्र देनेवाली होती है। नवमेश युक्त चतुर्थेश की दशा भी शुभप्रदा होती है। कोई भी ग्रह पञ्चमेश नवमेश युक्त हो तो उसकी दशा भी शुभ होती है। पापग्रह से युक्त ग्रह की दशा अशुभ और शुभग्रह से युक्त ग्रह की दशा शुभ होती है। चतुर्थेश या पञ्चमेश या नवमेशयुक्त लग्नेश और दशमेश की दशा राज्य-सुख देनेवाली होती है। नवमस्थान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थिति दशमेश की और चतुर्थेश युक्त दशमेश की दशा भी सुख और प्रतिष्ठा देनेवाली होती है। अष्टमेश (रोगेश), सप्तमेश (मारकेश) होने पर भी यदि दशम भाव में हो तो उसकी दशा शुभ होती है; जैसे, कर्क लग्न की कुण्डली के दशम भाव में नीच का शनि। यदि द्वितीय और सप्तम दोनों मारक-स्थान का स्वामी एक ही ग्रह होकर भी चतुर्थ-स्थान में चतुर्थेश से युक्त हो तो उसकी दशा शुभप्रदा होती है—जैसे, मेषलग्न की कुण्डली के चतुर्थ भाव में चन्द्र शुक्र का योग। षष्ठेश, अष्टमेश और द्वादशेश भी यदि पञ्चमेश से युक्त हो तो उनकी दशा भी शुभद होती है। इस प्रकार ग्रहों के बलाबल विचार कर ज्योतिषी को दशा का सूक्ष्म फल निश्चित करना चाहिए।

लग्नेश यदि अपने नवांश, द्वादशांश, द्रेष्काण, त्रिशांश में हो या मित्र के त्रिशांश, नवांश या द्वादशांश में हो तो उसकी अन्तर्दशा शुभप्रदा होती है। चतुर्थ, पञ्चम, नवम भाव के नवांश, द्वादशांश एवं द्रेष्काण में जो ग्रह हो, उसकी भी अन्तर्दशा शुभ होती है। लग्नेश जिस राशि नवांश में हो उसका स्वामी मित्र के नवांश, द्वादशांश, द्रेष्काण में बैठा हो और मित्र से देखा जाता हो तो उसकी अन्तर्दशा शुभ होती है। षष्ठेश, अष्टमेश, द्वादशेश की अन्तर्दशा अशुभ होती है। यदि मारकेश से युक्त षष्ठेश और लग्नेश हो तो उसकी अन्तर्दशा में ज्वर होता है। यदि षष्ठेश लग्नेश के साथ रवि के षड्वर्ग में हो तो उसकी दशा में पित्तरोग, चन्द्रमा के षड्वर्ग में जलोदर रोग, मंगल के षड्वर्ग में रुधिर-विकार होता है। बुध के वर्ग में वायु-विकार, गुरु के वर्ग में कफ-रोग, शुक्र के वर्ग में उपदंश-रोग, वीर्य-विकार, शनि के वर्ग में सन्निपात रोग होता है। लग्नेश या षष्ठेश की दशा में मारकेश की अन्तर्दशा हो तो उस समय महा भय होता है। तृतीयेश, चतुर्थेश, दशमेशादि के साथ षष्ठेश रव्यादि षड्वर्ग में हो तो क्रमशः अपने भाई, माता, पिता इत्यादि सम्बन्धियों का फल समझिये।

लग्नेश और षष्ठेश यदि अष्टमेश या मारकेश से युक्त हों तथा स्वयं दोनों क्रूर हों तो उन दोनों की अन्तर्दशा में आघात से पीड़ा होती है। यदि शुभग्रह का योग हो तो रोग की बाधाएँ होती हैं। पापग्रह का योग हो तो मृत्युप्रद कष्ट होता है। यदि राहु, केतु, शनि, भौम अष्टम भाव में मारकेश से युक्त हो तो उसकी दशा-अन्तर्दशा में स्वाँस, कास, हैजा, प्लेग आदि रोग होते हैं।

मारक-स्थान २।७ के स्वामी और उनके सम्बन्धी अर्थात् मारक-स्थान में रहनेवाला, मारकेश के साथ रहनेवाला और पापी त्रिषडाय-पति ग्रह ये तीन प्रकार के मुख्य मारक हैं। इनमें भी द्वितीयेश सबसे प्रबल, उससे न्यून सप्तमेश, अष्टमेश, तृतीयेश, उससे न्यूनबली द्वितीयेश के साथ रहनेवाला ग्रह, उससे न्यून बली सप्तमेश के साथ रहनेवाला पापीग्रह मारक होता है। इनमें जो प्रबल मारक हो, उनमें-से किसी एक की दशा और दूसरे की अन्तर्दशा आने पर मरण होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य और चन्द्रमा स्वयं मारकेश नहीं होते। मारक ग्रह की दशा, अन्तर्दशा में मृत्यु नहीं होती; किंतु पापग्रहों का योग होने से अथवा पापग्रहों की अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर्दशा आने पर ही मृत्यु होती है। मारकग्रह शुभग्रह की अन्तर्दशा में मृत्युकारक नहीं होता। जब पाँचों ही दशाएँ पापग्रह की हों अथवा मारक ग्रह की हों तो उस समय मृत्यु निश्चित होती है। दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा तीनों ही पापग्रह या मारक ग्रहों की हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

दशा-अन्तर्दशा के फल जानने के कुछ सरल नियम

जो ग्रह नीच राशि, शत्रुगृह या शत्रु के नवमांश में हो, उसकी दशा आरम्भ में ही अशुभ फल देती है। जो ग्रह उच्चस्थ तथा मित्रगृही होते हुए शत्रु या नीच राशि के नवमांश में हो, उसकी दशा आरम्भ में शुभ फल तथा उत्तरार्ध में मिश्रित फल देती है। जो ग्रह मित्रगृह, उच्चराशि या अपने मूल त्रिकोण में, अपने घर में तथा अपनी ही हद्दा, द्रेष्काणादि वर्ग में हो, उसकी सम्पूर्ण दशा शुभदायी होती है। जो ग्रह नीच राशि में, शत्रुगृह में या अस्त हो, उसकी संपूर्ण दशा कष्टदायिनी होती है। अवरोहिणी दशा यदि अधमा हो तो कष्ट देनेवाली, आरोहिणी मध्यम हो तो सम्पूर्ण दशा कष्ट देनेवाली होती है। जो ग्रह शुभग्रह से दृष्ट, शुभयुक्त हो, उदित हो, केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो, उसकी सम्पूर्ण दशा शुभफल देनेवाली, इसके विपरीत हो तो कष्ट देनेवाली होती है।

चरराशि लग्न में हो तो उसमें स्थित ग्रह की आरम्भिक दशा श्रेष्ठ, मध्य की मध्यम तथा अन्त की कष्ट देनेवाली होती है। यदि लग्न में द्विस्वभाव राशि हो, उसमें कोई ग्रह बैठा हो तो उसकी दशा आरम्भ में कष्ट देनेवाली, मध्य में मध्यम तथा अन्त में शुभ फल देती है। यदि स्थिर राशि लग्न में हो तो उसमें जो ग्रह बैठा हो, उसकी आरम्भ की दशा कष्ट देनेवाली तथा शेष दशाएँ समफलदायी होती हैं। जो ग्रह वक्री हो, उसकी दशा मान-प्रतिष्ठा तथा सौख्य की हानि करती है। त्रिक् (६, ८, १२) को छोड़कर अन्य स्थान में स्थित ग्रह की दशा में अभीष्ट की सिद्धि होती है। भाग्येश के शत्रुग्रह की दशा में बुद्धि-विनाश तथा राज-भय की सम्भावना होती है। जो ग्रह राहु से युक्त हो, उसकी दशा सामान्यतः अरिष्ट उत्पन्न करनेवाली होती है। यदि लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उसकी अन्तर्दशा शारीरिक पीड़ा देनेवाली होती है। पाप ग्रह की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा शत्रु से आर्थिक हानि तथा महाभय को देनेवाली होती है। अधिक इष्टदग्रह की दशा श्रेष्ठ, अधिक कष्टद ग्रह की दशा नेष्ट तथा समग्रह की दशा समफलदायी होती है। लग्नेश की दशा शारीरिक सुख, धन तथा बल की वृद्धि करती है; किन्तु स्त्री-कष्ट भी देखने में आता है। धनेश की दशा शारीरिक कष्ट तथा आर्थिक सुख देनेवाली होती है। यदि द्वितीयेश पापग्रह से युक्त हो तो मृत्यु भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो सकती है। तृतीयेश की दशा कष्टकारक, चिन्ताजनक और साधारण आमदनी करानेवाली होती है। चतुर्थेश(सुखेश) की दशा में मकान, वाहन, भूमि आदि का लाभ-सुख मिलता है। माता, मित्रादि और स्वयं को भी शारीरिक सुख होता है। चतुर्थेश बलवान ग्रह से दृष्ट हो तो उसकी दशा में जातक नया मकान बनवाता है। लग्नेश और चतुर्थेश दोनों दशम या चतुर्थ में हों तो उसकी दशा में जातक मिल या बड़ा कारोबार करता है; लेकिन इस दशा-काल में पिता को कष्ट रहता है। विद्या-लाभ, विश्वविद्यालय की बडी डिग्री, इसकी दशा-काल मे प्राप्त होती है। यदि जातक को यह दशा अपने विद्यार्थी-काल में न मिले तो अन्य समय में यह दशा आने पर विद्याविषयक उन्नति और विद्या द्वारा यश, ख्याति की प्राप्ति होती है। पंचमेश की दशा धन-धान्य देनेवाली होती है। उसमें विद्या सम्मान सुबुद्धि की प्राप्ति, माता की मृत्यु या उनको पीड़ा होती है। यदि पञ्चमेश पुरुष ग्रह हो तो पुत्र और स्त्री ग्रह हो तो कन्या संतति की प्राप्ति भी होती है; तदर्थ सन्तानयोग का विचार भी कर लेना चाहिये। षष्ठेश की दशा में शत्रु-भय, रोग-वृद्धि और सन्तान को कष्ट होता है। सप्तमेश की दशा में शोक, शारीरिक कष्ट, आर्थिक कष्ट और पदावनति होती है। सप्तमेश पापग्रह हो तो इसकी दशा में स्त्री को अधिक कष्ट और शुभग्रह हो तो साधारण कष्ट होता है। अष्टमेश की दशा में मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट पत्नी-मृत्यु एवं विवाहादि कार्य होते हैं। अष्टमेश पापग्रह हो और द्वितीय भाव में स्थित हो तो मृत्यु निश्चित होती है।

नवमेश की दशा धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति करानेवाली होती है। तीर्थ-यात्रा, दान-पुण्य, भाग्योदय, विद्या द्वारा उन्नति, मान-सम्मान, राजकीय पक्ष से लाभोन्नति और किसी महत्कार्य में अच्छी सफलता प्राप्त होती है।

दशमेश की दशा उच्चाधिकार तथा धन देनेवाली होती है। राजाश्रय की प्राप्ति, धन-लाभ, सम्मान-वृद्धि, सुखोदय होता है। माता और पिता के लिए यह दशा कष्टकारक होती है।

लाभेश (एकादशेश) की दशा लाभ देनेवाली होती है। ख्याति, व्यापार से प्रचुर लाभ एवं पिता की मृत्यु होती है। यह दशा सामान्यतः शुभफलदायक होती है। यदि लाभेश पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो यह दशा रोगोत्पादक भी हो जाती है।

द्वादशेश की दशा आर्थिक कष्ट देनेवाली होती है। चिन्ताधिक्य, शारीरिक कष्ट, व्याधियाँ, आकस्मिक हानि और कुटुम्बियों को कष्ट होता है।

दिग्बली ग्रह की दशा अपनी दिशा में महती प्रतिष्ठा दिलवाती है। परस्पर छठे-आठवें स्थित ग्रहों की दशान्तर्दशा महाभय देनेवाली, पाकेशाधीश की दशा में स्थानच्युति तथा हानि होती है। पापग्रह की दशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा हो तो आरम्भ में कष्ट, उसके बाद सुख होता है। शुभग्रह की दशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा सुख देनेवाली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होती है। शुभग्रह की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा आरम्भ में सुख तथा बाद में कष्ट देती है।

ग्रहों की दशा का फल सम्पूर्ण दशा-काल में एक-सा नहीं होता; किन्तु प्रथम द्रेष्काण में ग्रह हो तो दशा के आरम्भ में, द्वितीय में हो तो मध्य में और तृतीय में हो तो दशा के अन्त में फल की प्राप्ति होती है। वक्री ग्रह हो तो इसके विपरीत अर्थात् तृतीय द्रेष्काण में ग्रह के रहने से आरम्भ में, द्वितीय में रहने से मध्य में और प्रथम में रहने से अन्त में फल प्राप्त होता है।

वक्री मार्गी ग्रह की दशा का फल

वक्री ग्रह की दशा में सामान्यतः स्थान, धन, और सुख का नाश, परदेश-गमन होता है। वक्री ग्रह यदि शुभ भावोन्मुख हो तो सम्मान, सुख, धन, यश की वृद्धि, नेतागिरी और उद्योग की प्राप्ति होती है। मार्गी ग्रह यदि ६, ८, १२वें भाव में हो तो अभीष्ट-सिद्धि में बाधा आती है।

नीच और शत्रु-क्षेत्री ग्रह की दशा का फल

नीच और शत्रु-गृही की दशा में परदेश-निवास, स्वजन वियोग, शत्रुओं से क्षति, व्यापार में हानि, दुराग्रह, रोग, विवादवृद्धि और नाना प्रकार की विपत्तियाँ आती है। यदि ये ग्रह सौम्य ग्रहों से युत या दृष्ट हों तो बुरा फल कुछ न्यून हो जाता है।

सूर्य और चन्द्रमा स्वयं मारकेश नहीं होते हैं। स्वतः मारक ग्रह की महादशा, अन्तर्दशा में मृत्यु नहीं होती; किन्तु सम्बन्धित पापग्रहों की अन्तर्दशा अथवा प्रत्यन्तर्दशा आने पर मृत्यु सम्भावित होती है। मारक ग्रह शुभग्रह की अन्तर्दशा में मृत्युकारक नहीं होता है। जब पाँचों ही दशाएँ पापग्रह की हों अथवा मारक ग्रहों की हों, उस समय मृत्यु निश्चित रूप से होती है। महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा ये तीनों ही पापग्रह या मारक ग्रहों की हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

दशा का फल कहते समय तात्कालिक गोचर ग्रहों की स्थिति का भी खयाल रखना आवश्यक है। यदि दशाकारक ग्रह पापग्रह हो; और तात्कालिक स्थिति में वही ग्रह शुभ हो अथवा दशाकारक ग्रह शुभ ग्रह हो, किन्तु तात्कालिक स्थिति में पाप हो तो दशाफल में अन्तर आये बिना न रहेगा।

अन्तर्दशा के ग्रह की जैसी स्थिति होती है, प्रायः फल वैसा ही मिलता है। बलहीन शुभ भी प्रायः पापग्रह के समान फल देता है; अतएव दशा-काल में ग्रह के बलाबल का विचार कर लेना आवश्यक है।

प्राणदशा के फल-निरूपण में दशेश का लग्न से तात्कालिक स्थान और चन्द्रमा का तात्कालिक स्थान भी जान लेना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहु और केतु अपने दशा-काल में संयोगी या स्वद्रष्टा ग्रह का फल देते हैं। यदि वह पापग्रह से युत, दृष्ट रहता है तो अशुभ फल और शुभ ग्रहयुत, दृष्ट रहता है तो शुभ फल अन्यथा स्वस्थानानुसार फल देते हैं। चन्द्रमा भी बली ग्रह के संयोग से उसी के समान फल देता है।

अन्तर्दशेश जिस भाव का कारक या मारक होगा, उसी भाव पर अपना प्रभाव दिखलायेगा।

स्थानेश का फल

कोई भी स्वाभाविक शुभ या पापग्रह लग्न, नवम और पञ्चम स्थान का स्वामी होने से अपनी दशा, अन्तर्दशा में शुभ फल देते हैं और तीसरे, छठवें एकादश के स्वामी होने से अशुभ फल देते हैं।

केन्द्र (१, ४, ७, १० भाव) के स्वामी शुभग्रह हों तो वे अपनी दशा में शुभ फल नहीं देते और पापग्रह हों तो अशुभ फल नहीं देते अर्थात् शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रह केन्द्रेश होने पर अपना स्वाभाविक शुभाशुभ फल प्रदान करने में उदासीन हो जाते हैं। कोई ग्रह २, १२ भाव का स्वामी हो तो वह जिस प्रकार के शुभ या पापग्रह के साथ रहता है, उसी का फल देता है। यदि वह किसी ग्रह के साथ न हो तो अपने स्थानान्तर (दूसरे भाव) के अनुसार शुभ या अशुभ फल देता है।

अष्टमेश का फल कभी अच्छा नहीं होता। अष्टमेश ग्रह लग्नेश भी हो जाय तभी शुभ फल दे सकता है। बृहस्पति और शुक्र का केन्द्रेश होना विशेष दोषकारक माना गया है।

छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी जिन भावों में रहते हैं, उनको बिगाड़ते हैं; किन्तु किसी भी भाव का स्वामी स्वगृही हो तो उस स्थान का फल अच्छा होता है। ग्यारहवें भाव में सभी ग्रह शुभ फलदायक होते हैं। किसी भाव का स्वामी पापग्रह हो और वह लग्न से तृतीय स्थान में स्थित हो तो अच्छा होता है; किन्तु जिस भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह तीसरे स्थान में पड़े तो मध्यम फल देता है। जिस भाव में शुभ ग्रह रहता है, उस भाव के फल का विकास और जिसमें पापग्रह रहता है, उस भाव के फल का ह्रास होता है।

१-४-५-७-९-१० स्थानों में शुभ ग्रहों का रहना शुभ है। ३-६-११ भावों में पाप ग्रहों का रहना शुभ है। ६-८-१२ में कोई ग्रह न रहना शुभ है। २ में गुरु के अतिरिक्त शुभग्रह शुभद एवं पापग्रह अशुभ फलदायक होते हैं। जो भाव अपने स्वामी, शुक्र या बुध या गुरु से युक्त अथवा दृष्ट हो एवं अन्य किसी ग्रह से युक्त एवं दृष्ट न हो तो वह शुभ फल देता है। जिस भाव का स्वामी पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा उस भाव में पापग्रह बैठा हो तो उस भाव के फल का ह्रास होता है। भावाधिपति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्रगत, मित्रगृही और उच्च का हो तो उस भाव का शुभ फल होता है।

गुरु छठवें भाव में शत्रु-नाशक, शनि आठवें भाव में दीर्घायुकारक एवं मंगल दसवें भाव में उत्तम भाग्यविधायक होता है। राहु, केतु जिस भाव में रहते हैं उस भाव को बिगाड़ते हैं। गुरु अकेला द्वितीय, पंचम और सप्तम भाव में होता है तो क्रमशः धन, पुत्र और स्त्री के लिये अनिष्टकारक होता है। लग्न अथवा चन्द्रमा से ३, ६, १०, ११ (उपचय) भाव में तीन शुभ ग्रह हों तो जातक अत्यन्त धनवान, दो शुभग्रह हों तो मध्यम धनवान, एक शुभग्रह हो तो अल्प धनवान होता है। इन योगों का फल अन्य अशुभ (धन-हानिकारक) योग के रहने पर भी अवश्य होता है।

सूर्य, मंगल, शनि और राहु क्रमशः अधिक पापग्रह हैं। ये ग्रह पापग्रह की राशि में रहने से विशेष पाप एवं शुभग्रह की राशि और अपनी उच्च राशि में रहने से अल्प पापी होते हैं। चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु और गुरु ये क्रमशः अधिकाधिक शुभग्रह हैं। ये शुभ ग्रह की राशि में रहने से अधिक शुभ तथा पापग्रह की राशि में रहने से अल्प शुभ होते हैं। केतु फल-विचार में अधिकांशतः पापग्रह माना गया है।

अन्तर्दशा-फल-प्रतिपादन के नियम

१. पापग्रह की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा धन-हानि, शत्रु-भय और कष्ट देनेवाली होती है।

२. जिस ग्रह की महादशा हो, उससे छठवें या आठवें स्थान में स्थित ग्रहों की अन्तर्दशा स्थानच्युति, भयानक रोग, मृत्युतुल्य कष्ट या मृत्यु देनेवाली होती है।

३. पाप ग्रहों की महादशा में शुभ-ग्रहों की अन्तर्दशा हो तो उस अन्तर्दशा का पहला आधा भाग कष्टदायक और आखिरी आधा भाग सुखदायक होता है।

४. शुभग्रह की महादशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा धनागम, सम्मान-वृद्धि, सुखोदय और शारीरिक सुख प्रदान करती है।

५. शुभग्रह की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो अन्तर्दशा का पूर्वार्द्ध सुखदायक और उत्तरार्द्ध कष्टकारक होता है।

६. पापग्रह की महादशा में अपने शत्रुग्रह से युक्त पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो विपत्ति आती है।

७. शनि की राशि में चन्द्रमा हो तो उसकी महादशा में सप्तमेश की अन्तर्दशा परम कष्टदायक होती है।

८. शनि में चन्द्रमा और चन्द्रमा में शनि की अन्तर्दशा आने पर नाना प्रकार के शारीरिक और आर्थिक कष्ट होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९ बृहस्पति में शनि और शनि में बृहस्पति की अन्तर्दशा भी सर्वविध अनिष्ट-कारक होती है।

१०. मंगल में शनि और शनि में मंगल की अन्तर्दशा रोगकारक होती है।

११ शनि में सूर्य और सूर्य में शनि की दशा गुरुजनों के लिए कष्टदायक और अपने लिये चिन्ताकारक होती है।

१२. राहु में केतु और केतु में राहु की अन्तर्दशा भी अनिष्टकारक होती है। राहु ३. ६, ११ वें भाव में स्थित हो तो राहु की महादशा अच्छी रहती है। यों तो राहु संयोगीग्रह के अनुसार फल देता है; अपना स्वतः सत्त्व राहु नहीं रखता है।

१३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह ६, ८, १२ वें भाव में स्थित हो तो अन्तर्दशा का फल अधिकांशतः नेष्ट ही होता है।

दशवर्ग में विशेष विचार

प्राचीन आचार्य एवं ऋषियों ने ग्रहों की अवस्थाविशेष पर से फलादेश के लिए ये दश वर्ग कहे हैं १ गृह, २ होरा, ३ द्रेष्काण, ४ सप्तमांश, ५ नवमांश, ६ दशांश, ७ द्वादशांश, ८ षोड़शांश ९ त्रिशांशं एवं १० षष्ठ्यंश।

इनमें-से दो, तीन, चार आदि अनुकूल वर्ग रहने से पारिजात उत्तम, गोपुर आदि विशिष्ट संज्ञाएँ होती हैं; परन्तु जो ग्रह त्रिक् (६, ८, १२) में, शत्रुगृह में नीच अथवा मरणावस्था में रहें, वे बलहीन होने के कारण पारिजात, गोपुर, आदि उत्तम फलकारक योगों को विफल कर देते हैं।

पूर्वोक्त दशवर्गों में दो वर्ग अनुकूल रहने पर पारिजात, तीन से उत्तम, चार से गोपुर, पाँच से सिंहासन छः से पारावत, सात तथा आठ से देवलोक, नौ से ऐरावत एवं दश से वैशेषिक संज्ञा होती है।

ग्रहों की अवस्थिति से पहले श्रीशंकरजी ने जो उनके छः प्रकार के स्वभावों को कहा है, उनका विवरण भी यहाँ दिया जा रहा है—वे छः भाव ये हैं—(१) लज्जित (२) गर्वित (३) क्षुधित (४) तृषित (५) मुदित (६) एवं क्षोभित।

जो ग्रह अन्य ग्रह की राशि (अपने उच्च के अतिरिक्त) में राहु के साथ या सूर्य, शनि, मंगल के साथ हो, वह लज्जित कहा जाता है।

जो ग्रह अपनी उच्च राशि में रहते त्रिकोण (९, ५) में भी पड़ जाय, वह गर्वित कहा गया है।

जो ग्रह अपने शत्रु की राशि पर रहते शत्रु से देखा जाता हो या शनि के साथ हो, वह क्षुधित कहा जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो ग्रह जलचर राशि में रहते शत्रु से दृष्ट हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि उसके ऊपर न पड़ती हो तो उसे तृषित समझना चाहिये।

जो ग्रह मित्र की राशि में रहते मित्र के साथ हो और उसके ऊपर मित्रग्रह की दृष्टि भी पड़ती हो या उसके साथ बृहस्पति हो, वह मुदित कहा जाता है।

जो ग्रह जहाँ-कहीं रहते सूर्य के साथ हो और उसके ऊपर पापग्रह की दृष्टि भी पड़ती हो (या शत्रु शुभग्रह से देखा जाता हो) तो उसको क्षोभित जानना चाहिये।

मतान्तर से (१) दीप्त (२) स्वस्थ (३) प्रमुदित (४) शान्त (५) शक्त (६) प्रपीड़ित (७) दीन (८) विकल (९) एवं खल ये नौ प्रकार की अवस्थाएँ कही गयी हैं।

जो ग्रह अपनी उच्चराशि (परमोच्च) पर हो, वह दीप्त, अपनी राशि पर रहे तो स्वस्थ, अपने मित्र-ग्रह की राशि पर हो तो हर्षित मुदित) कहा गया है एवं शुभग्रहों के वर्ग में रहने से शान्त, उदित होकर देदीप्यमान होने से शक्त, सुप्त यानी अस्तंगत होने से विकल, अपने नीच-गृह में रहने से दीन, पापगृह के साथ रहने से खल एवं अन्य ग्रह के साथ युद्ध में पराजित (दक्षिण दिग्गत) रहने से पीड़ित कहा जाता है।

प्रत्येक विषय राशि (मेष मिथुन आदि) में आरम्भ के ६ अंश तक ग्रह की बाल अवस्था, ७ अंश से १२ अंश तक कुमार, १३ से १८ तक युवा, १९ से २४ तक वृद्ध तथा २५ से ३० तक मृत ये पाँच अवस्थाएँ होती हैं; समराशियों (वृष, कर्क आदि) में इससे उलटा अर्थात् प्रथम मृत, द्वितीय वृद्ध, तृतीय युवा, चतुर्थ कुमार और पञ्चम बाल-अवस्था होती है। इन अवस्थाओं के अनुसार ही सभी ग्रह अपने शुभाशुभ फल देने में सक्षम एवं प्रवीण होते हैं।

स्पष्टता के लिए चक्र--

विषम राशियाँ १, ३, ५, ९, ११	अवस्था	सम राशियाँ २, ४, ६, ८, १०, १२
० से ६ अंश तक	बाल अवस्था	२५ से ३० अंश तक
७ से १२ ,,	कुमार अवस्था	१९ से २४ ,,
१३ से १८ ,,	युवा अवस्था	१३ से १८ ,,
१९ से २४ ,,	वृद्ध अवस्था	७ से १२ ,,
२५ से ३० ,,	मृत अवस्था	० से ६ ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगिनी-दशाफल-विचार

भारतीय फलित ज्योतिष में अनेक प्रकार की दशाएँ एवं उनके फलादेश वर्जित हैं; किन्तु उनमें सर्वाधिक प्रचार विशोत्तरी दशा का ही है। उसके बाद योगिनी-दशा और कालचक्र-दशा का स्थान है। उत्तर-पश्चिमी भारत में तो योगिनी दशा के आधार पर फलनिरूपण का आम रिवाज है। विद्वान् अनुभवी फलितज्ञ जातक के विद्या-अध्ययन की अवधि के निर्णय में इस दशा-पद्धत्ति का उपयोग बड़े भरोसे के साथ करते हैं। अतः इस पुस्तक में पाठकों के हितार्थ योगिनी-दशाफल का भी समावेश किया जा रहा है। कालचक्र-दशा का निरूपण फलित के प्रसिद्ध ग्रंथ जातक-पारिजात और बृहत्पाराशर होरा-शास्त्र में किया गया है और इस दशाफल पर अलग पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है; एतदर्थ पाठकों को उन्हीं ग्रंथों का अवलोकन करना चाहिये।

मंगला दशा का फल – मंगला दशा में वैरियों और विपत्ति का नाश होता है। वाहन (सवारी), वसु (धन), रत्न का लाभ होता है; कामिनी (स्त्री), सुत (पुत्र), गृह (घर) आदि का सुख प्राप्त होता है। मंगला सकल प्रकार से मंगल करती है अर्थात् मंगला दशा में मंगल कार्यों का उदय होता है।

पिंगला दशा का फल पिंगला दशा में दुःख, शोक और कुल-रोग की वृद्धि होती है; चित्त का उच्चाटन और स्वजनों के साथ कलह होता है; दशा के पिछले भाग (उत्तरार्द्ध) में यह विशेष फल देनेवाली कही गयी है। पिंगला दशा विद्वज्जन को आदि भाग में सुख देती है।

धन्या दशा का फल —धन्या दशा में धन-धान्य की वृद्धि होती है। राजसम्मान की प्राप्ति और युद्ध-भूमि (रणक्षेत्र) में जय-लाभ होता है। धैर्य की वृद्धि, स्त्री पुत्रों को सुख प्राप्त होता है। धन्या दशा धातु की वृद्धि करती है।

भ्रामरी दशा का फल—भ्रामरी दशा विदेश में भ्रमाती है और हानि पहुँचाती है। चित्त का उच्चाटन करती है। स्त्री-पुत्र को उत्पीड़ित एवं सुख से रहित करती है। इस दशा में ऋण रोग की वृद्धि होती है। राज-कोप एवं प्राप्त-भोगों का भंग होता है।

भद्रिका दशा का फल – भद्रिका दशा में धन की वृद्धि होती एवं गुणों का प्रकाश होता है। यह सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित करती और राज-सम्मान प्राप्त कराती है। अलंकार (आभूषण) और दिव्यांगना (सुन्दर स्त्री) से भोग और सुख प्रदान करती है। भद्रिकादशा में सदा भद्रकार्य अर्थात् कल्याणकारी कार्य होते हैं।

उल्कादशा का फल – उल्कादशा में श्रम और रोग, व्याधि क्रोधाधिक्य तथा ज्वरादि से कष्ट होता है। दारा धन आदि से वियोग अपने गोत्र से विवाद तथा मित्र एवं से बन्धुजन वैर विद्वेष होता है। उल्कादशा सदैव अनर्थकारी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धादशा का फल—सिद्धादशा में राज सम्मान स्वजनादि से सुख की प्राप्ति एवं धन-धान्य आदि का लाभ होता है। यह दशा गुण, कीर्ति और सिद्धि देती तथा रामा (स्त्री) आदि का लाभ कराती है; पुत्र-सुख को बढ़ाती, पुरुषों को विद्वान बनाती अर्थात् विद्या बुद्धि को बढ़ाती है।

सङ्कटादशा का फल—संकटा दशा में मनुष्यों से विवाद, ज्वर का प्रकोप एवं स्त्री पुत्रादि को कष्ट होता है तथा पशुओं का विनाश होता है। घर में थोड़े ही समय तक रहना होता है; परदेश में ही रहने की अभिलाषा (इच्छा) बनी रहती है। राज-पक्ष से भी अनेकशः सकट प्राप्त होते हैं।

लोक (संसार) में किसी को भी संकटा दशा के बिना सकट प्राप्त नहीं होता। यदि मनुष्य अन्य लोक में भी जाकर रहने लगे तो भी संकटा-दशाकृत संकट उसे अवश्य होता है। इसके प्रभाव से मनुष्य के मन में पुण्य का उदय नहीं हो पाता जिससे उसको नाना प्रकार की विपत्ति और शोक प्राप्त होता है।

यदि संकटा दशा न हो तो उस मनुष्य को हानि नहीं पहुँचे; प्रत्युत संकटा दशा से ही मनुष्यों को माता, पिता, वस्त्र, आभूषण, धनादि पदार्थ, पुत्र तथा स्त्री सम्बन्धी शोक प्राप्त होता है। संकटा दशा अपने नियमानुसार निश्चय संकट उत्पन्न करती है।

मंगला दशा मंगल, यश और धन प्रदान करती है। पिंगला व्याधि (रोग) चिन्ता, दुःख और भ्रम उत्पन्न करती है। धन्यादशा धन, मित्र-बन्धु-सुख एवं रूप को बढाती है। भ्रामरी दशा जन्मभूमि का विध्वंश या विद्रोह करती है और सब दिशाओं में अर्थात् चारों ओर भ्रमाती है।

भद्रिका दशा सुख, सम्पत्ति, आनन्द और सुख देनेवाली होती है। उल्का दशा राज्य, धन और आरोग्यता को हरनेवाली तथा मनुष्यों को अवश्य सुख देनेवाली होती है। संकटा दशा संकट, व्याधि, मरण-तुल्य क्लेश देनेवाली होती है।

मंगला दशा में अन्तर्दशाओं का फल

मंगलादशा में मंगला की ही अन्तर्दशा का फल—धन-धान्य वस्त्रादि का सुख होता है और राज-पक्ष से सम्मान प्राप्त होता है। जातक अश्व, गज, सुन्दर स्त्री, कीर्ति इत्यादि से युक्त होता है।

मंगलादशा में पिंगला की अन्तर्दशा का फल—प्रताप की वृद्धि होती है। सुख, शुभेच्छा से जातक संयुक्त होता तथा राजा से मान प्राप्त करता है। उसे धन एवं उत्तम वस्त्रादि का सुख प्राप्त होता है।

मंगलादशा में धन्या की अन्तर्दशा का फल—व्यापार द्वारा बहुत सुख प्राप्त होता, धन की वृद्धि होती है। मित्र धन-धान्य वस्त्र एवं गृह आदि का लाभ होता है। शत्रु का पराजय होता और स्वजनों में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगलादशा में भ्रामरी अन्तर्दशा का फल—शरीर, नेत्र और कण्ठ में रोग होता, जातक अनेक प्रकार के विकारों से और सहज आपदा से युक्त होता है। सब अङ्गों में पीड़ा होती और स्त्री से वियोग होता है।

मंगलादशा में भद्रिका दशा का फल—शरीर को सुख होता एवं ऋण से छुटकारा मिलता है। धन-धान्य का आगमन होता, कीर्ति की विशेष वृद्धि होती है। देशाधिकार एवं राज-सम्मान प्राप्त होता है।

मंगलादशा में उल्का की अन्तर्दशा का फल—चित्त में भ्रम होता, भ्रमणमार्ग में चोरों से हानि, कष्ट प्राप्त होता है। शोक का उदय, स्वजनों से उग्र विवाद होता है। स्त्री, पुत्र आदि से कलह तथा अपने शरीर में पीड़ा होती है।

मंगलादशा में सिद्धा की अन्तर्दशा का फल—व्यापार में सिद्धि-सफलता मिलती एवं धन-धान्य का लाभ होता है। प्रतिष्ठा तथा युवती से भोग-विलास का आनन्द प्राप्त होता है। सन्तान-सुख एवं शत्रु का क्षय होता है।

मंगलादशा में संकटा की अन्तर्दशा का फल—चोरों से धन का हरण होता है। चरण, नेत्र और शिर में पीड़ा होती है। पुत्र स्त्री से वियोग होता और अन्य भयावह स्थिति प्राप्त होती है।

पिंगला दशा में अन्तर्दशाओं का फल—

पिंगला दशा में पिंगला की अन्तर्दशा का फल—शरीर-सुख, व्याधि और विपत्ति का विनाश होता है।

पिंगला दशा में धान्या की अन्तर्दशा फल—शत्रु का विनाश, ऋण से छुटकारा होता, राजकीय सहायता-प्राप्ति में सफलता मिलती है तथा अधिकारियों की प्रसन्नता प्राप्त होती है; धन धान्य एवं स्त्री की प्राप्ति होती है। सुख एवं प्रतिष्ठा का लाभ होता है।

पिंगलादशा में भ्रामरी की अन्तर्दशा का फल—शोक का उदय, विकलता, अनेक प्रकार की पीड़ा होती और परदेश में भी असफलता अर्थात् लाभ नहीं होता है। व्रण (घाव) से पीड़ा होती है। स्त्री पुत्र आदि प्रिय जनों से वियोग एवं निश्चित हानि होती है।

पिंगलादशा में भद्रिका की अन्तर्दशा का फल—मित्र आदि से सुख हो, मणि-मोती का लाभ हो। हास, विलास तथा स्त्री पुत्रादि से सुख और धन धान्य प्राप्ति हो। राजकीय अधिकार या उच्च पदवी प्राप्त हो।

पिंगलादशा में उल्का की अन्तर्दशा का फल—सर्वदा विग्रह (बिगाड़) और वाक्-युद्ध वादविवाद (कलह करने) में जातक की मति रहती है। वह ईर्ष्या से सम्भाषण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बातचीत) करने में तत्पर रहता है। धन के लिए मन में क्लेश रहे अर्थात् आर्थिक संकटग्रस्त रहे। वस्त्र आदि से वियोग हो अर्थात् वस्त्र का भी कष्ट हो।

पिंगलादशा में सिद्धान्तर्दशा का फल—भाग्य का उदय हो। इष्ट-सिद्धि एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त हो। देवता और ब्राह्मणों के पूजन मे प्रीति हो। मित्रादि से सुख, विजय लाभ एवं संवृद्धि हो।

पिंगलादशा में संकटान्तर्दशा का फल—चोरों द्वारा धन का हरण हो। गुप्त चिन्ता बनी रहे। अनेक तरह से हानि और भय हो। पुत्र स्त्री से मतभेद, ज्वर-प्रकोप एवं वात-विकार से महाकष्ट हो।

पिंगलादशा में मंगलान्तर्दशा का फल—अश्व, घर, स्त्री, धन, पुत्र आदि से सुख प्राप्त हो। राजकीय क्षेत्र में सम्मान प्राप्त हो। धर्म की वृद्धि हो। आरोग्य लाभ एवं शरीर पुष्ट हो और सब प्रकार के सुखों की वृद्धि हो।

धान्या-दशा में अन्तर्दशाओं का फल

धान्यादशा में धान्यान्तर्दशा का फल—बुद्धि का विकास होता है और मान, महिमा स्वजनों में ममता (मोह) की वृद्धि होती है। विद्याध्ययन में तत्परता होती है। धन, स्त्री का सतत सुख प्राप्त होता है। शत्रु पर विजयप्राप्ति से महासुख होता है।

धान्यादशा में भ्रामरी अन्तर्दशा का फल—आलस्य, प्रमाद तथा वातविकारादि रोगों से शरीर आक्रान्त होता है। कुल-देवता और ब्राह्मणों से विद्वेष और विग्रह होता है। मनुष्यों से विवाद उत्पन्न होता एवं मान-भंग होता है।

धान्यादशा में भद्रिकान्तर्दशा का फल अतुल और विमल कीर्ति प्राप्त होती है। धन की वृद्धि होती है। स्त्री पुत्र स्वजन एवं राज-पक्ष से सतत सुख प्राप्त होता, कठिन शत्रु का विनाश होता तथा गुप्त सुखादि की वृद्धि होती है।

धान्यादशा में उल्कान्तर्दशा का फल—व्ययाधिक्य, कलह, विपत्ति और वाद-विवाद से क्लेश होता है। शत्रु और अन्य अनेक प्रकार के विकारों से कष्ट प्राप्त होता तथा बन्धुजनों से कलह होता है। जातक राज्याधिकारियों और निशाचर से उत्पीड़ित होता है। अक्सर वात-विकार से व्यथित रहता है।

धान्यादशा में सिद्धान्तर्दशा का फल - राज-सम्मान एवं धन, वाहन प्राप्त होता है। युद्ध में शत्रु-जय एवं पुत्र स्त्री से सुखी होता है।

धान्यादशा में संकटान्तर्दशा का फल- -आर्थिक कष्ट होता है। स्त्री वियोग एवं शत्रु का प्रकोप होता है। राज्याधिकारी और चोरों से भय होता, वात-रोग एवं व्रण (फोड़ा) आदि व्याधियों से विकलता होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धान्यादशा में मंगलांतर्दशा का फल—राजकीय मामलों में विजय प्राप्त होती है। भूमि सम्बन्धी झगड़ा होता है। विचित्र प्रकार के भोग प्राप्त होते हैं। प्रताप की वृद्धि हो, शत्रुओं का विनाश हो, पुण्य का उदय हो, द्रव्यलाभ से युक्त हो, तीर्थ की यात्रा हो। यदि मंगलांतर्दशा धान्यादशा में हो तो यह फल होवे।

धान्यादशा में पिंगलान्तर्दशा का फल—शत्रुओं का बराबर नाश होता है। अपने गोत्र में प्रतिष्ठा मिलती है। धन का विशेष लाभ. विवाद में जय, स्वार्थ की सिद्धि तथा अपनी पत्नी आदि से सुख प्राप्त होता है।

भ्रामरी दशा में अन्तर्दशाओं का फल

भ्रामरीदशा में भ्रामरी की अन्तर्दशा का फल—बुद्धि-वैकल्य और धनातुरता द्वारा महा पीड़ा करती है, समर में कठिन गढ़ में प्रवेश कराती है। घोड़ा (यन्त्र) वाहनादि को हानि पहुँचती है। तरह-तरह की आपदाएँ आर्ता रहती हैं।

भ्रामरीदशा में भद्रिकान्तर्दशा का फल— राज्याधिकारियों से बहुत सुख-सुविधा प्राप्त हो। महती प्रतिष्ठा मिले, भाग्य का उदय हो। स्वजन, पुत्र, स्त्री से सुख हो। भूमि आदि का अतुल लाभ हो। राजपक्ष से धन की प्राप्ति हो।

भ्रामरीदशा में उल्का की अन्तर्दशा का फल--वात-विकार से कष्ट पीड़ा हो। कफ की वृद्धि हो, सिर मे व्यथा हो, कंठ आदि में कष्ट हो, मति-भ्रम हो। अनेक तरह के भय हों। शत्रु का उदय हो। कीर्ति का विनाश हो।

भ्रामरीदशा में सिद्धान्तर्दशा का फल--उग्र विवाद हो। उत्तम मति का विकास हो। मांगल्य, वस्त्र और आभूषण आदि की प्राप्ति हो। सद्‌बुद्धि की वृद्धि हो। राज-सम्मान प्राप्त हो।

भ्रामरीदशा में संकटा की अन्तर्दशा का फल--शरीर दुःखी रहे। राजपक्ष आदि से भय हो। सुहृज्जनों और बन्धुओं को कष्ट हो। घर में निवास न हो। मतिभ्रम हो, घात पात आदि चोट लगाने एवं गिरने आदि) से क्लेश हो।

भ्रामरीदशा में मंगला की अन्तर्दशा का फल--चांदी, मूँगा, सुवर्ण, सुन्दरी से सुख हो। राज सम्मान प्राप्त हो। उत्तम कीर्ति-लाभ हो।

भ्रामरीदशा में पिंगलान्तर्दशा का फल—बुद्धि-चातुर्य एवं विनय भाव की वृद्धि हो। वेदशास्त्र में बुद्धि लगे। स्वजन और धन-सुख प्राप्त हो। तीर्थयात्रा करने में धन खर्च हो। अपने समस्त शत्रुओं का विनाश हो। सम्मान प्राप्त हो।

भ्रामरीदशा में धान्या की अन्तर्दशा का फल—जातक के प्रतापरूप अग्नि से यावत् शत्रु भस्म हो जांय। स्त्री पुत्र से विशेष सुख प्राप्त हो। हाट-बाट से प्रवाल (मूँगा) आदि की उपलब्धि हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भद्रिका दशा में अन्तर्दशाओं का फल

भद्रिकादशा में भद्रिका-न्तर्दशा का फल—प्रताप की वृद्धि के कारण शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त हो। राज्याधिकारियों की प्रसन्नता से प्रतिष्ठा की वृद्धि हो। प्रसन्नमूर्ति और धन से युक्त रहे।

भद्रिकादशा में उल्का की अन्तर्दशा का फल—उदर और मुख-रोग से कष्ट, पीड़ा हो। घोड़े (सवारी) आदि के विना कष्ट प्राप्त हो। अग्नि, चोर, शत्रु एवं राजपक्ष से पीड़ित हो।

भद्रिकादशा में सिद्धा की अन्तर्दशा का फल—यज्ञादि कर्म और साधुजनों से सुख हो। ब्राह्मण और देवताओं में भक्ति बढ़े। विशेष धन की प्राप्ति और मनोकामना पूर्ण हो। प्रभुत्व तथा ऐश्वर्य से युक्त हो।

भद्रिकादशा में संकटा की अन्तर्दशा का फल—ज्वर, वमन इत्यादि विकार से कष्ट हो। गुप्त दुःख एवं चिन्ता रहे, विपत्तिग्रस्त हो। अग्नि से भय हो। वाद-विवाद से झगड़ा और विनाश हो। अपने कुल में त्रास और क्लेश हो। व्रण (घाव) से कष्ट पीड़ा हो।

भद्रिका में मंगला की अन्तर्दशा का फल—धन धान्य अम्बर (वस्त्रादि) का सुख-लाभ हो। स्वर्गीय जनों से खुशी प्राप्त हो। शरीर पुष्ट हो। खेल-कूद और हास-विलास से आनन्दित हो। शत्रु का नाश हो। कार्य में सिद्धि-लाभ हो। धन सम्पत्ति एवं विशेष प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो।

भद्रिकादशा में पिंगला की अन्तर्दशा का फल—सुहृदजन एवं मित्रों के निमित्त धन का अधिक व्यय हो। बुद्धि निर्मल रहे। विलास और सुख की प्राप्ति हो। निर्मल कीर्ति से युक्त एवं पुत्र-सुख हो।

भद्रिका में धान्या की अन्तर्दशा का फल—स्त्री-सुख हो। उत्तम गाय, भैंस और धन-धान्यादि का आगमन हो। शत्रु से विवाद में जय और राजकीय पक्ष से मान्यता प्राप्त हो।

भद्रिकाददशा में भ्रामरी की अन्तर्दशा का फल—स्त्री-पुत्रादि से वियोग और दुःख हो। वात-विकार से कष्ट पीड़ा एवं राज-भय हो। त्रिदोष रोग से विशेष शारीरिक कष्ट की सम्भावना हो।

उल्का-दशा में अन्तर्दशाओं का फल

उल्कादशा में उल्का की अन्तर्दशा का फल—शरीर में वात पित्त-विकार-जन्य पीड़ा हो, राज-भय, बध-बन्धन और शत्रु से संघर्ष की सम्भावना हो। स्त्री पुत्र आदि से विवाद हो। अनेकशः विपत्ति हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उल्कादशा में सिद्धा की अन्तर्दशा का फल—क्रय-विक्रय अर्थात् खरीद-बिक्री के द्वारा बहुत लाभ हो। सुवर्ण, वस्त्र और धान्य के व्यापार से लाभ हो। राजकीय सम्मान प्राप्त हो।

उल्कादशा में संकटा की अन्तर्दशा का फल—शिर, कान, कंठ, नेत्र की हानि या उनमें विकार से क्लेश हो। राजपक्ष और चोर से कष्ट हानि बन्धनभय हो। देह-पीड़ा या वियोग हो।

उल्कादशा में मंगला की अन्तर्दशा का फल—रोग आदि का नाश हो। शत्रुकृत कष्टों का नाश हो। राजपक्ष से लाभ हो। स्वजनों की सहायता प्राप्त हो।

उल्कादशा में पिंगला की अन्तर्दशा का फल—सुन्दरी स्त्री से हास-विलास का सुख एवं वस्त्रादि का लाभ हो। धन-धान्य का सुख, पुण्य में मति एवं ब्राह्मण और देवता में भक्ति हो।

उल्कादशा में धान्या की अन्तर्दशा का फल—यदि उल्का दशा में धान्या की अन्तर्दशा हो तो सुखोदय, मित्र-समागम, शत्रु-क्षय, देश-जनाधिपत्य, बहुत प्रताप एवं सबसे मित्र-भाव हो।

उल्कादशा में भ्रामरी का अन्तर्दशा का फल—देश-त्याग, आधिव्याधि, दुःख, वियोग से बन्धुजन से मनोद्वेग, बुद्धिमांद्य, धनहानि, तेजोहानि, अग्नि-भय तथा चोर-भय हो।

उल्कादशा में भद्रिका की अन्तर्दशा का फल—सुवर्ण, चाँदी इत्यादि का विशेष लाभ हो। वाणिज्य व्यापार से अतीव धन की प्राप्ति हो। चतुष्पद (चौपायों) से अर्थ-लाभ एवं निजी मकान की प्राप्ति होती है।

सिद्धा दशा में अन्तर्दशाओं का फल

सिद्धादशा में सिद्धा की अन्तर्दशा का फल—धनागम हो। मनःचिंतित कार्य सिद्ध हो। घर में विवाह मुण्डन (चूड़ाकरण) आदि मंगल-कार्य सहज सम्पन्न हों। लक्ष्मी-प्राप्ति अथवा पत्नी स सुख प्राप्त हो। प्रभुता की वृद्धि हो।

सिद्धादशा में संकटा की अन्तर्दशा का फल—आलस्य, तन्द्रा, कमर, गुह्येन्द्रिय में पीड़ा हो। दाद, खाज का विकार हो। उदर-पीड़ा, बात-विकार हो। जल एवं अग्नि से भय और गिरकर चोट लगने की सम्भावना हो।

सिद्धादशा में मंगला की अन्तर्दशा का फल—घर में मंगल-कार्य हो। वस्त्र एवं धन-धान्य की प्राप्ति हो। उत्तम तीर्थ की यात्रा हो। मूंगा मोती आदि अनेकविध धन का लाभ सुख हो। उत्तम पद-प्राप्त हो।

सिद्धादशा में पिङ्गला की अन्तर्दशा का फल—कपोलों (गालों) में चिकनापन, शरीर में शीतलता व्याप्त हो। हेम (सुवर्ण) और वस्त्रादि से शोभा की प्राप्ति, काम-वासना की अधिकता एवं कामिनियों का संग्रह हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धादशा में धान्या की अन्तर्दशा का फल—घर-द्वार घोड़े से सुशोभित हों और रणाङ्गण में रंग जमे। नाना प्रकार के वस्त्र और उत्तम स्थान का लाभ हो। कुटुम्ब की वृद्धि हो। मित्रगण से लाभ हो।

सिद्धादशा में भ्रामरी की अन्तर्दशा का फल—विदेश भ्रमण, हानि, मनोद्वेग हो। स्त्री को शरीर-पीड़ा हो, सुख से रहित हो। ऋण, व्याधि और शत्रुओं की वृद्धि हो।

सिद्धादशा में भद्रिका की अन्तर्दशा का फल—सब प्रकार के शोक एवं ताप का शमन हो। सुख सौभाग्य का उदय हो। निर्मल, यश, कीति का प्रसार हो। पुत्र की उन्नति हो। उत्तम गृह-सुख एवं राज-सम्मान प्राप्त हो।

सिद्धादशा में उल्का की अन्तर्दशा का फल=सुखों का नाश, स्त्री से वियोग हो। राजपक्ष से भय, दुष्ट मित्रों से कलह, मन में उचाट हो तथा अधिक भ्रमण करना पड़े।

संकटा-दशा में अन्तर्दशाओं का फल

संकटादशा में संकटा की अन्तर्दशा का फल—मरण तुल्य दैहिक कष्ट हो। रोग की अधिकता हो। वात, कफ और पित्त (त्रिदोष) का विकार उत्पन्न हो। शत्रु-पक्ष से भय हो।

संकटादशा में मंगला की अन्तर्दशा का फल श्री, स्त्री, पुत्र, धन, मान बड़ाई, धान्यादि की वृद्धि हो। 'सत्पुरुषों एवं सुहृदों से गौरव (बड़ाई) की प्राप्ति हो। उत्तम ज्ञान, पांडित्य, लेखन-चातुर्य का लाभ हो।

संकटादशा में पिंगला की अन्तर्दशा का फल—मूँगा, मोती, वस्त्रादि का लाभ हो, सुदूर की यात्रा पर सब लोगों से मित्रता हो। वाहनादि का लाभ हो। सेवक सहयोगियों से सुख हो।

संकटादशा में धान्या की अन्तर्दशा का फल—देव, गुरु, ब्राह्मण-सेवा में प्रीति हो। दान-धर्म की मति हो। तीर्थ, जप और होमादि मे अनुराग हो। विशेष उद्यम से धन-लाभ हो।

संकटादशा में भ्रामरी अन्तर्दशा का फल—देशाटन में पहाड़ की चोटी तक जाना पड़े, ज्वर आदि पीड़ा, धन-हानि, वात आदि रोग एवं शत्रु से भय और दुःख हो।

संकटादशा में भद्रिका की अन्तर्दशा का फल—अतुल कीर्ति की प्राप्ति, बल-वृद्धि, शत्रु-हानि हो, सब प्रकार के सन्ताप दूर हों, सुख-सौभाग्य का उदय हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकटादशा में उल्का की अन्तर्दशा का फल—महारोग से पीड़ा हो। नासिका, नेत्र, कान, पाद-मूल (कमर) एवं गुह्याङ्ग आदि में रोग-पीड़ा हो। धन की हानि, वाहन (सवारी) का विनाश हो।

संकटादशा में सिद्धा की अन्तर्दशा का फल—उत्तम पदवी प्राप्त हो। राजकीय कार्यकर्त्ता हो। वाक्चातुर्य एवं शास्त्रार्थ-कथा, बहस-मुबाहसा में दक्षता प्राप्त हो। अनेक प्रिय मित्रों का मिलन हो।

सप्तम नियम—स्फुट विधियाँ

इस स्थान पर कुछ अन्यान्य रीतियों से दशा-अन्तर्दशा के फल जानने की विधि लिखी जाती है। इस पुस्तक में प्रकरणानुसार लिखा जा चुका है कि किन-किन ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में जातक के माता, पिता, भ्राता, बहन, स्त्री, पुत्र तथा स्वयं जातक को सुख, दुःख, मृत्यु इत्यादि होती है। (१) ऊपर लिखी हुई बातों के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार से दशा-अन्तर्दशा के फल का विचार करने की विधि लिखी जाती है। यह लिखा जा चुका है कि ग्रह अपनी महादशा तथा अन्तर्दशा में वही फल देता है जो उसके उस भाव से स्थिति-सम्बन्ध, भावदर्शी सम्बन्ध तथा भावाधिपति-सम्बन्ध से होता है; विशेषता यह है कि भाव-स्थित-ग्रह उस भाव के फल को देने में सबसे अधिक क्षमताशाली होता है, भावदर्शी ग्रह उससे कम फलदायक होता है तथा भावाधिपति उससे भी कम फल देता है अर्थात् दृष्टान्त रूप से यों कहा जा सकता है कि धनस्थान-स्थित ग्रह धनदायित्व विषय में सबसे अधिक क्षमताशाली होता है। उससे कुछ कम भावदर्शी ग्रह फल देता है और धन-भावाधिपति धनभाव के विषय में उससे भी कम फलदायक होता है। यह बात नहीं है कि केवल धनभाव के विषय में ही ऐसा होता है। समस्त भावों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य है कि भावस्थ ग्रह चाहे शुभ हो या अनिष्ट हो, सबसे अधिक फलदायक वही होता है। भावदर्शी ग्रह उससे कम और भावाधिपति ग्रह उससे न्यून फल प्रदान करता है। इस कारण, सब ग्रहों की अन्तर्दशा के विचार-काल में ऊपर लिखे हुए नियमानुसार फल के दायित्व का विचार करना होता है। (२) द्वितीयाधिपति राहुयुक्त हो और षष्ठ, अष्टम तथा द्वादशगत हो अथवा राहु जिसके क्षेत्र में हो, उसी ग्रह से युक्त हो तो उन सब की दशा-अन्तर्दशा में दन्तरोग होता है। (३) द्वितीयाधिपति क्रूर-ग्रह हो और चतुर्थस्थ हो तो दशा-अन्तर्दशा-काल में माता को पीड़ा होती है। (४) तृतीय में शुभग्रह का योग या दृष्टि रहने से उसकी दशा के अन्तर में कन्द-मूलादि का सुख होता है। (५) भ्रातृ-भाव अर्थात् तृतीय भाव से गणना करने पर केन्द्रस्थ और त्रिकोणस्थ पापग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में भ्रातृ-पीड़ा प्रदान करता है और उक्त स्थानस्थ शुभग्रह भ्रातृ-विषयक शुभ फल देता है। इसी प्रकार पुत्रभाव अर्थात् पञ्चम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव से गणना करने पर केन्द्रस्थ और त्रिकोणस्थ पापग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में पुत्र-पीड़ा प्रदान करता है तथा यदि शुभग्रह हो तो पुत्र-विषयक शुभ फल देता है। इसी प्रकार अन्यान्य भावों का भी विचार होता है। (६) तृतीयस्थ ग्रह, तृतीयेश, नीचस्थ मंगल, शत्रुगृही मंगल दुःस्थान (६, ८, १२) में होने से उन सब की दशा-अन्तर्दशा में भ्रातृ-विनाश तथा पराजय होती है। लग्नाधिपति और तृतीयाधिपति परस्पर शत्रु होने से, तृतीयस्थ ग्रह के दुर्बल होने से और मंगल के दुःस्थानगत (६, ८, १२ में) होने से इन सब को परस्पर दशा-अन्तर्दशा में भ्रातृ-कलह, भ्रातृ-नाश और धन-नाशादि अशुभ फल होते हैं तथा विपरीत दशा में शुभ फल होता है। (७) द्वितीय, तृतीय, नवम, एकादश और सप्तमाधिपति की दशा-अन्तर्दशा में भ्रातृ-लाभ होता है। (८) बलवान् सूर्य और मंगल चतुर्थ स्थान में रहने से अपनी दशा-अन्तर्दशा में माता को पित्तरोग अथवा व्रणादि पीड़ा उत्पन्न करते हैं। अपने पड़ोस में अग्नि-भय भी होता है। (९) द्वितीय, चतुर्थ तथा द्वादशपति इनमें से जो पापयुक्त हो और शुभग्रह की दृष्टि से वंचित हो तो उन सब की दशा-अन्तर्दशा में गृहादि का नाश और गृह-विच्छेद आदि कारणों से दुःख होता है। (१०) यदि द्वितीयेश, चतुर्थेश तथा द्वादशेश शुभयुक्त होकर केन्द्रवर्ती हो तो उन सब की दशा, अन्तर्दशा में गृहसुख होता है। (११) १–चतुर्थाधिपति, २–चतुर्थाधिपति के साथ वाला ग्रह, ३—चन्द्रमा, ४—चन्द्रमा के साथवाला ग्रह, ५—चतुर्थस्थ ग्रह, ६—चतुर्थदर्शी ग्रह, इन सब में जो ग्रह सबसे अनिष्टदायी होता है, उसकी दशा-अन्तर्दशा में माता की मृत्यु होती है। (१२) लग्न, चतुर्थ तथा नवम में यदि चतुर्थाधिपति लग्नाधिपति के साथ बैठा हो तो उन सब की दशा-अन्तर्दशा में वाहन-लाभ होता है। (१३) चतुर्थाधिपति, नवमाधिपति, एकादशाधिपति या धनाधिपति यदि लग्न से सम्बन्ध रखते हुए बलवान् हों तो उनकी दशा-अन्तर्दशा में राज्य तथा धन का लाभ होता है। (१४) बृहस्पति, चन्द्रमा तथा लग्न से पञ्चमाधिपति एवं नवमाधिपति की अन्तर्दशा में अथवा लग्न से पञ्चमाधिपति तथा नवमाधिपति से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रह की दशा-अन्तर्दशा में जातक दशालाभ करता है। (१५) पञ्चमेश तथा बृहस्पतियुक्त दुःस्थानपति की दशा-अन्तर्दशा में पुत्र-पीड़ा आदि अशुभ फल उत्पन्न होते हैं। (१६) लग्न से एकादश या नवमस्थ शनि, मंगल अथवा राहु अपनी-अपनी दशा-अन्तर्दशा में पितृ-मृत्युकारक होता है। (१७) पंचमस्थ मंगल, षष्ठस्थ बृहस्पति, चतुर्थस्थ शनि और सप्तमस्थ राहु मारक होते हैं। (१८) अष्टमेश के अष्टमगत होने से और इसी प्रकार लग्नेश के लग्न में रहने से उसकी दशा में पीड़ा होती है। पीड़ा के अनन्तर शुभ फल भी होता है। लग्न के दुर्बल होने से लग्नेश की दशा और अष्टमेश की अन्तर्दशा में प्रथम तो कष्ट होता है, किन्तु पश्चात् शुभ फल होता है। लग्नाधिपति विशेष बलवान् होने से अष्टमाधिपति की दशा में जातक की मृत्यु होती है और अष्टमेश के बलवान् होने से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नाधिपति की ही मारक दशा होती है। (१९) दशमेश से दशम स्थान-स्थित पाप-ग्रह की दशा अन्तर्दशा में मर्म-वैकल्य (अर्थात् किसी भी कार्य के करने में जातक को दिक्कत) होता है। (२०) केन्द्राधिपति और त्रिकोणाधिपति की दशा में यदि किसी शुभग्रह की अन्तर्दशा आवे तो वह शुभग्रह, राजयोग-कारक ग्रहादि के साथ विशिष्ट सम्बन्ध न होने पर भी, राज्य-कारक होता है (शुभग्रह शब्द का अर्थ इस स्थान में "मारक-दशा-विचार" विषय में कथित अर्थ है अर्थात् केवल केन्द्राधिपति शुभग्रह भी पापी कहा जाता है और यदि वह केन्द्र के साथ ही त्रिकोणाधिपति भी हो तो शुभ कहा जाता है इत्यादि)। (२१) यदि कोई पापग्रह अर्थात् तृतीय, षष्ठ अष्टम और एकादशाधिपति राज्यकारक ग्रहगण के साथ सम्बन्ध युक्त हो तो वह ग्रह भी राज्य-योग-युक्त ग्रह की दशा और अपनी अन्तर्दशा में राज्य-प्रदायक होता है। उदाहरण-कुण्डली में नवमाधिपति एवं दशमाधिपति र. बु. साथ होने से राज-योग-प्रद हैं; पर उनके साथ षष्ठेश शुक्र भी बैठा है। शुक्र की महादशा में जब शुक्र का अन्तर समाप्त हो रहा था तभी इस जातक ने मुख्तारी आरम्भ की, जिसमें उसने खूब धन प्राप्त किया। (यदि एक ही ग्रह केन्द्र और त्रिकोणाधिपति हो तो वह ग्रह राज्यकारक होता है, जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है और उसके साथ अन्य त्रिकोणाधिपति का सम्बन्ध रहने से राजयोग का फल अधिक विशिष्ट होता है।) (२२) जिसके जन्म-काल में कर्क राशिगत बृहस्पति लग्न में बैठा हो अथवा धनु या मीन राशिगत होकर लग्न में अथवा तीसरे, दसवें, ग्यारहवें में बैठा हो तो ऐसा बृहस्पति अपनी दशा में जातक के कुलानुमानानुसार राज्य-लाभ इत्यादि प्रकार का विशेष उत्कृष्ट फल देता है। (२३) जो ग्रह आरोही हो, उसकी दशा का फल उत्तम होता है और अवरोही ग्रह की दशा का फल नष्ट होता है। उच्च ग्रह अपने स्थान से सप्तम स्थान में नीच होता है और पुनः उस स्थान से बढ़ता-बढ़ता उससे सप्तम स्थान में उच्च का हो जाता है। नीचस्थ ग्रह जब उच्चाभिलाषी होता हुआ बढ़ता है तब वह आरोही अवस्था में कहा जाता है और जब उच्च से नीच की ओर ग्रह जाता है तब वह ग्रह अवरोही अवस्था में होता है। साधारण बुद्धि के अनुसार जो ग्रह उच्चाभिलाषी होता है उसके फल भी अच्छे और जो नीचाभिलाषी होता है उसके फल भी क्रमशः निकृष्ट होते जाते हैं। जैसे सूर्य मेष के दश अंश में परमोच्च होता है और जब वृष के दस अंश में जाता है तब एक षष्ठांश ($\frac{1}{6}$) उसके फल में कमी हो जाती है। उसी प्रकार जब मिथुन के दश अंश में जाता है तब फल में तृतीयांश ($\frac{1}{3}$) कमी हो जाती है। इसी प्रकार घटता-घटता जब तुला के दश अंश में जाता है तब समस्त शुभफल का नाश हो जाता है और वह सूर्य सर्वत्र अनिष्टकारी हो जाता है; पुनः इसी प्रकार जब वृश्चिक के दस अंश में जाता है तब एक ($\frac{1}{6}$) षष्ठांश अनिष्ट फल का नाश होता है। इसी प्रकार सूर्य बढ़ता हुआ मेष के दस अंश पर जाता है तब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसका समस्त अनिष्ट फल नष्ट होकर वह परम शुभदायक हो जाता है अर्थात् साधारण त्रैराशिक से ग्रह के फल का अनुमान करना होता है। इसी प्रकार सब ग्रहों के आरोही और अवरोही फल का अनुमान करना चाहिये।

अष्टम नियम अर्थात्—फल-विकास एवं परिपाक-काल

ग्रहगण अपनी-अपनी अवस्था और स्थिति इत्यादि के अनुसार जातक के जीवन-मात्र में शुभ और अशुभ फल देते हैं; परन्तु ऋषियों ने यह अनुभव कर रक्खा है कि अमुक-अमुक ग्रह अपनी-अपनी महादशा में अमुक समय पर बुरा अथवा भला फल देने में समर्थ होते हैं। इन्हीं भेदों के अनुसार यह निश्चय करना होता है कि किस समय किस फल का विशेष रूप से उदय एवं विकास होगा।

(१) पापग्रह की दशा के प्रथम खण्ड में उन्हीं सब फलों का उदय होता है जो फल उस पापग्रह के उच्च एवं वर्गों के द्वारा होते हैं। मध्य-खण्ड में जिस भाव में वह पापग्रह रहता है एवं जिस भाव का स्वामी होता है, उन सब फलों का उदय होता है। इसी प्रकार उस पापग्रह पर अन्य ग्रह की दृष्टि के अनुसार जो फल होता है, उस फल का उदय अन्तिम खण्ड में होता है। उदाहरण-कुण्डली में सूर्य-पापग्रह का, पहिले दो वर्ष में, सूर्य के नीच रहने से एवं उच्च नवांश में रहने से जो फल होता है उन्हीं फलों का उदय होना कहा जायगा। मध्य-खण्ड अर्थात् दूसरे वर्ष से चौथे वर्ष पर्यन्त सूर्य के एकादशस्थ होने का एवं सूर्य के नवमेश होने का जो फल होता है, उन्हीं फलों का उदय होगा; और अन्तिम खंड में अर्थात् चौथे वर्ष से छठे वर्ष तक सूर्य पर सप्तमस्थ वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि का जो फल होगा, उसी का उदय होना कहा जायगा। (२) शुभग्रह की दशा में जिस भाव में वह ग्रह बैठा रहता है अथवा जिस भाव का स्वामी रहता है उन सब फलों का उदय प्रथम खण्ड में होता है। वर्गों के अनुसार फलों का उदय मध्य-खण्ड में और दृष्टि के अनुसार जो फल होता है उसका उदय अन्तिम खण्ड में होता है। (३) जो ग्रह शीर्षोदय राशि में रहता है उसके फल का उदय प्रथम ही में होता है। पृष्ठोदय राशि स्थित ग्रह का फल अन्त में होता है एवं उभयोदय ग्रह का फल दशा-मात्र में सर्वदा होता रहता है। (४) ज्योतिष के मानसागरी आदि अनेक ग्रन्थों में अमुक-अमुक संवत्सरों के जन्म का फल एवं अयन, ऋतु, मास, नक्षत्र, पक्ष, तिथि, करण, मुहूर्त आदि के फल दिये हुए हैं। उन फलों का विकास कब होता है इसको नीचे लिखते हैं। संवत्सर का फल सावन वर्षपति की दशा में होता है। अयन एवं ऋतु का फल सूर्य की दशा में होता है। मास, नक्षत्र तथा पक्ष के फल चन्द्रमा की दशा में होते हैं। तिथि और करण के फल सूर्य की दशा और चन्द्रमा की अन्तर्दशा में होते हैं। वार-फल वृहस्पति की दशा में होता है। योग-फल सूर्य अथवा चन्द्रमा की दशा में, उनमें-से जो बली हो उसकी दशा में, होता है। लग्न-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल लग्नेश की दशा में होता है और दृष्टि, भाव एवं राशि के फल इसी क्रम से राशीशों की दशा में होते हैं। (५) सूर्यादि-ग्रह अपनी-अपनी दशा के आदि, अन्त और मध्य खण्ड में क्या-क्या फल देते हैं इसका विवरण पीछे दिया जा चुका है। इन सब बातों पर ध्यान देना उचित है। उन सब बातों को पुनः इस स्थान में लिखकर पिष्टपेषण की आवश्यकता नहीं।

परिश्रमपूर्वक दशा-अन्तर्दशा के फलों के निर्णय करने की विधि विशद रूप से बतलाई जा चुकी है। अनेकानेक पुस्तकों में थोड़ा-बहुत फल लिखा पाया जाता है; परन्तु हमारा लक्ष्य यह है कि उत्साही पाठकों को फल कहने का विधि-विधान बतला दिया जाय। अन्त में हमें पुनः यही कहना है कि जैसे कोई विचारक साक्षियों के कथन को (साङ्गोपाङ्ग) विचार की दृष्टि से देखकर प्रत्येक साक्षी के कथन से चुनी हुई बातों को ग्रहण करता हुआ अपने निजी एक मत को प्रतिपादित करके निर्णय लिखता है, उसी प्रकार ज्योतिष-प्रेमियों को प्रत्येक ग्रह के नाना प्रकार के फलदायित्व पर विचारपूर्वक दृष्टि डालकर जो निचोड़ प्रतीत हो, वही फल कहना चाहिये। सबसे उत्तम रीति इस विषय के अभ्यास की यह होगी कि सौ-पचास कुण्डलियों के फलों का विचार करे; परन्तु स्मरण रहे कि वे सब भविष्य-काल की न हों। ये कुण्डलियाँ परिचित जनों की होनी चाहिएँ और उन दशाओं का फल देखे जो दशान्तर्दशा बीत चुकी हों। ऐसा करने से उस जातक की बीती हुई बातों के साथ अपने विचार-फल की तुलना से फलों के प्रतिपादन का बोध भलीभाँति हो सकेगा।

●

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोचर प्रकरण

गोचर किसे कहते हैं ? जन्म-समय में चंद्रमा किसी एक राशि में रहता है । उस राशि को जन्मराशि कहते हैं । उसी जन्म-समय को चन्द्र-राशि को लग्न मानकर जो कुण्डली बनायी जाती है उस कुण्डली को चन्द्र-कुण्डली कहते हैं । उदाहरण-कुण्डली के जातक का जन्म उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है । इसलिये उदाहरण-कुण्डली का चंद्र मीन राशि में है । मीन राशि को लग्न मानकर उदाहरण-कुण्डली की चंद्र-कुण्डली यह बनी—

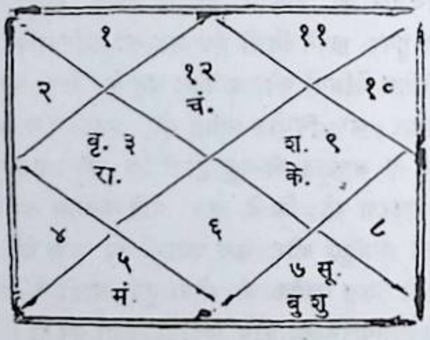

जन्म-समय के बाद से सब ग्रह अपनी-अपनी गति के अनुसार चलते रहते हैं । इसी कारण चन्द्र-लग्न (उदाहरण-कुण्डली में मीन लग्न) से सर्वदा किसी-न-किसी स्थान में भ्रमण करते ही रहेंगे । जैसे उदाहरण-कुण्डली में चन्द्र-लग्न से बृहस्पति चतुर्थ स्थान में है, परन्तु कुछ दिनों के बाद (लगभग एक वर्ष में बृहस्पति अपनी चाल के अनुसार चलता हुआ चन्द्रमा से पञ्चम स्थान में चला जायगा एवं उससे एक वर्ष बाद षष्ठ स्थान में चला जायगा । इसी प्रकार सब ग्रह अपनी-अपनी चाल के अनुसार चन्द्र-लग्न से भिन्न-भिन्न स्थानों में चलते रहते हैं; इसी को ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों का गोचर-भ्रमण कहते हैं । महर्षियों का कथन है कि जातक के चन्द्र-लग्न का एक बड़ा प्रबल प्रभाव उसके समस्त जीवन पर पड़ता है । इसी कारण जब उस लग्न से ग्रहगण अन्यान्य स्थानों (भावों) में जाते हैं तब प्रत्येक ग्रह का भिन्न-भिन्न प्रभाव उस समय में जातक के जीवन पर पड़ता है । शनि ढाई वर्ष तक एक राशि में रहता है । इस कारण लगभग तीस वर्ष में शनि घूमता-घूमता पुनः उस स्थान में आता है, जहाँ जन्म के समय था । बृहस्पति एक राशि में लगभग एक वर्ष रहता है । इस कारण लगभग बारह वर्ष में चलता-चलता उस स्थान में आ जाता है जहाँ वह जन्म के समय में था। राहु एवं केतु लगभग डेढ़ वर्ष एक राशि में रहते हैं; इस कारण लगभग अठारह वर्ष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में जन्म के स्थान पर आ जाते हैं। शेष ग्रह शीघ्रगामी होने के कारण एक वर्ष के भीतर ही अपनी आवृत्ति को समाप्त करते हैं और चन्द्रमा तो लगभग २७ ही दिन में। इसका निष्कर्ष यह है कि जन्म-समय के १२, १८ और ३० वर्ष के बाद मानव-जीवन में एक नया मोड़ आता रहता है— जिन्दगी की किताब का एक नया परिच्छेद शुरू होता रहता है।

योरप और अमेरिका निवासी ज्योतिष-शास्त्र के विद्वानों के फल-कथन की रीति गोचर ही की शैली पर है, जिसको वे 'डाइरेक्टिंग' (Directions and Directing) कहते हैं; परन्तु उसमें कुछ विलक्षणता अवश्य है। उस रीति के उल्लेख का यहाँ न तो अवकाश है और न उपयोग ही। प्रसंग-वश इतना कहा जा सकता है कि गोचर-फलादेश में वे लोग जन्म-चन्द्र के बजाय जन्म-सूर्य से ग्रहों की तत्कालीन स्थिति का विचार कर फल-निरूपण करते हैं जो स्पष्टतया हमारी भारतीय प्रणाली से स्थूल है; क्योंकि सूर्य एक राशि में एक मास रहता है और चन्द्र केवल २॥ दिन। अतः जहाँ हमारे यहाँ २॥ दिन के अन्दर पैदा हुए व्यक्तियों को गोचर-फलादेश में कतिपय विषयों की समानता रहेगी, वहाँ उनकी रीति से पूरे ३० दिनों के अन्दर उत्पन्न व्यक्तियों के लिए एक-सा ही फलादेश रहेगा। अतः वह निश्चय ही बहुत स्थूल होगा। यही कारण है कि अब वे गोचर-प्रणाली के बजाय एक नयी प्रणाली 'प्रॉगेस सिस्टम' को विशेष रूप से अपना रहे हैं। भारतवर्ष के विद्वानों ने कहा है कि प्रत्येक ग्रह जब जन्मराशि में पहुँचता है अथवा जन्मराशि से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश या द्वादश स्थान में पहुँचता है तब जातक के जीवन में अपने-अपने गुणों और दोषों का प्रभाव अपनी एतत्कालीन स्थिति के अनुसार डालता है। इसी को गोचर का फल कहते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोचर-फल

[१] सूर्य

(१) चन्द्र-लग्न में जब गोचर का सूर्य जाता है तब उदर-रोग अथवा शरीर-पीड़ा, मानसिक व्यथा भोजन में अबेर-सबेर, सम्बन्धी, मित्र एवं सज्जनों से झगड़ा और यात्रा अर्थात् भ्रमण होता है। (२) चन्द्र-लग्न से द्वितीय स्थान में जब सूर्य जाता है तब दुर्जनों की सङ्गति, नीच स्वभाव, मानसिक व्यथा, सिर एवं नेत्र में पीड़ा, कृषि एवं वाणिज्य की हानि और भय होता है। (३) चन्द्र लग्न से जब तीसरे स्थान में गोचर का सूर्य जाता है तब रोग से मुक्ति, सुख, आनन्द, मित्रों से सम्मान, पुत्रों से सुख और अभीष्ट लाभ, शत्रुओं का पराजय एवं लक्ष्मी तथा मान की प्राप्ति होती है। (४) चतुर्थ स्थान में जब गोचर का सूर्य जाता है तब मानसिक एवं शारीरिक व्यथा, घर का झगड़ा और सुख की हानि, कुत्सित भोजन, व्यवसाय एवं यात्रा में असुविधाएँ होती हैं। पृथ्वी के भोग में विघ्न होता है। (५) पंचम स्थान में गोचर का सूर्य जब जाता है तब अशक्ति, मन की व्यग्रता, मित्रों से असुविधा धन की हानि, दीनता, वित्त में अस्थिरता तथा शत्रु एवं रोग का भय होता है। (६) षष्ठ स्थान में गोचर का सूर्य जब जाता है तब आनन्द, कार्य की सिद्धि, स्वास्थ्य, अन्न-वस्त्र की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश, धन और मान की प्राप्ति एवं सुख होता है। (७) सप्तम में सूर्य के जाने से कुटुम्बियों एवं मित्रों से मतभेद, स्त्री और सन्तान को रोग, कार्य में असफलता, उदर-पीड़ा एवं यात्रा होती है। (८) अष्टम में सूर्य के जाने से अपने बुरे कामों का फल, शत्रुओं से झगड़ा तथा पीड़ा (खाँसी) और राज-भय होता है। अपनी स्त्री भी रुष्ट रहती है। उसे शत्रुओं से दुर्वचन भी सुनना पड़ता है। (९) नवम में सूर्य के जाने से कान्ति का क्षय, मिथ्या अपवाद, बिना कारण धन और पुण्य की हानि, आय की कमी, रोग तथा मानसिक अशान्ति होती है। (१०) दशम स्थान में सूर्य के रहने से धन, स्वास्थ्य, मित्र, कुटुम्ब, राज-नेता एवं बड़े लोगों से समागम, आनन्द और अभीष्ट-सिद्धि होती है। (११) एकादश स्थान में सूर्य के जाने से लाभ, धन, उत्तम भोजन, नवीन पद, स्वास्थ्य, बड़ों का अनुग्रह और गृह में किसी आनन्दोत्सव का सुख होता है। (१२) द्वादश स्थान में रवि के जाने से जन्मभूमि का त्याग, कुटुम्बियों से वियोग, कार्य एवं पद की हानि, अधिक व्यय और कठिनाइयाँ होती है।

[२] चन्द्रमा

(१) चन्द्र-लग्न में जब गोचर का चन्द्रमा जाता है तब रोगमुक्ति, सुख और आनन्द, धन, सत्कार, उत्तम वस्त्र, भोजन और शय्या, स्त्री-सम्भोग एवं उपहार की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्ति होती है। (२) चन्द्र लग्न से गोचर का चन्द्रमा जब द्वितीय स्थान में जाता है तब मानसिक असन्तोष, रोग, नेत्ररोग एवं चावल के अतिरिक्त अन्य पदार्थों का भोजन होता है। (३) तृतीय स्थान में चन्द्रमा के जाने से धन की प्राप्ति, वस्त्रादि का सुख, आरोग्य, शत्रुओं का पराजय, चित्त में प्रसन्नता, धैर्य एवं इच्छित स्त्रियों का सङ्ग होता है। (४) चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा के जाने से स्वजनों से झगड़ा, चित्त में चञ्चलता, कुक्षि-पीड़ा एवं कार्य में हानि, भोजन और निद्रा में असुविधायें तथा जल से भय होता है। (५) पञ्चम स्थान में चन्द्रमा के जाने से मार्ग में विघ्न, कार्य का नाश, मन में अशान्ति, आसक्ति, धन अथवा किसी प्रिय पदार्थ की हानि और वायु का प्रकोप या गठिया रोग होता है। (६) षष्ठ स्थान में चन्द्रमा के जाने से लाभ, स्वास्थ्य, धनागम, यश, आनन्द, स्त्रियों से वार्तालाप, अपने गृह में निवास और शत्रुओं का पराजय एवं रोग का विनाश होता है। (७) सप्तम स्थान में चन्द्रमा के जाने से धन, सुख, वाहन, ख्याति, स्वास्थ्य, शान्ति, भोजन सुख एवं स्त्री द्वारा सुख होता है। (८) अष्टम स्थान में चन्द्रमा के जाने से रोग, अपच, फिल्लियों में पीड़ा, झगड़ा, चिन्ता, सर्प-भय एवं अखाद्य भोजन की प्राप्ति होती है। (९) नवम स्थान में चन्द्रमा के जाने से राज-भय, वस्त्रादि की हानि, पुत्रों से मतभेद, देश-त्याग, उदर-रोग और व्यवसाय में हानि होती है। (१०) दशम स्थान में चन्द्रमा के जाने से सुख, अभीष्ट-सिद्धि, कार्य में सफलता एवं स्वस्थता होती है। (११) ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा के जाने से लाभ, सुख, कुटुम्बियों से समागम, उत्तम भोजन और द्रव्य एवं अन्न की प्राप्ति होती है। (१२) द्वादश स्थान में चन्द्रमा के जाने से शोक, मानसिक एवं शारीरिक व्यथा, मान, कार्य और द्रव्य की हानि एवं कुटुम्बियों की ओर से घृणा होती है। "वाराहीसंहिता" में 'वृषभचरितन्दोषानन्ते करोति' लिखा है अर्थात् मत्त बैल की भाँति सब दोषों को करता है।

टिप्पणी—दूसरे, पांचवें और नवें स्थान में चन्द्रमा का अशुभ फल कहा गया है; परन्तु वह फल क्षीण चन्द्रमा रहने से होता है। पूर्ण चन्द्र होने से शुभ फल होता है। इसी तरह सप्तम चन्द्र का जो शुभ फल कहा गया है, वह क्षीण चन्द्र से नहीं होता, बली चन्द्रमा से ही होता है।

[३] मंगल

(१) चन्द्र-लग्न में गोचर का मंगल जाता है तब ज्वर, व्रण, कुटुम्बियों एवं स्त्री से मतभेद और दुर्जनों से कष्ट तथा भय होता है। (२) दूसरे स्थान में मंगल के जाने से बल की हानि, मानसिक अशान्ति, कार्यों में निष्फलता, वचन में कठोरता, दुर्जनों की संगति और राजा, चोर, अग्नि तथा पित्तरोग से भय होता है। (३) तृतीय स्थान में जब मंगल जाता है तब धन, खाने के पदार्थ, वस्त्र एवं आरोग्य की प्राप्ति और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शत्रुओं का पराजय होता है। (४) चौथे स्थान में जब मंगल जाता है तब शत्रु-वृद्धि, रुपये एवं वस्तुओं की कमी, स्वजनों से विरोध, अशुभ कार्य में निरति, मानसिक भय और ज्वर, रुधिर-विकार तथा उदर-रोग होता है। (५) पञ्चम स्थान में जब मंगल जाता है तब धन का नाश, रोग, भोजन में अतिकाल, पापकर्म में योग, द्युतिहीनता, शत्रुओं से पीड़ा और सन्तान से दुःख होता है। (६) षष्ठ स्थान में जब मंगल जाता है तब धन, अन्न और स्वर्ण अथवा ताम्र-पात्र की प्राप्ति, ख्याति-लाभ, आनन्द तथा शत्रु भय-रहित शुभ विचार का उदय होता है। (७) सप्तम स्थान में मंगल के जाने से स्वजन-नाश, भोजन-वस्त्रादि में कमी, कुटुम्बियों(स्त्री) से असन्तोष भाई और सन्तान के क्रोध से दुःख तथा नेत्र एवं उदर-रोग होता है। ( ) अष्टम में जब मंगल जाता है तब शस्त्रप्रियता, परदेश-वास, कार्य की हानि, पद-च्युति और रोग एवं ऋण द्वारा मानहानि होती है। (९) नवम स्थान में जब मंगल जाता है तब अनादर, शरीर में पीड़ा, धातुक्षय से निर्बलता, धनाभाव, उष्णता और रोजी-रोजगार के स्थान से हटना पड़ता है। (१०) दशम स्थान में जब मंगल जाता है तब रोग, दुःख अपौष्टिक पदार्थों का भोजन, किसी कार्यवश विदेश-यात्रा और रोजी-रोजगार में विघ्न-बाधा होती है पर 'वाराही-संहिता' के अनुसार धन-प्राप्ति होती है। (११) एकादश स्थान में जब मंगल जाता है तब जय, आरोग्य, धन-वस्त्रादि की प्राप्ति, आनन्द और कार्य में सफलता होती है। (१२) द्वादश में जब मंगल जाता है तब धन का व्यय, परदेशवास, रोग (नेत्र-रोग), धन-हानि और कुटुम्बियों से अनबन होती है।

[४] बुध

(१) चन्द्र-लग्न में जब बुध जाता है तब चुगलखोरी, बन्धन तथा धन की हानि, कुटुम्बियों से विरोध, झगड़ा, कुसमय का भोजन, स्वागत विहीनता, एवं दुर्जनों की संगति होती है। (२) चन्द्र-लग्न के द्वितीय स्थान में जब बुध जाता है तब सर्वथा आनन्द, धन एवं रत्नादि की प्राप्ति और अच्छे लोगों की संगति होती है। (किसी के मत से अनादर) (३) तृतीय स्थान में बुध के जाने से भय, कुटुम्बियों से झगड़ा एवं धन की हानि होती है। 'वाराही-संहिता' के अनुसार मित्र-प्राप्ति होती है; दुश्चरित्रता को भय से छोड़ता है। (४) चतुर्थ स्थान में बुध के जाने से धन की प्राप्ति एवं माता (कुटुम्ब) को सुख होता है। (५) पञ्चम स्थान में बुध के जाने से पीड़ा, आकस्मिक झगड़ा, संतान एवं स्त्री से वियोग अथवा अनबन, मृत्यु का भय एवं गर्मी के कारण शरीर के अवयवों में शिथिलता होती है। (६) छठे स्थान में बुध के जाने से धन, अन्न एवं वस्त्रादि की प्राप्ति और उत्तम पुस्तकादि के पढ़ने का सुख होता है। (७) सप्तम स्थान में बुध के जाने से पीड़ा, सुख की हानि, द्रव्य की कमी, कुटुम्ब एवं मित्रों से झगड़ा, राज-भय, निस्तेज शरीर और शरीर के अवयवों में शिथिलता होती है। (८, अष्टम स्थान में बुध के जाने से धन का लाभ, पुत्र से सुख, बुद्धि का विकास,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्त में अशान्ति, भोजन में अरुचि और मिथ्या वचन होता है। (९) नवम में बुध के जाने से खेद, अपवाद, समस्त कार्यों में विघ्नबाधा, दूसरों का उत्पीड़न, कुत्सित भोजन और चित्त से पीड़ा होती है। (१०) दशम में बुध के जाने से किसी नये पद की प्राप्ति, वाक्य में चतुराई, शत्रुओं के पराजय से सुख, भोजन में असुविधा, मन में अशान्ति, अपवाद और दुर्वचन का भोजन होता है। (११) एकादश में बुध के जाने से स्वस्थता, सुख, यश, धनागम एवं कुटुम्बियों से मित्रता होती है। (१२) द्वादश में बुध के जाने से धन एवं सुख की हानि, चित्त में संताप, भोजन में अरुचि, झगड़ा और कार्यों की हानि होती है।

[५] बृहस्पति

(१) चन्द्र-लग्न में जब बृहस्पति जाता है तब भय, मानहानि, राज-भय, रोजगार में झगड़ा, मानसिक व्यथा और पदार्थों की हानि होती है। (२) द्वितीय स्थान में जब बृहस्पति जाता है तब धन और सुख की प्राप्ति, ख्याति, उन्नति, शत्रुहीनता तथा दानादि में रुचि होती है। (३) तृतीय स्थान में जब बृहस्पति जाता है तब पीड़ा, विघ्न, कुटुम्बियों से झगड़ा, रोजगार में झंझट, स्थान-च्युति एवं शारीरिक पीड़ा होती है। (४) चतुर्थ स्थान में जब बृहस्पति जाता है तब मन में अशान्ति, धन एवं कान्ति की हानि, शत्रु-वृद्धि, कुटुम्बियों से असुविधा और देश-त्याग होता है। (५) पञ्चम स्थान में जब बृहस्पति जाता है तब सुख, उन्नति, धनागम, कार्य में सफलता, कुटुम्बियों से आनन्द और पद की प्राप्ति होती है। (६) षष्ठ स्थान में जब बृहस्पति जाता है तब शोक, स्त्री, सन्तान और कुटुम्बियों से झगड़ा तथा चोर, अग्नि एवं राज-भय होता है। उसके गृह में सब प्रकार की उदासीनता आ जाती है। (७) सप्तम स्थान में जब बृहस्पति जाता है तब राज-सम्मान, उत्तम भोजन, कार्य में सफलता, आरोग्य, बुद्धि में चमत्कार, अनेक सुखों का भोग और विवाहादि उत्सवों से सुख होता है। (८) अष्टम स्थान में बृहस्पति के जाने से बन्धन, शोक, रोग, चोर, अग्नि एवं राजा से भय, क्रोध की वृद्धि, वाक्य में कठोरता, कान्ति की हानि, पदच्युति और शारीरिक कष्ट होता है। (९) नवम में बृहस्पति के जाने से धन-प्राप्ति, सुख, उत्तम भोजन, स्त्री-सहवास, पुत्र से सुख, मकान की प्राप्ति और विचारशीलता होती है। (१०) दशम स्थान में बृहस्पति के जाने से दीनता, अन्न तथा धन की हानि, स्वजनों से अपवाद, निरुद्यमता, और भ्रमण होता है (११) एकादश स्थान में बृहस्पति के जाने से धन एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि, कान्ति, बल, आनन्द, शत्रुओं की हानि एवं समस्त कार्यों में सफलता होती है। (१२) द्वादश स्थान मे बृहस्पति के जाने से दारिद्रता का दुःख, विश्वासपात्रों से कलक, निवास-स्थान का त्याग, शुभ कार्य में धन का व्यय और मुकदमेबाजी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[६] शुक्र

(१) चन्द्र-लग्न में जब गोचर का शुक्र जाता है तब सुख, धन की प्राप्ति और शत्रु का नाश होता है; परन्तु जातक दुराचारी होता है। (२) द्वितीय स्थान में शुक्र जब जाता है तब धन की बारम्बार प्राप्ति, स्त्री से सुख, मान की वृद्धि, शरीर में आरोग्य, वस्त्रादि की प्राप्ति एवं सब प्रकार के सुख होते हैं। (३) तृतीय स्थान में जब शुक्र जाता है तब व्यवसाय में हानि, धन की कमी, रोजी-रोजगार में गड़बड़ी और शत्रुओं की वृद्धि होती है। मतान्तर से प्रसन्नता और पद की प्राप्ति भी होती है। (४) चतुर्थ स्थान में जब शुक्र जाता है तब धन की प्राप्ति, मनमानी बातों का करना मित्र, कुटुम्ब एवं स्त्री का सुख और स्त्री-सहवास होता है। (५) पंचम स्थान में शुक्र के जाने से पुत्र और कुटुम्ब से प्रीति, नौकरों की वृद्धि, लाभ, अन्न एवं धन की प्राप्ति और अच्छे भोजन का सौभाग्य होता है। (६) छठे स्थान में शुक्र के जाने से शत्रु की वृद्धि एवं उनसे हानि, हिस्सेदारों से झगड़ा और पुत्र तथा सन्तान से मनोव्यथा होती है। (७) सातवें स्थान में जब शुक्र जाता है तब शोक, बड़े परिश्रम से जीविका-निर्वाह, जननेन्द्रिय रोग का भय और किसी से अपमानित होने का भय होता है। (८ अष्टम स्थान में जब शुक्र जाता है तब धन की प्राप्ति, सुख की वृद्धि और दुःख की समाप्ति होती है। (९) नवम स्थान में जब शुक्र जाता है तब उत्तम वस्त्रादि का लाभ, इच्छित पदार्थों की प्राप्ति और स्वस्थता होती है। (१०) दशम स्थान में जब शुक्र जाता है तब पीड़ा, मानसिक व्यथा, धन की हानि, शत्रुओं से भय, निर्बलता एवं स्त्रियों से दुःख होता है। (११) एकादश स्थान में जब शुक्र जाता है तब धन की वृद्धि, प्रताप, कार्य में सफलता, धन का आगमन एवं उत्तम भोजनादि की प्राप्ति होती है। (१२) द्वादश स्थान में जब शुक्र जाता है तब शस्त्र एवं चोर से भय एवं सब कार्यों में विघ्न-बाधा होती है; परन्तु मतान्तर से धन तथा वस्त्रादि का लाभ होता है।

[७] शनि

(१) चन्द्र-लग्न में जब गोचर का शनि जाता है, तब बुद्धि-भ्रंश, निस्तेज शरीर, मानसिक और शारीरिक पीड़ा, कुटुम्बियों से झगड़ा एवं रोग होता है। (२) चन्द्र-लग्न से द्वितीय स्थान में जब गोचर का शनि जाता है तब क्लेश, बिना बात का झगड़ा, स्वजनों से वैर, धन की हानि और कार्य में असफलता होती है (३) तृतीय स्थान में शनि के जाने से आरोग्य, सुख, कार्यों में सफलता और पद, धन एवं नौकरी की प्राप्ति, परन्तु दुराचरणशीलता होती है (४) चतुर्थ स्थान में जब शनि जाता है तब शत्रु की वृद्धि, रोग, स्थान-परिवर्तन, स्त्री और कुटुम्बियों से वियोग और धन की कमी, परन्तु अन्न की प्राप्ति होती है। (५) पञ्चम स्थान में शनि के जाने से अशान्ति, कार्य में असफलता, कुटुम्बियों से मुकदमेबाजी, पुत्र से बियोग, धन एवं सुख की हानि और दुष्ट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रियों का संग, परन्तु मतान्तर से पुत्र-सुख होता है। (६) षष्ठ स्थान में शनि के जाने से धन, अन्न और सुख की वृद्धि, कुटुम्बियों एवं स्त्रीगण से सुख, शत्रु पर विजय और मकान बनाने का सौभाग्य होता है। (७) सप्तम स्थान में शनि के जाने से दोष, मानसिक व्यथा, धन-हानि और परदेश वास होता है। (८) अष्टम स्थान में शनि के जाने से पीड़ा, द्रव्य-हानि, कार्य में निष्फलता, अव्यवस्थित जीवन एवं रोग होता है। (९) नवम स्थान में शनि के जाने से दुःख, रोग, शत्रु की वृद्धि, कभी-कभी धन की प्राप्ति और इसी प्रकार स्त्री तथा सन्तान से कभी सुख एवं कभी असुविधा होती है। (१०) दशम स्थान में शनि के जाने से दुःख, मानसिक व्यथा, पापकर्म, नौकरी एवं रोजगार में विघ्न-बाधायें, निर्धनता और हृदय-रोग से पीड़ा होती है। (११) एकादश स्थान में जब शनि जाता है तब धन की प्राप्ति, रोग से मुक्ति, किसी उच्च अधिकार और स्त्री-सन्तानादि से सुख होता है। (१२) द्वादश स्थान में जब शनि जाता है तब क्षति, झगड़ा, दरिद्रता, दूर की यात्रा, व्यय में अधिकता एवं मानसिक व्यथा होती है।

[८] राहु तथा केतु

'यथा राहुः तथा केतुः' की उक्ति प्रसिद्ध है। राहु और केतु उसी ग्रह का गोचर-फल देते हैं जिसके घर में राहु एवं केतु जन्म के समय बैठे रहते हैं। जैसे, उदाहरण-कुंडली में राहु मिथुन का है; इस कारण वह बुध का फल देगा और केतु धनु राशि-गत है; इस कारण वह बृहस्पति का फल देगा। (१) चन्द्र-लग्न में राहु अथवा केतु के रहने से हानि होती है। (२) निर्धनता, (३) सुख, धन-लाभ, (४) वैर, दुःख (५) शोक, (६) धन-लाभ (७) कलह, (८) पीड़ा, (९) पाप कर्म की वृद्धि, हानि (१०) वैर, लाभ (११) सुख और (१२) में धन-हानि होती है।

गोचर के शनि का विशेष नियम

(१) गोचर-फल विचार में सबसे विशेषता शनि की है। साधारण फल के अति-रिक्त गोचर-शनि के दो विभाग हैं—एक "साढ़ेसाती" और दूसरा "कण्टक शनि"। (२) साढ़ेसाती शनि का अभिप्राय यह है कि चन्द्र-लग्न से बारहवें स्थान का शनि, चन्द्र-लग्न का शनि और चन्द्र-लग्न से दूसरे स्थान(गृह) का शनि अर्थात् इन तीनों स्थानों में ($2\frac{1}{2} \times 3 =$) $7\frac{1}{2}$ वर्ष तक गोचर से शनि रहता है। वक्री इत्यादि होने से कभी-कभी कुछ विशेष भी रह जाता है। इन्हीं $7\frac{1}{2}$ वर्षों के शनि-फल को "साढ़े-साती" कहते हैं। सामान्यतः यह बहुत ही अनिष्टकारी कहा जाता है।

ग्रन्थकारों ने साढ़ेसाती-फल को विशेष रूप से यों बतलाया है : जब चन्द्र-लग्न यानी जन्म-राशि से बारहवें घर में शनि रहता है अर्थात् पहले ढाई वर्ष में, तब जातक के व्यय की मात्रा अधिक बढ़ जाती है और अकस्मात् धन की हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक कुछ समय तक शान्तिपूर्वक एक स्थान में वास करने में असमर्थ होता है। उसका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता। जब शनि जन्मराशि में रहता है (अर्थात् दूसरे ढाई वर्ष में) तब शरीर की कान्ति एवं स्वास्थ्य की हानि, चित्त में अशान्ति, धन का व्यय अथवा धन की क्षति, कार्यों में विघ्न-बाधाएँ तथा असफलताओं के कारण धन नाश होता है। अन्तिम ढाई वर्ष में जब चन्द्र-लग्न से द्वितीय स्थान में गोचर से शनि भ्रमण करता रहता है तब बन्धुवर्ग से अनायास अर्थात् बेकार झगड़ा और जातक परिवार के लोगों को रोग अथवा उनमें-से किसी की मृत्यु भी होती है। साढ़ेसाती दीर्घजीवी मनुष्य के जीवन में दो या अधिक से-अधिक तीन बार आती है (तीस वर्ष में एक आवृत्ति, साठ वर्ष में दूसरी और नब्वे वर्ष में तीसरी आवृत्ति)। उसकी शक्ति— पहली आवृत्ति अर्थात् पहली साढ़ेसाती का आक्रमण बड़े वेग से जातक पर होता है और जातक को नाना प्रकार से व्यथित कर देता है; परन्तु द्वितीय साढ़े-साती का वेग बहुत ही धीमा हो जाता है। कभी-कभी दुःख तो अवश्य होता है; परन्तु यथार्थ में उतना हानिकारक नहीं होता। अन्तिम साढ़ेसाती तो प्रायः मृत्यु को ही बुला लाती है और जातक भाग्यवश ही इस साढ़ेसाती का अतिक्रमण कर पाता है। अनुमान करने योग्य बात यह है कि तीस वर्ष से पूर्व जब जातक का शरीर कोमल होता है तब शनि अपनी क्रूरता से जातक की शारीरिक निर्बलता पर विजय प्राप्त करना चाहता है। मध्य साढ़ेसाती का समय प्रायः उस समय होता है जब जातक प्रौढ़ावस्था में रहता है। इस कारण शनि उसपर उतना असर नहीं कर पाता। अन्तिम साढ़ेसाती प्रायः वृद्धावस्था में आती है। उस अवस्था में शरीर जर्जर तो रहता ही है; शनि उसे चबा जाने का यत्न करता है। (३) कण्टक शनि उसे कहते हैं जब गोचर का शनि चन्द्र-लग्न से चौथे सातवें और दसवें स्थान में भ्रमण करता है। साधारण रूप से कण्टक शनि मानसिक दुःखों की वृद्धि करता है। जीवन को अव्य-वस्थित बनता है और इस कारण नाना प्रकार के दुःखों की वृद्धि करता है। जब गोचर का शनि चन्द्र-लग्न से चतुर्थस्थ होता है तब जातक के निवास-स्थान में अवश्य परिवर्तन होता है और उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है। चन्द्र-लग्न से जब गोचर का शनि सप्तम स्थान पर आता है तब जातक को परदेश-वास होता है। यदि वह सप्तम स्थान पर चर राशि का हो तो यह फल अवश्य होता है। चन्द्र-लग्न से जब गोचर का शनि दशम स्थान में आता है तब जातक के व्यवसाय एवं नौकरी आदि में गड़बड़ी पड़ती है और कार्य में असफलताओं का सामना करना होता है। (४) गोचर के अनुसार वार्षिक फल अर्थात् लगभग १ वर्ष का फल शनि, बृहस्पति और राहु के फल पर ही अवलम्बित होता है। प्रत्यक्ष कारण यही प्रतीत होता है कि ये तीनों ग्रह मन्दगामी हैं। गोचर के अनुसार मास का फल सूर्य, मंगल, बुध एवं शुक्र से कहा जाता है। निम्नलिखित कतिपय बातों पर ध्यान आकृष्ट किया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(क) यदि शनि का गोचर-फल बुरा होता है तो अन्य शुभदायी फलों में भी न्यूनाधिक हानि हो जाती है अर्थात् जब गोचर का शनि अशुभ फल देता है तब उस वर्ष में प्रायः सब अशुभ ही फल होते हैं। (ख) जिस वर्ष शनि का फल अशुभ और वृहस्पति का फल शुभ रहता है उस वर्ष में विशेष अशुभ ही होता है। (ग) जिस वर्ष में शनि उत्तम फल और वृहस्पति अशुभ फल देता हो तो उस वर्ष या समय में प्रायः शुभ ही फल का उदय होता है। (घ) जिस वर्ष अथवा समय में शनि शुभ फल देता है, परन्तु वृहस्पति और राहु दोनों अशुभ फल देते हों, उस वर्ष अथवा समय में भी शुभ ही फल विशेष होता है। (च) जिस वर्ष अथवा समय में शनि शुभ फल देता हो और वृहस्पति और राहु भी शुभ फल देता हो उस समय सब प्रकार से शुभ-ही-शुभ होता है। (छ) यदि वर्ष का फल उत्तम हो और मास का फल निकृष्ट हो, उस मास का उत्तम ही फल होता है। (ज) यदि वर्ष का फल निकृष्ट हो और मास का फल उत्तम हो तो उस मास में उत्तम फल नहीं के बराबर होता है। (झ) यदि वर्ष का फल उत्तम हो और किसी मास का भी फल उत्तम हो तो उस मास में समस्त शुभ फलों का उदय होता है। इन्हीं कई नियमों पर ध्यान देकर गोचर के अनुसार वर्ष एव मास का फल सफलतापूर्वक कहा जा सकता है।

गोचर-फलादेश के कतिपय नियम-सूत्र

★ जन्म-नक्षत्र परत्वेन गोचर फल ★

आम तौर पर जन्म-राशि या जन्म-लग्न से प्रथमादि द्वादश स्थानों में गोचर ग्रहों के परिभ्रमण का फल-विचार किया जाता है; किन्तु उसी भाँति सूक्ष्म गोचर फलादेश के लिए जन्म-नक्षत्र से शुरू कर क्रमशः अग्रिम २६ नक्षत्रों में गोचर ग्रहों के परिभ्रमण का फल-विचार भी करना चाहिये! जन्म-नक्षत्र पर कोई ग्रह आने से वह पहला, उससे अगले नक्षत्र पर जाने से दूसरा, दूसरे से अगले नक्षत्र पर जाने से तीसरा इत्यादि गिना जाता है; इसी क्रम से २७ नक्षत्रों पर नौ ग्रहों के परिभ्रमण का फल पाठकों के हितार्थ नीचे दिया जा रहा है :—

★ सूर्य का नक्षत्र फल ★

१ पहला—नाश
२ दूसरे से ५ तक—धन-लाभ
६ से ९ तक—सफलता
१० से १३ तक—धन-लाभ
१४ से १९ तक—धन-लाभ
२० से २३ तक देह-पीड़ा
२४ से २५ तक—लाभ
२६ से २७ तक—मृत्यु-भय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* चन्द्र का नक्षत्र-फल *

१ व २—बहुत भय
३ से ६ तक—कुशल क्षेम
७ व ८—शत्रु (विरोधियों) पर विजय
९ व १०—अर्थ-प्राप्ति
११ से १५ तक—आनन्द
१६ से १८ तक—झगड़ा-झंझट
१९ से २४ तक—परदेश-गमन
२५ से २७ तक—धन-लाभ

* मंगल का नक्षत्र-फल *

१ व २—दुर्घटना
३ से ८ तक—कलह
९ से ११ तक—सिद्धि
१२ से १५ तक—धन-नाश
१६ व १७—लाभ
१८ से २१ तक—भय
२२ से २५ तक—सुख
२६ व २७—प्रवास

* बुध, शुक्र और गुरु का नक्षत्र-फल *

१ से ३ तक—चिंता
४ से ६ तक—लाभ
७ से १२ तक—अनर्थ
१३ से १७ तक—धन लाभ
१८ व १९—नाश
२० से २७ तक—मान-कीर्ति-लाभ

* शनि, राहु, केतु का नक्षत्र-फल *

१ पहला—दुःख
२ से ५ तक—सुख
६ से ८ तक—प्रवास
९ से ११ तक—नाश
१२ से १५ तक—लाभ
१६ से २० तक—विलास
२१ से २५ तक—शुभ
२६ व २७—भय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

★ जन्म-नक्षत्र का प्रत्येक मास में वार-भेद से फल ★

जन्म-नक्षत्र अर्थात् जिस नक्षत्र के जिस चरण में जातक का जन्म हुआ हो, वह नक्षत्र-चरण जिस मास में रविवार के दिन पड़ता है, उस मास में जातक घूमने-फिरने में व्यस्त होता है। यदि जन्म-नक्षत्र सोमवार के दिन पड़ता है तो उस मास में अच्छा फल होता है एवं उत्तम भोजन की प्राप्ति होती है। जन्म-नक्षत्र यदि मंगल के दिन पड़ता हो तो उस मास में जातक आलसी होता है एवं उसे अग्नि-विद्युत-भय होता है। यदि बुध के दिन पड़ता हो तो उस मास में जातक की विद्या-रुचि बढ़ती है; परन्तु किसी प्रकार का भय भी होता है। गुरुवार को वस्त्रादि की प्राप्ति और सुख होता है। शुक्रवार में सुख एवं शनिवार में दुःख और सन्ताप होता है। प्रायः नक्षत्रों का भोग दो दिन तक हुआ करता है अर्थात् कुछ भाग एक दिन और कुछ दूसरे दिन भुक्त होता है। इसलिए प्रश्न यह उठता है कि उन दोनों दिनों में जन्म-नक्षत्र किस दिन माना जाय। अपने अनुमान एवं अनुभव से यह कहा जा सकता है कि जन्म-नक्षत्र के जिस विभाग (चरण) में जन्म हो, वह जिस दिन पड़ेगा, उसी दिन (वार) का उपर्युक्त फल होगा।

सूर्य और मंगल जब किसी राशि में प्रवेश करते हैं तब प्रवेश करने ही के समय में शुभाशुभ फल देते हैं। शुक्र और बृहस्पति राशि के मध्य में जाने के बाद फल देते हैं। शनि और चन्द्रमा जब राशि के अन्त में जाते हैं तब अपना फल देते हैं। बुध सर्वदा फल देता है। सूर्य एक राशि को छोड़कर जब दूसरी राशि में जाता है उस समय के पांच दिन पूर्व ही से आगामी राशि के फल की सूचना देता है। इसी प्रकार मंगल आठ दिन, बुध सात दिन, शुक्र सात दिन, चन्द्रमा तीन घटी, राहु तीन मास, शनि छः मास एवं बृहस्पति दो मास पहले ही से आगामी राशि के फल की सूचना देने लगते हैं।

गोचर के अनुसार वर्ष-फल कहने की अन्य विधि यह है कि जन्म-राशि के अंश पर जिस दिन गोचर का सूर्य प्रवेश करता है उस दिन से उस जन्म-राश्यंश के आगे २० अंश भ्रमण करने तक सूर्य की दशा रहती है। इस (२० अंश) से आगे ७० अंश तक सूर्य चलता है तब तक चन्द्रमा की दशा रहती है। वहां से ९८ अंश पर्यन्त मंगल की दशा, उससे आगे १५४ अंश पर्यन्त बुध की दशा, वहां से १९० अंश पर्यन्त शनि की दशा, उससे आगे २४८ अंश पर्यन्त बृहस्पति की दशा, वहां से २९० अंश पर्यन्त राहु की दशा और उससे आगे ३६० अंश पर्यन्त शुक्र की दशा होती है। इस प्रकार जन्म-राशि के अंश से चलकर ३६० अंश भोगते हुए पुनः उसी अंश पर सूर्य के आने तक उपर्युक्त सब ग्रहों की दशाएं क्रमानुसार भुक्त होती है। सूर्य एक निश्चित (अपनी मध्यमा) गति से १ दिन में लगभग १ अंश चलता है। अतः जिस दिन जातक को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म-राशि के अंश पर सूर्य आयेगा, उस दिन से २० दिन तक सूर्य की ही दशा रहेगी; पश्चात् ५० दिन तक चन्द्रमा की दशा; फिर २८ दिन तक मंगल की दशा, पश्चात् ५६ दिन तक बुध की दशा; फिर ३६ दिन तक शनि की दशा, तत्पश्चात् ५८ दिन तक बृहस्पति की दशा; फिर ४२ दिन तक राहु की दशा और उसके बाद ७० दिन तक शुक्र की दशा रहती है। इस प्रकार मध्यम सौर वर्ष के कुल ३६० दिनों में ग्रहों की सभी दशाएँ क्रमशः पूर्ण होती हैं। उपर्युक्त प्रत्येक ग्रह की दिन-दशाओं का फल निम्नोक्त है:—

फल

सूर्य की दशा में धन का नाश; चन्द्रमा की दशा में धन एवं धर्म की प्राप्ति; मंगल की दशा में रोग, मृत्यु एवं शस्त्रादि का भय; बुध की दशा में धन की प्राप्ति; शनि की दशा में आलस्य; बृहस्पति की दशा में सम्पत्ति-लाभ, राहु की दशा में बन्धन आदि का भय एवं शुक्र की दशा में अभीष्ट फल की सिद्धि होती है।

उपसंहार

जीवन-सारणी–सं० १. दशानयन की कुञ्जी

जन्म-नक्ष	कृ. उ फा. उ.षा.	रो.ह. श्रवण	मृ चि. धनि	आर्द्रा. स्वा. शत.	पुन. वि. पू.भा.	पुष्य. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	मघा. मूल. अश्वि.	पू.फा. पू.षा. भ.
ग्रह	☉ रवि	☾ चंद्र	♂ मं.	☊ रा.	♃ गुरु	♄ शनि	☿ बुध	☋ केतु	♀ शुक्र
महादशा–वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
अंतरदशा-मास	०·६	१	०·७	१·८	१·६	१·९	१·७	०·७	२
प्रत्यंतर दशा–दिन	१·५	२·५	१·७५	४·५	४	४·७५	४·२५	१·७५	५
सूक्ष्मदशा–घं.	१·२	२	१·४	३·६	३·२	३·८	३·४	१·४	४
प्राण-दशा-मि.	३	५	३·५	९	८	९·५	८·५	३·५	१०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस पुस्तक के विगत संस्करणों में केवल विंशोत्तरी की महादशा और अंतर-दशाओं का ही फलादेश दिया गया था, किन्तु इस संस्करण में प्रत्यन्तर-दशा, सूक्ष्म-दशा और प्राण-दशाओं के फलादेश का भी समावेश कर दिया गया है। इसके अलावा योगिनी-दशा एवं अन्तर-दशाओं का फल भी दिया गया है जिसका विंशोत्तरी-दशा के बाद सर्वाधिक प्रचार है। विंशोत्तरी की सूक्ष्म और प्राण-दशाओं में पहले बृहत्पाराशरोक्त फल दिया गया है, उसके नीचे भार्गवनाडिका का फल दिया गया है। अधिकांशतः दोनों के फलादेश में काफी साम्य है; किन्तु कई स्थलों में दोनों के फलादेश न केवल भिन्न, बल्कि परस्पर विरुद्ध हैं। फलित ज्योतिष में पराशर और बराह मिहिर की जैसी प्रतिष्ठा उत्तर भारत में है, वैसी ही दक्षिण भारत में नाडी-ग्रन्थों एवं मंत्रेश्वर की है। अतएव पाठकों के तुलनात्मक अध्ययन और परीक्षण के लिए दोनों की सूक्ष्म एवं प्राण-दशाओं के फल साथ-साथ इस पुस्तक में दिये गये हैं। गणित-ज्योतिष की पुस्तक में फलित का तथा फलित ज्योतिष की पुस्तक में गणित का सन्निवेश मुझे रुचिकर नहीं है, किन्तु ज्योतिष-रहस्य द्वितीय खण्ड तथा दशाफल-विचार के इस संस्करण में भी फलित के साथ तत्सम्बन्धी कुछ गणित के विषय देना अनिवार्य हो गया। विंशोत्तरी दशा, अन्तर-दशा एवं प्रत्यन्तर-दशा साधन की सारणियाँ मेरी 'ज्योतिष-रहस्य' पुस्तक में दी गयी हैं, किन्तु सूक्ष्म और प्राणदशानयन की कोई विधि उसमें नहीं बतलाई गयी है। अतएव इस पुस्तक में मैं पाठकों को एक ऐसी अद्भुत सारणी भेंट कर रहा हूँ जैसी आज तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई है। इसके द्वारा कुछ अंकों की मामूली गुणन-क्रिया से किसी ग्रह की महादशा में, किसी भी ग्रह की अन्तरदशा, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म और प्राणदशाओं का भोग-काल बिल्कुल शुद्धता और सरलतापूर्वक जाना जा सकता है। सारणी के प्रथम खाने में जन्म-नक्षत्र एवं उसके नीचे नक्षत्र-परत्वेन दशाधीश ग्रह और उसके नीचे क्रमशः महादशा-वर्ष, अन्तरदशा-मास, प्रत्यन्तरदशा-दिन, सूक्ष्मदशा घंटा एवं प्राणदशा-मिनिट दिये गये हैं। इन महादशा, अन्तरदशा आदि खानों के सामने और रवि, चन्द्रादि ग्रहों के नीचेवाले प्रत्येक खाने में गुणक-संख्या दशमलव चिह्न सहित दी गयी है। अब जिस ग्रह की दशा में जिस ग्रह की अन्तरदशा का भोगकाल जानना हो, उस महादशावाले ग्रह की महादशा-वर्ष-संख्या को अभीष्ट अन्तरदशावाले ग्रह के अन्तरदशा-मासवाले 'गुणक' से गुणा कर दीजिए तो आप को उस ग्रह की महादशा में अभीष्ट ग्रह की अन्तरदशा के भोगकाल की मास-संख्या ज्ञात हो जायेगी। आगे इस अन्तरदशा में आप जिस ग्रह की प्रत्यन्तरदशा का भोगकाल जानना चाहें, उसकी प्रत्यन्तरदशा के गुणक से उक्त अन्तर-दशा की मास संख्या को गुणा कर दें तो आपको उक्त अन्तर में अभीष्ट ग्रह की प्रत्यन्तरदशा के भोगकाल की दिन-संख्या मालूम हो जायेगी। इसी प्रकार से अभीष्ट ग्रह की सूक्ष्मदशा-घं० के गुणक से ग्रह की प्रत्यन्तरदशाकाल को गुणा करने से उक्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्यन्तर में अभीष्ट ग्रह की सूक्ष्म दशाकाल के घण्टा प्राप्त होंगे एवं अभीष्ट ग्रह की प्राणदशा-मि० के गुणक से ग्रह की सूक्ष्म-दशा काल को गुणा करने से उक्त सूक्ष्मदशा में अभीष्ट ग्रह की प्राणदशा के भोगकाल की मिनिट-संख्या ज्ञात होगी। मास-संख्या १२ से अधिक होने पर उसमें १२ का भाग देकर वर्षादि बना लीजिए एवं दिन-संख्या ३० से अधिक होने पर उसमें ३० का भाग देकर मासादि तथा घण्टा-संख्या २४ से अधिक होने पर उसमें २४ का भाग देकर दिनादि और मिनिट-संख्या ६० से अधिक होने पर उसमें ६० का भाग देकर घंटादि बना सकते हैं। एक उदाहरण से उपर्युक्त सारी गणित-प्रक्रिया सर्वथा स्पष्ट हो जायेगी।

उदाहरण—मान लीजिए, शुक्र की महादशा में शनि की अन्तरदशा का भोगकाल ज्ञात करना है। सारणी में शुक्र की महादशा-वर्ष २० एवं शनि के खाने में नीचे एवं अन्तरदशा-मास के सामनेवाले खाने में गुणक-सं० १·७ है। इससे २० को गुणा किया (२०×१·७)=३८·० मास प्राप्त हुआ अर्थात् शुक्र महादशा में शनि की अन्तरदशा का भोगकाल ३८ मास होता है। इसमें १२ का भाग देने लब्धि ३ वर्ष शेष २ मास ज्ञात हुए। इसी प्रकार शनि की अन्तरदशा में बृहस्पति की प्रत्यन्तरदशा का भोगकाल जानने के लिए पूर्वोपलब्ध शनि की अन्तरदशा की मास-संख्या ३८·० को बृहस्पति की प्रत्यन्तरदशा-गुणक ४ से गुणा किया तो (३८·०×४)=१५२ दिन ÷ ३० = ५ मास २ दिन शनि के अन्तर में बृहस्पति की प्रत्यन्तरदशा का भोगकाल मालूम हुआ। आगे भी बृहस्पति के प्रत्यन्तर में, मान लो, चंद्र की सूक्ष्मदशाकाल जानना है, तब १५२ ×२=३०४ घण्टा ÷ २४ = १२ दिन १६ घण्टा ज्ञात हो गया एवं चन्द्र की सूक्ष्म-दशा में अभीष्ट बुध की प्राणदशा-काल जानना है तो ३०४×८·५=२५८४० मि० ÷ ६० = ४३ घण्टा ४ मि० = १ दिन, १९ घण्टा, ४ मि० चन्द्र की सूक्ष्मदशा में बुध की प्राणदशा-काल मालूम हुआ।

उपर्युक्त उदाहरण से सिद्ध है कि इस एक ही सारणी के द्वारा अभीष्ट किसी ग्रह की महादशा में किसी भी ग्रह की अन्तर, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म एवं प्राणदशा की सर्वथा सूक्ष्म शुद्ध सारणियाँ पाठक स्वयं बना सकते हैं।

योगिनी-दशा-पद्धति—इस पद्धति में नौ ग्रहों के बजाय आठ ग्रहों की योगिनियों की दशा के आधार पर जातक के भावी शुभाशुभ फल का निरूपण किया गया है। इसमें केतु का ग्रहण नहीं किया गया है। आठ योगिनियाँ क्रमशः ये हैं—१. मङ्गला, २. पिंगला, ३ धान्या, ४. भ्रामरी, ५. भद्रिका, ६. उल्का, ७. सिद्धा, ८. संकटा। इनकी क्रम-संख्या ही इनकी दशा-वर्ष-संख्या भी है। इन योगिनियों के स्वामी-ग्रह क्रमशः ये हैं—१. चन्द्र, २ सूर्य, ३. बृहस्पति, ४. मंगल, ५. बुध, ६ शनि, ७. शुक्र, ८. राहु। पाठकों की सुविधार्थ इन सबका समवेत विवरण, जन्म-नक्षत्रपरत्वेन निम्न चक्र में दिया जा रहा है—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म-नक्षत्र	आ. चि. श्र.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य. वि. श.	अ. आ. अनु. पू भा.	भ. मघा. ज्ये. उ. भा.	कृ. पू. फा. मू. रे.	रो. उ. फा. पू. षा. ×	मृ. ह. उ. षा. ×
योगिनी	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
योगिनीश ग्रह	चं.	सू.	बृ.	मं.	बु.	श	शु.	रा.
दशा-वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८

योगिनी-दशान्तर्दशा का गणित—अश्विनी नक्षत्र से जन्म-नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो उसमें तीन मिलाकर ८ का भाग देने पर शेष-तुल्य मंगलादि योगिनी-दशा (जन्मकालिक) होती है। उदाहरण—जैसे, किसी का जन्म-नक्षत्र अनुराधा है, अश्विनी से अनुराधा तक गिनने से १७ संख्या हुई, उसमें ३ जोड़ने से २० हुआ; उसमें ८ का भाग दिया तो शेष ४ रहा; अतः चौथी दशा भ्रामरी जन्मकाल की सिद्ध हुई।

विंशोत्तरी-दशा की तरह यहाँ भी भयात को दशावर्ष से गुणाकर भभोग से भाग देने पर लब्धि वर्षादि दशा का मुक्त-काल होता है। मुक्तकाल को दशावर्ष में घटा देने से शेष भोग्यकाल होता है।

उदाहरण—किसी का जन्म भ्रामरी की महादशा में हुआ और उसका भयात पल ४६१ तथा भभोग पल ३४८७ है। अतः भयात-पल को भ्रामरी-वर्ष ४ से गुणा किया तो (४६१ × ४) = १८४४ हुआ; इसमें भभोगपल ३४८७ से भाग देने के लिए—

३४८७ १८४४(० वर्ष
०००
१८८४
× १२
३४८७)२२१२८(६ मास
२०९२२
१२०६
× ३०
३४८८)३६१८०(१० दिन
३४८७०
१३१०
× ६०
३४८७)७८६००(२२ घटी
६९७४
८८६०
६९७४
१८८६

१८८६
× ६०
३४८७)११३१६०(३२ पल
१०४६१
८५५०
६९७४
१५७६ (त्याज्य)

अतः लब्धि वर्षादि ०।६।१०।२२।३२ मुक्तकाल हुआ। इसको भ्रामरी के पूरे दशा-वर्ष ४ में घटाया :—

४।०। ०। ०। ०
०।६।१०।२२।३२
शेष ३।५।१९।७।२८
भोग्यकाल हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगिनी-अन्तरदशा-साधन—जिस योगिनी की महादशा में जिस योगिनी का अन्तर जानना हो, उन दोनों के दशा-वर्षों को परस्पर गुणा करे, गुणनफल में ३६ का भाग देने से जो लब्धि (वर्षादि) आवे, वही अन्तरदशा का मान होगा। यथा—संकटा की महादशा में भ्रामरी का अन्तर लाना है तो दोनों के दशावर्षों को (८×४) गुणा करने से गुणनफल ३२ हुआ, इसमें ३६ का भाग दिया $\frac{३२}{३६}=\frac{८}{९}$ अतः वर्ष-स्थान में शून्य आया, शेष ८ को १२ से गुणा करने पर ९६ हुआ; इसमें ९ का भाग देने पर १० मास, फिर शेष ६ को ३० से गुणाकर गुणनफल १८० में ९ का भाग दिया तो दिन २० आया; इस प्रकार संकटा में भ्रामरी का अन्तर वर्षादि ०।१०।२० अर्थात् १० मास २० दिन हुआ। इसी तरह सभी योगिनियों की महादशा में सभी के अन्तर ज्ञात किये जा सकते हैं।

सरल रीति से योगिनी-अन्तरदशा का साधन—जिस योगिनी के दशा-वर्ष को १० से गुणित कर दिया जाय, उतने दिन उस योगिनी की दशा में मंगला का अन्तर होता है; फिर उसी को २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ से गुणा देने पर क्रमशः पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा का अन्तर होगा।

उदाहरण—जैसे, पिंगला की महादशा में सब का अन्तर लाना है तो पिंगला के दशावर्ष २ को दशगुणित करने से २० हुआ, यही २० दिन पिंगला की दशा में मंगला की अन्तरदशा का भोग-काल है। इसी २० का २ से गुणा करने पर ४० दिन अर्थात् १ मास १० दिन पिंगला का अन्तर एवं २०×३=६० दिन=२ मास धान्या का अन्तर, ऐसे ही भ्रामरी आदि के भी अन्तर-दशाकाल का आसानी से ज्ञान हो जाता है।

प्रत्यन्तर दशा-साधन—जिस योगिनी की अन्तरदशा में जिस योगिनी की प्रत्यन्तर दशा-काल जानना हो, उनकी अन्तरदशा को दिन-संख्याओं को परस्पर गुणा करे; गुणन-फल में ६ का भाग देने से जो लब्धि आवे, वह प्रत्यन्तर दशा की घटी होगी; शेष अंक को ६० से गुणाकर ६ का भाग देने से लब्धि पल होगा।

उदाहरण—जैसे मंगला की अन्तरदशा में मंगला की ही प्रत्यन्तरदशा का भोग-काल जानना है तो मंगला में मंगला की अन्तरदशा के दिन १० हैं। अतः १० को १० गुणा किया तो १०० हुआ; इसमें ६ का भाग देने से लब्धि १६ घटी हुई, शेष ४ को ६० से गुणा करने २४० गुणनफल हुआ; उसमें ६ का भाग दिया तो लब्धि ४० पल हुआ। अतः मंगला की अन्तर-दशा में मंगला की प्रत्यन्तर-दशा का भोग-काल १६ घटी ४० पल हुआ। अन्तरदशाओं के सुलभतया ज्ञानार्थ चक्र अग्रिम पृष्ठ पर देखिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

❋ योगिन्यन्तर्दशाचकक्र ❋

१ मंगलान्त-र्दशाचक्र			२ पिंगलान्त-र्दशाचक्र			३ धान्यान्तर्दशा-चक्र		४भ्रामर्य्यन्त-र्दशाचक्र			५ भद्रिकान्त-र्दशाचक्र			६ उल्कान्त-र्दशाचक्र			७ सिद्धान्तर्दशाचक्र				८संटकान्तर्दशाचक्र			
दशा.	मा.	दि.	दशा.	मा.	दि.	दशा.	मा.	दशा.	मा	दि.	दशा.	मा.	दि.	दशा.	व.	मा.	दशा.	व.	मा.	दि.	दशा.	व.	मा.	दि.
म.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१	०	सिं.	१	४	१०	सं.	१	९	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१	२	सं.	१	६	२०	मं.	०	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१	५	मं.	०	२	१०	पिं,	०	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	०	२	पिं.	०	४	२०	धा.	०	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि	७	सं.	१०	२०	म.	१	२०	पिं.	०	४	धा.	०	७	०	भ्रा.	०	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	मं.	१	१०	पिं.	३	१०	धा.	०	६	भ्रा.	०	९	१०	भ.	१	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	पिं.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	०	८	भ.	०	११	२०	उ.	१	५	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	०	१०	उ.	२	२	०	सि.	१	६	२०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

• जीवन-सारिणी-संख्या–२ अर्थात् प्रत्येक लग्न के लिए ग्रहों का पराशरोक्त विशिष्ट शुभाशुभत्व •

लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
योग कारक	रवि	शनि	शुक्र	मंगल	मंगल	बुध शुक्र	चन्द्र बुध	रवि चन्द्र	रवि बुध	शुक्र	शुक्र	मंगल गुरु
शुभ	रवि गुरु	बुध शनि	बुध शुक्र	चन्द्र मंगल	रवि मंगल	शुक्र	बुध शनि	चन्द्र गुरु	रवि गुरु	शुक्र शनि	रवि	चन्द्र मंगल
सम	चन्द्र मंगल	रवि	गुरु	गुरु	गुरु	शनि	शनि	शनि	मंगल	बुध	शनि	×
अशुभ	बुध शुक्र शनि	चन्द्र गुरु शुक्र	रवि चन्द्र मंगल	रवि बुध शुक्र	चन्द्र बुध शुक्र शनि	रवि चन्द्र मंगल गुरु	रवि मंगल	बुध शुक्र मंगल	चन्द्र शुक्र	रवि चन्द्र मंगल गुरु	चन्द्र मंगल बुध गुरु	रवि बुध शुक्र शनि
मारक	शुक्र	चन्द्र मंगल गुरु	मंगल	शनि	बुध	मंगल	मंगल	बुध	शनि	चन्द्र मंगल गुरु	चन्द्र मंगल गुरु	बुध शुक्र शनि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष के अनुपम ग्रन्थ

आप और आपकी राशि	केवलानन्द जोशी
अर्घमार्तण्ड	मुकुन्दवल्लभ मिश्र
कर्मठगुरु	मुकुन्दवल्लभ मिश्र
गणित-प्रवेशिका	केदारदत्त जोशी
ग्रहलाघव	केदारदत्त जोशी
चन्द्रहस्तविज्ञान	चन्द्रदत्त पन्त
चमत्कारचिन्तामणि	व्रजविहारीलाल
जातकपारिजात (दो भागों में)	गोपेशकुमार ओझा
जातकादेशमार्ग-चन्द्रिका	गोपेशकुमार ओझा
ज्योतिषशास्त्र में रोग-विचार	शुकदेव चतुर्वेदी
ज्योतिषशास्त्र में स्वरविज्ञान का महत्त्व	केदारदत्त जोशी
ताजिक नीलकण्ठी	केदारदत्त जोशी
त्रिफला (ज्योतिष)	गोपेशकुमार ओझा
प्रश्नचन्द्रप्रकाश	चन्द्रदत्त पन्त
फलदीपिका-भावार्थबोधिनी	गोपेशकुमार ओझा
बृहद् दैवज्ञरञ्जनम् (दो भागों में)	मुरलीधर चतुर्वेदी
भारतीय लग्नसारिणी	गोपेशकुमार ओझा
मुहूर्तचिन्तामणि	केदारदत्त जोशी
लग्नचन्द्रप्रकाश	चन्द्रदत्त पन्त
लघुपाराशरी	केदारदत्त जोशी
वर्षचन्द्रप्रकाश	चन्द्रदत्त पन्त
षड्वर्गफलप्रकाश	मुकुन्दवल्लभ मिश्र
सचित्र ज्योतिष शिक्षा (दस भागों में)	बी० एल० ठाकुर
सारावली	मुरलीधर चतुर्वेदी
होरारत्नम् (दो भागों में)	मुरलीधर चतुर्वेदी

MOTILAL BANARSIDASS
INTERNATIONAL

E-mail: mlbdbook@gmail.com
Website: www.mlbdbook.com

₹ 155

ज्योतिष

ISBN 978-93-92510-47-2

9 789392 510472

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh